CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमृताञ्जलि

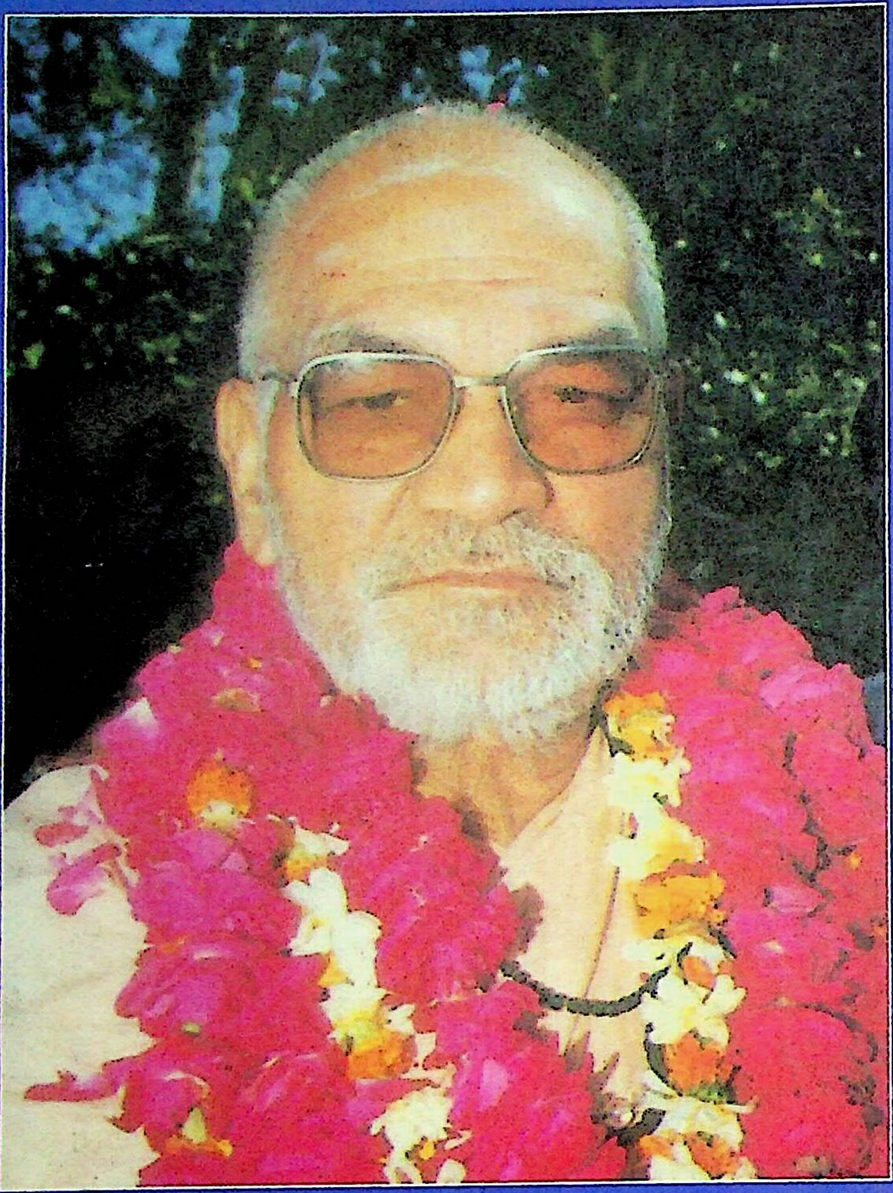

सम्पादक : स्वर्ण लाल तुली

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव

श्री अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव जी

संस्थापना : अचला सप्तमी वि.सं. १९५३

शताब्दी महोत्सव : 'दिव्यवर्षपंचकम्' वि.सं. २०४८-५३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्रीमदभिनवचन्द्रेश्वरो विजयतेतराम्

अमृताञ्जलि

श्रीमत्परहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
पदवाक्यप्रमाणपारावारीण कैलासपीठाधीश्वर
आचार्य महामण्डलेश्वर
अनन्तश्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी महाराज के

अमृतमहोत्सव

प्रसंग पर प्रकाशित

लेखक एवं सम्पादक
स्वर्ण लाल तुली

श्री कैलास आश्रम- ब्रह्मविद्यापीठ
ऋषिकेश (उ.प्र.) २४९२०१ भारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :
भगवत्पाद भक्त मण्डल
श्रीकैलासविद्यातीर्थ (आदि शंकराचार्य स्मारक)
६, भाई वीर सिंह मार्ग नई दिल्ली
दूरभाष : ०११-३३४७४७५

प्रथम आवृत्ति : २०००

मार्गशीर्ष अमावास्या वि.सं. २०५३
१० दिसम्बर, १९९६

मूल्य : २० रुपये

मुद्रक :
ईलाइट प्रिंटर्स
नई दिल्ली
दूरभाष : ०११-५४३२९४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा।
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव॥

—भगवान् आदि शंकराचार्य

हितमात्र का उपदेश करने वाले सच्चे गुरु का मिलना आज ही नहीं अपितु किसी भी काल में अत्यन्त दुर्लभ है। 'सतं विसुद्ध मिलहिं परि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही॥' इस सूक्ति के अनुसार परमात्मा की कृपा से ही सद्‌गुरु की प्राप्ति होती है। जिस साधक में भजन की लगन होती है उसके ऊपर भगवान् कृपा करके उसे गुरु मिला देते हैं। गुरुभक्त सच्चे शिष्य को उनके उपदेश से परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग मिल जाता हे। भगवान् की असीमानुकम्पा से हमें महाराज श्री के रूप में सद्‌गुरु की प्राप्ति हुई। इस वर्ष उनके अमृत महोत्सव प्रसंग पर श्री कैलास विद्यातीर्थ (आदि शंकराचार्य स्मारक) नई दिल्ल का वै. शु. पंचमी को उद्‌घाटन हुआ। इस नवीन दिव्य संस्था को विशुद्ध आचार संहिता प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर महाराज श्री ने इस वर्ष का अपना चातुर्मास्य कार्यक्रम यहाँ रखा। इन दो मासों में भक्तों ने जिस उच्च कोटि के उपदेश सुने वे जीवन भर स्मरण रहेंगे, ऐसा मेरा अनुमान है।

महाराज श्री के भक्तों में डॉ. बी.के. चड्डा बड़े विवेकशील एवं निष्ठावान् हैं। इस अवधि में उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि महाराज श्री के पुराने शिष्य होने के नाते, आप की दृष्टि में महाराज श्री कैसे लगे, इस विषय को लेकर आप कुछ लेख लिखो। पहिले तो मैंने इसको एक विनोद के रूप में ही समझा, परन्तु उन्हेंने यही बात महाराज श्री और अन्य भक्तों के सन्मुख दोहराई तो मुझे लगा कि यह पवित्र कार्य अवश्य करने योग्य है और अमृत महोत्सव प्रसंग पर महाराज श्री को अपनी वाक्यपुष्पाञ्जलि समर्पित करने का यह अच्छा अवसर भगवत्कृपा से मिल रहा है। अतः मैंने उनका सुझाव स्वीकार कर लिया। अमृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महोत्सव के उपलक्ष्य में इस पुस्तक का नाम 'अमृताञ्जलि' सहज में ही स्फुरित हो आया।

एक लेख महाराज श्री के ऊपर 'आध्यात्मिक अभ्युदय के देवदूत' शीषर्क से कुछ वर्ष पहले हिन्दी–भोजपुरी कवि एवं साहित्यकार दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती अध्यक्ष राजगुरु मठ वाराणसी द्वारा प्राप्त हुआ था उसे भी अमृताञ्जलि में सम्मिलित करा है। एतदर्थ हम दण्डि स्वामी जी के बहुत आभारी हैं। श्री कैलासविद्यातीर्थ दिल्ली के यशस्वी प्रबन्धक स्वामी श्रीधरानन्द जी से भी महाराज श्री पर लेख देने की मैंने प्रार्थना की। उन्होंने भी सुन्दर लेख दे कर अमृताञ्जलि को सुशोभित किया है। मैंने अपने लेखों में यतीन्द्र तिलक, आदर्श जीवन, कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका से काफी सहायता ली है। इन पुस्तकों के सम्पादकों का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। कई भक्तों ने अपने अनुभव सुना कर उनको अमृताञ्जलि में देने का अनुरोध किया। उन भक्तों का विशेष कर श्री टेक चन्द ढीगड़ा का भी मैं धन्यवाद करता हूँ। श्री बलदेवानन्द सागर एवं श्रीप्रियकान्त रति लाल दवे जी के लेखों के लिये भी मैं उनका आभारी हूँ।

मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूँ कि लेखन एवं सम्पादन कार्य में मेरी प्रवृत्ति महाराज श्री की प्रेरणा, कृपा एवं आशीर्वाद से हुई है। 'मूकं करोति वाचालम्' के अनुसार जो भी मैं लिख पाता हूँ इसमें उन्हीं की शक्ति काम करती है अन्यथा मुझमें किसी प्रकार की योग्यता का सर्वथा अभाव मैं मानता हूँ। अतः अमृताञ्जलि में जो कुछ अच्छा लगे उसे महाराज जी का आशीर्वाद समझें और त्रुटियों के लिए मेरी जिम्मेदारी होने से मुझे क्षमा करें।

अन्त में यह कृति भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर महादेव के पावन पादपद्मों में समर्पित करता हूँ कि जिन्ह की कृपा सदैव कैलास आश्रम के भक्तों एवं सन्तों पर बरसती रहती है। हरि ॐ तत्सत्।

गुरुपादानुरागी

दीपावली वि.सं. २०५३

स्वर्ण लाल तुली

'विद्या सदन' गुजराँवाला टाऊन दिल्ली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय सूची

		पृष्ठ
१.	भावाञ्जलि	१
२.	कैलास आश्रम परम्परा	२
३.	युगपुरुष-श्रीदशमकैलासपीठाधीश्वर	७
४.	महाराज श्री का जीवन वृत्तान्त	११
५.	पट्टाभिषेक रजत महोत्सव प्रशस्ति पत्रम्	२२
६.	आध्यात्मिक अभ्युदय के देवदूत-यतीन्द्र-कुलतिलक स्वामी विद्यानन्द गिरि	२६
७.	अष्टोत्तरशत-नामावली	४४
८.	अमृतमहोत्सव प्रशस्तिपत्रम्	४८
९.	विद्वत्ता एवं व्यवहारिकता का अद्भुत समन्वय	५०
१०.	Sahaj Samadhi	५२
११.	Eighteen day discourses of Maharaj Ji	५४
१२.	गुरु वन्दना-अमृताञ्जलि	५६
१३.	मेरी दृष्टि में महाराज श्री	५७
१४.	आदर्श आचार्य निष्ठा	६५
१५.	विद्याविग्रह-महाराज श्री	६९
१६.	तप एवं त्यागमूर्ति	७२
१७.	महाराज श्री की अध्यापन एवं प्रशासन शैली	७५
१८.	कर्मयोगनिष्ठा	७७
१९.	त्रिवेणी-भक्ति, ज्ञान, कर्म	७९
२०.	वाक् माधुर्य	८१
२१.	स्वाध्याय प्रवचन	८३
२२.	गो भक्ति	८५
२३.	भक्तों के अनुभव	८७
२४.	महोत्सवाचार्य	९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५. वैदिक संस्कार निष्ठा १००
२६. दिव्य ग्रन्थ रचयिता। १०३
२७. राजपीठाचार्य १०८
२८. महाराज श्री द्वारा पत्राचार ११०
२९. महाराज श्री सुप्रसिद्ध सन्तों की दृष्टि में ११२
३०. महाराज श्री द्वारा सम्पादित ७५ विशिष्ट कार्य ११६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावाञ्जलि

गुरुधनराज मुनीन्द्र की महिमा कथि न जाई।
प्रगटे स्वप्न में एक दिन ईश परम सुखदाई॥ १॥
कहा पड़ा मैं गंगतट हरिद्वार के पास।
भक्त बिरह में रैन दिन रहता बहुत उदास॥ २॥
ले आओ अतिशीघ्र तुम मुझे वहाँ से आज।
स्थापित करो कैलास में जहँ बस यति समाज॥ ३॥
श्रोता बन मैं सुनूँगा नित्य वेदान्त विचार।
तजो सोच उपचार की वहन करूं सब भार॥ ४॥
हर्षित आज्ञा सीसधर गये यथा निर्देश।
पाया परम मनोहर विग्रह श्री महेश॥ ५॥
अचला सप्तमतिथि को अचलकिया शिव बाण।
अभिनव चन्द्रेश्वर नया धरा नाम रुचिमान॥ ६॥
तब से हुआ प्रसिद्ध यह विद्याकेन्द्र ललाम।
दिव्यविभूति सन्त गण लहें यहाँ विश्राम॥ ७॥
हुए पीठ आसीन शुभ नौ मुनि शीलनिधान।
काल कर्म आधीन पुनि हुआ रिक्त अस्थान॥ ८॥
खोज दशम पीठेश की सफल कीन्ह जगदीश।
विद्यानन्दी सन्त शुभ कर्मी यथा कपीस॥ ९॥
हुए पीठ आसीन जब कर संकल्प महान।
उसी समय ग्रह चन्द्र पर उतरा मानव यान॥ १०॥
किये कर्म अद्‌भुत अति आश्रम हित धरि टेक।
रचे महोत्सव विविधविध् सिरजे ग्रन्थ अनेक॥ ११॥
एक शती बीती सुखद महादेव को आये।
अति प्रसन्न अतिरुद्रयज्ञ पीठपति रचवाये॥ १२॥
महिमा अभिनव चन्द्रपति सब दिसि रही बिराज।
भावञ्जलि अर्पण करूँ सिद्ध करें सब काज॥ १३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास आश्रम परम्परा

श्री कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज (के पूर्व प्रकाशित लेख से)

दिशन्तु शं मे गुरुपादपांसवः।

सर्वान्तर्यामी परमात्मा ने अपनी दिव्यशक्ति से अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना की है। जिनमें चार खानि के अन्तर्गत चौरासी लाख योनियाँ हैं। इन सभी के भीतर आत्मरूप से परमात्मा ही समाया हुआ है। ऐसा ही "एकोऽहं बहु स्याम्" "तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्" इन श्रुति वाक्यों से सिद्ध होता है। संसार को रचकर प्राणियों के कर्मानुसार उनका पालन करना और कर्म के उपरत होने पर संसार का संहार करना भी उस परमात्मा का ही कार्य है। इसे "जन्माद्यस्य यतः" सूत्र से भगवान् बादरायण ने भी कहा है। इतना ही नहीं, प्रत्युत वेदविरुद्ध आचरण करने वालों का निग्रह और वेदानुकूल आचरण करने वालों पर अनुग्रह भी परमात्मा करता है। साथ ही वैदिक सनातन धर्म की संस्थापना भी करता है। एतदर्थ वह निराकार से साकार बन जाता है। इस प्रकार भगवान् के अनेकों अवतार इस धरा पर होते रहते हैं, जो वेद पुराण में प्रसिद्ध हैं।

मठनिर्माण का उद्देश्य व इतिहास

सर्गारम्भ में परमेश्वर ने प्रवृत्तिलक्षण और निवृत्तिलक्षण दो प्रकार के धर्म को प्राणियों के अभ्युदय एवं निःश्रेयस के लिए बनाया। इनमें से प्रवृत्तिरूपधर्म का उपदेश मरीचि आदि ऋषियों के लिये और निवृत्तिरूप धर्म का उपदेश सनकादि मुनियों के लिए किया। वेद–पुराण–इतिहासादि ग्रन्थों में प्रवृत्तिपरायण ऋषियों के आश्रम सुने जाते हैं; किन्तु निवृत्तिपरायण सनकादिक, शुकदेव, दत्तात्रेय, जड़भरत आदि के आश्रम उक्त ग्रन्थों में कहीं भी नहीं दीखते हैं। अतः एक प्रश्न हो जाता है कि निवृत्तिपरायण यतियों ने कब से और किस प्रयोजन की सिद्धि के लिए आश्रम तथा मठ का निर्माण प्रारम्भ किया होगा? इतिहास देखने पर इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न के उत्तर में यही बात सिद्ध होगी कि बौद्ध भिक्षुकों से पहिले भिक्षुकों ने आश्रम तथा मठ का निर्माण नहीं कराया था। जब बौद्धों ने संघबद्ध हो अपने धर्म प्रचार के लिए प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में पठों तथा शिक्षण संस्थानों का निर्माण कराया और उपासना के लिए समाधि मन्दिर एवं शान्ति स्तूपों का निर्माण कराया, तब इनकी नकल आर्हतों ने की। भला कहाँ ऋषभदेव और महावीर जैसे त्यागी और कहाँ मठ मन्दिरों का निर्माण। इनमें कोई तालमेल नहीं बैठता है। हाँ बौद्धों की अपेक्षा आर्हतों में एक विशेषता प्रारम्भ से रही है, जो आज भी विद्यमान है। बौद्धों ने धर्म प्रचार के साथ-साथ मठों की व्यवस्था भी भिक्षुकों के हाथ में सौंप दी; किन्तु आर्हतों ने केवल धर्म उपदेश का काम साधुओं के हाथ में दिया और शेष कार्यभार गृहस्थों के हाथ में सौंपा। यही कारण है कि बौद्धों की अपेक्षा आर्हत साधुओं में संयम आज भी अधिक देखा जाता है। पर अवैदिक होने के कारण दोनों के विचार भ्रान्त हैं। जिसे पाठक दर्शनशास्त्र में पढ़ें और देखें।

पूर्वोक्त संक्रमणकाल में आज से लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व भारत के सुदूर दक्षिण केरल प्रान्त के अन्तर्गत कालड़ी ग्राम में आशुतोष भगवान्, आचार्य शङ्कर के रूप में अवतीर्ण हुए। वैदिक सनातन धर्मानुसार भगवान् के अन्य अवतारों की अपेक्षा इस अवतार में विलक्षणता देखी जाती है। श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि अवतारों में वेद-विरुद्ध आचरण करने वालों के संहार के लिए भगवान् ने हाथ में शस्त्र भी उठा लिया। उनका विनाशकर शेष जनमानस में वैदिक धर्म का संचार कराया और अन्त में लीला संवरण कर शस्त्रास्त्रों को अपने साथ लेते चले गये; किन्तु आशुतोष भगवान् शङ्कर के अवतार आद्य शङ्कराचार्य ने दुर्दान्त अवैदिक मनःकल्पित-मतावलम्बी बौद्धों और जैनियों को परास्त करने के लिए जिन शस्त्रों को अपनाया, वे तलवार या अन्य आयुध नहीं थे, अपितु प्रस्थानत्रयीभाष्य, प्रकरणग्रन्थ तथा स्तोत्रादि थे। ऐसे विलक्षण शस्त्रों से सबके हृदय को पलट डाला। जिससे भारत के सभी जन समुदाय श्री शङ्कराचार्य के सिद्धान्त को मानने लग गए। इस प्रकार आचार्य शङ्कर के झण्डे के नीचे आकर सभी खड़े हो गए। कुछ दुराग्रहियों ने भारत को छोड़ दिया और कुछ पहाड़ों में जा छिपे। एकबार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्ण भारतवर्ष में वैदिक सनातनधर्म का झण्डा लहरा उठा। सर्वत्र केवलाद्वैत वैदिक सिद्धान्त का प्रचार होने लग गाया। अल्पायुष्य केवल ३२ वर्ष में आचार्य ने जो अद्भुत कार्य किया है; उसे पाठक शङ्कर दिग्विजय में विस्तार से देखें। हम तो इतना ही यहाँ पर लिख रहे हैं कि आचार्य श्रीशङ्कर भगवत्पाद ने वैदिक सनातनधर्म का समुद्धार किया तथा वैदिक सिद्धान्त का परिष्कार किया है, कोई नया मत या सिद्धान्त नहीं चलाया। अतः इन्हें वैदिक सनातन धर्म का समुद्धारक तथा परिष्कर्त्ता कहा जाता है।

जिस समय भगवान् शङ्कराचार्य इस धरा में अवतरित हुए, उस समय वेद तथा वैदिक धर्मों के दूषक निन्दकों का बहुत बड़ा सशक्त दल था। कुछ वेद को प्रमाण मानने वाले लोग वेद का अन्तिम तात्पर्य कर्म में मानते थे। ऐसे संक्रमण काल में श्री शङ्कराचार्य जी अवतरित होकर सभी कल्याणकामियों को सन्मार्ग का अनुसरण कराते हैं। आचार्य शङ्कर सर्वथा निवृत्तिपरायण थे। वे अपने शिष्यों को निवृत्ति का ही उपदेश करते थे। सैकड़ों शिष्य अनके साथ रहते थे। इन्होंने धर्म एवं अध्यात्म प्रचार को स्थायी बनाने के लिए तत्कालीन बौद्धों के माध्यम को अपनाया। भारत के चारों दिशाओं में चार मठों का निर्माण कराया। आचार्य ने इन मठों का निर्माण अपने शिष्यों के विश्राम के लिए नहीं कराया था; अपितु प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में ही इन मठों का निर्माण कराया था। अतः अध्यात्म चिन्तकों के निवास स्थान अर्थात् छात्रावास को मठ कहते हैं। इन मठों के सञ्चालन का भार अपने चार प्रधान शिष्यों के कन्धों पर सौंप दिया। सम्पूर्ण भारत को चार भागों में विभक्त कर इन मठाधिपतियों को वैदिक सनातनधर्म प्रचार का काम. दे दिया। वैदिक सनातन धर्म परम्परा में मठ का निर्माण तथा सञ्चालन जैसा क्रान्तिकारी कदम निवृत्तिपरायण भिक्षुकों के लिए सर्वप्रथम आद्यशङ्कराचार्य जी ने उठाया। जिसका उद्देश्य विशुद्ध था कि बाह्य तथा आभ्यन्तर शत्रुओं पर विजय पाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाय। वैदिक साहित्य में निवृत्तिपरायण यतियों के मठ निर्माण का श्रीगणेश यहाँ से होता है। केवल आचार्य शङ्कर ने इस आशा से ऐसा क्रान्तिकारी कदम बढ़ाया कि इन मठों के अधिपति अपने-अपने मठों में विद्यमान भिक्षुकों को प्रशिक्षण देकर अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षेत्र में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारत तथा सम्पूर्ण विश्व में वैदिक सनातनधर्म एवं अध्यात्मविद्या का दृढ़ता से प्रचार करते रहेंगे। कुछ पीढ़ियों तक ऐसा ही हुआ भी; परन्तु बाद में मठाधिपति लोग अपने-अपने मठों के संचालन में अधिक व्यसत हो गए। प्रशिक्षण तथा प्रचार कार्य गौण हो गया। फलतः अवैदिक मतावलम्बी पुनः सिर उठाने लग गए। इन चारों मठों में से केवल शृङ्गेरीमठ की परम्परा अक्षुष्णु चल रही है। शेष शारदामठ, ज्योतिर्मठ और गोवर्द्धनमठ की परम्परा विच्छिन्न होती रही है। इनमें भी सर्वाधिक दयनीय दशा उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठ की हुई है। जहाँ पर सदियों तक कोई धर्मगुरु नहीं रहा। उस मठ तथा उस मठ के अधीन प्रचार क्षेत्र की क्या दशा हो सकती है, इसे कौन कह सकता है। ऐसी परिस्थिति में भगवान् शङ्कर का सिंहासन पुनः हिल उठता है और पञ्जाब की पवित्र भूमि में श्रोत्रिय ब्राह्मण घर में एक बालक का जन्म होता है। जो हिमालय की उपत्यका, ऋषियों की तपःस्थली ऋषिकेश में संन्यास ग्रहण के बाद स्वामी धनराज गिरि जी नाम से प्रसिद्ध हो जाता है।

श्री स्वामी धनराज गिरि जी महाराज आचार्य महामण्डलेश्वर

आपने स्वामी आदित्य पुरी जी की मण्डली में रहकर शास्त्रों का अध्ययन किया। अतएव उनके साधक शिष्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। वैदिक सनातन धर्म में अपार निष्ठा तथा केवलाद्वैत शाङ्कर सिद्धान्त में अद्भुत निष्ठा देख आशुतोष भगवान् शङ्कर स्वप्न में दर्शन देकर वेदान्त श्रवण के लिए आपके पास आए, जो कैलास आश्रम में अभिनव चन्द्रेश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। आपके पास अध्यात्म परायण सैकड़ों शिष्य रहते थे और निरन्तर वेदान्तादि शास्त्रों के विचार में निरत रहा करते थे। आपके समकालीन बाबा कालीकमली वाले स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी रहते थे। स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वतीजी ने अन्नक्षेत्र की स्थापना की और स्वामी धनराज गिरि जी ने विद्याक्षेत्र की स्थापना की है। सैकड़ों यति शिष्यों के सहित पर्णकुटिया में रहकर शास्त्र अध्ययन-अध्यापन में सदा निरत रहा करते थे। बरसात के दिनों पुस्तकें भीग जाती थीं। अतः शिष्यों के आग्रह तथा टिहरी महाराजा की अनेक प्रार्थना पर पुस्तकों की सुरक्षा के लिए आपने पास की टेकरी पर एक पक्की कुटिया बनाने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुमति दे दी। वेदान्त श्रवण के लिए महादेव के पधारने पर एक छोटा-सा मन्दिर बनाया गया। अभीतक अन्नक्षेत्र का प्रबन्ध कालीकमली अन्नक्षेत्र में ही था। शास्त्राभ्यास में तल्लीन रहने वाले स्वामी धनराज गिरि जी महाराज नियत समय पर मण्डली के सहित भिक्षा के लिए बाबा कालीकमली अन्नक्षेत्र ऋशिकेश में नहीं पहुँच पाते थे जिससे वहाँ के सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं को सवामी धनराज गिरि जी की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। एक दिन क्षेत्र के कर्मचारी ने कुछ रूखे शब्दों में महाराज जी से कहा कि आप मण्डली के सहित समय पर भिक्षा के लिये आयें। विलम्ब से आने पर हम कर्मचारियों को आपकी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। कर्मचारियों की उक्त बातों को स्वामी धनराज गिरि जी महाराज के परम भक्त सेठ श्री मामनचन्द खेमका जी ने सुनकर अपनी धर्मशाला से बाहर आकर महाराज जी के चरणों को स्पर्श किया, साथ ही प्रार्थना की कि कल से मण्डली के सहित आपकी भिक्षा का प्रबन्ध आपकी कुटिया के पास ही कर दिया जाएगा। बस क्या था। जहाँ पर आज कैलास आश्रम है, वहाँ पर ही मण्डली सहित श्री स्वामी धनराज गिरि जी के लिए सेठ श्री मामनचन्द खेमका जी की ओर से अन्नक्षेत्र लंगर खुल गया। जिसका प्रबन्ध भी सेठ जी के आदमी ही किया करते थे। कुछ वर्षों तक यह अन्नक्षेत्र उसी रूप में चलता रहा। धीरे-धीरे सेठ जी ने प्रबन्ध का भार मण्डली के महात्माओं पर छोड़ दिया और आर्थिक सेवा मामनचन्द राधाकिशन फर्म की ओर से करते रहे। तत्पश्चात् अन्य भक्तों की ओर से भी कैलास आश्रम अन्नक्षेत्र के लिए दान आने लग गए। उस समय अवकाश के दिनों अष्टमी और प्रतिपद् को मण्डली के महात्मा जंगल से लकड़ी काटकर अपने सिर पर लाया करते थे। टिहरी महाराजा की ओर से कैलासाश्रम के महात्माओं के लिए सर्वथा छूट थी। जब भी और जितनी लकड़ी लाना चाहें, जंगल से ला सकते हैं। यह क्रम बहुत वर्षों तक चलता रहा। आचार्य श्री स्वामी धनराज गिरि जी की सेवा उनके शिष्य स्वामी कृष्णानन्द गिरि जी किया करते थे और लंगर प्रबन्ध का कार्य स्वामी पूर्णानन्द गिरि जी किया करते थे। आपके सैकड़ों शिष्यों में से सर्वाधिक कुशाग्रबुद्धि प्रतिभासम्पन्न छात्र स्वामी गोविन्दानन्द गिरि जी थे। जो बाद में कैलासाश्रम ब्रह्मविद्यापीठ के चतुर्थ आचार्य महामण्डलेश्वर बनाए गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग पुरुष-श्री दशमकैलासपीठाधीश्वर

युगपुरुष अभूतपूर्व कार्य कर नवयुग का निर्माण करते हैं। ब्रह्मविद्या पीठ कैलास आश्रम के दशम पीठाधीश्वर बन कर महाराज श्री ने जो अभूतपूर्व कार्य किये हैं उनका मूल्याङ्कन करना गहन चिन्तन और सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का कार्य है। पिछली पौनी शती के आपके जीवन को विद्वानों ने इसी कसौटी पर कसा है और वे सब इसी नतीजे पर पहुँचे हैं कि आप की क्षमता, शक्ति, लगन, तत्परता, विद्वत्ता, तपश्चर्या सहिष्णुता उदारता एवं नेतृत्व सभी गगन-चुम्बी और अलौकिक हैं। भारत की आध्यात्मिक संस्कृति के सर्वाङ्गीन विकास और जन जीवन को दिव्यालोक प्रदान करने में आपने युग पुरुष की भूमिका निभाई है।

आप द्वारा सम्पन्न कुछ मुख्य कार्यों का संस्मरण इस संदर्भ में करना प्रासंगिक होगा।

अष्टादशाह प्रवर्तकाचार्य

प्रस्थानत्रयी अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ का इस धरा के ऊपर प्रादुर्भाव आपने ही किया। आज के व्यस्त वातावरण में मनुष्य के पास समय बहुत कम है। अविवेकियों की तो बात जाने दीजिए, विवेक विचार शील मानव जो इस दुस्तर आवागमन चक्र से छूटना चाहता है वह भी शास्त्र श्रवण के लिये महीनों और वर्षों का समय नहीं निकाल सकता। इसी कठिनाई के कारण भागवतसप्ताह एवं मानस नवाह्न पारायण एवं प्रवचनों की परम्परा चली। परन्तु प्रस्थान त्रयी—श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद् के ऐसे किसी क्रम का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ था। इसका कारण इनमें समाविष्ट विषयों की गम्भीरता और उनका कम समय में आधिकारिक निरूपण की कठिनाई हो सकता है। परन्तु युग की माँग के अनुसार परमात्मा स्वयं ही उसकी व्यवस्था करने के लिये आधिकारिक महापुरुषों को प्रेरणा कर देते हैं। बात सन् १९७१ की है जब महाराज श्री अहमदाबाद में चातुर्मास कर रहे थे। उन दिनों मुम्बई एवं गुजरात में भागवत सप्ताह एवं रामायण नवाह्न यज्ञों की बड़ी धूम मच रही थी। भक्त इस की चर्चा महाराज श्री के सन्मुख करते थे। तभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री के मन में विचार हुआ कि प्रस्थानत्रयी को भी भागवत तथा रामायण की भाँति कम समय में श्रद्धालु जनता को श्रवण कराया जाय तो बड़ा अच्छा हो। इस विषय में गम्भीर चिन्तन महाराज श्री करते रहे। अन्त में इस निश्चय पर पहुँचे कि इन शास्त्रों का अष्टादशाह क्रम से स्वाध्याय कराया जावे। यह एक अभिनव कल्पना थी और आप अब इसको मूर्त्त रूप देने का अवसर देखने लगे। सर्व प्रथम ब्रह्मसूत्र अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ संन्यास आश्रम घाटकोपर मुम्बई में १३.१०.७४ से ३०.१०.७४ तक हुआ। श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम अष्टादशाह प्रवचन ज्ञान साधन आश्रम भरूच में १५.१२.७४ को और उपनिषद् अष्टादशाह श्री राधकृष्ण मन्दिर दिल्ली में २४.७.७५ को शुरू हुआ। इस प्रकार आप अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ के आदि प्रवर्तकाचार्य बने। इस प्रकार की अपूर्व देन समाज को कोई युगपुरुष ही दे सकता है।

संस्कार प्रवर्तकाचार्य

आज भारतीय वैदिक संस्कार लुप्त प्राय: हो रहे हैं। इसकी एक वजह यह भी है कि पंडित, उपदेशक, धर्माचार्य इस ओर से इतने निराश हो गये हैं कि उन्होंने इसके बारे में कुछ कहना पूछना ही छोड़ दिया है। सभी धार्मिक कृत्य वे लोगों से करवा रहे हैं परन्तु यजमान से कभी यह नहीं पूछा कि आप के कंधे पर जनेऊ है जिसके बिना कोई शास्त्रीय कर्म करने का अधिकार ही नहीं। महाराज श्री ऐसे वातावरण में एक नई रौशनी ले कर प्रकट हुये। उन्होंने यज्ञोपवीत संस्कार को मुख्य कर लोगों को सब से पहले इसी संस्कार को अपनाने का उपदेश प्रारम्भ किया। और हजारों लोगों को यज्ञोपवीत अपने हाथों से दिया। कैलास आश्रम में सामूहिक यज्ञोपवीत धारण की व्यवस्था भी वार्षिक उत्सव के दिनों प्रतिवर्ष कर दी। यह एक अभूतपूर्व सफल प्रयास आज के युग में आप द्वारा हो रहा है।

दिव्य-ग्रन्थ-निर्माणाचार्य

सन्त महापुरुषों के दर्शनों एवं साक्षात् उन के मुखारविन्द से निकले वचनों को श्रवण करने से अपूर्व एवं अतुलनीय लाभ मिलता है। परन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह सब समय, सभी देश और सभी व्यक्तियों को सुलभ नहीं। अतः शास्त्रों का निर्माण कर ऋषि, मुनि, विद्वानों ने जीव के कल्याण का मार्ग निकाला जिस से मानव उन के अनुसार चल कर अभ्युदय निःश्रेयस को प्राप्त कर सके। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि शास्त्र वही होता है जो परमात्मा की प्रेरणा से आधिकारिक महापुरुषों द्वारा रचा जाता है और उसी के अनुसार जीवन बनाने से परम सिद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। अन्यथा आजकल धर्मिक पुस्तकों की कमी नहीं है। हर कोई उपदेशक बनना चाहता है और अपने उपदेशों को पुस्तक रूप में छपवाकर उस का प्रचार-प्रसार करने में जुट जाता है। इससे कई बार मानव भटक भी जाता है। गीता आदि दिव्य प्रामाणिक शास्त्रों के साधारण अनुवादों का ही पाठ लोग करके अपने आप में समझते हैं कि हम ने गीता का पाठ कर लिया। यह प्रवृत्ति मेरे विचार में ठीक नहीं। पाठ तो मूल ग्रन्थों का ही होना चाहिए। ऐसे ही प्रामाणिक ग्रन्थों का ही स्वाध्याय करना चाहिये।

महाराज श्री ने यह महसूस किया कि वैदिक सनातन धर्म में शास्त्रों का खजाना तो पहले से भरा पड़ा है। केवल उस के प्रशिक्षण की कमी है। उसी प्रशिक्षण उपयोगी कार्य करना ही युगधर्म है। महाराज श्री ने यह भी विचार किया कि जब हमारे शास्त्रों की रचना हुई थी उस समय संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। किन्तु अब संस्कृत को पढ़ने और समझने की क्षमता अत्यन्त सीमित है। इधर हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा बन चुकी है और साधारण जनता इसे समझती है; अतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से शास्त्र की गहराईयों को स्पर्श किया और कराया जावे। तदनुसार महाराज श्री ने अनेकों ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद, टीका टिप्पणि सहित प्रकाशन करवाया, जिससे उनका प्रशिक्षण सुलभ हो सके। विशेषतया भगवान् आद्यशंकराचार्य के प्रस्थानत्रयी पर भाष्यों की हिन्दी व्याख्या की रचना कर न केवल साधारण जन का प्रत्युत विद्वानों का भी उपकार किया नहीं तो भावी युग में अपने बुद्धि बल पर शांकर भाष्यों को समझना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो जाता। इन सभी दिव्य ग्रन्थों का निर्माण कर महाराज श्री ने युगपुरुष होने का ही परिचय दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री के मन में विचार हुआ कि प्रस्थानत्रयी को भी भागवत तथा रामायण की भाँति कम समय में श्रद्धालु जनता को श्रवण कराया जाय तो बड़ा अच्छा हो। इस विषय में गम्भीर चिन्तन महाराज श्री करते रहे। अन्त में इस निश्चय पर पहुँचे कि इन शास्त्रों का अष्टादशाह क्रम से स्वाध्याय कराया जावे। यह एक अभिनव कल्पना थी और आप अब इसको मूर्त्त रूप देने का अवसर देखने लगे। सर्व प्रथम ब्रह्मसूत्र अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ संन्यास आश्रम घाटकोपर मुम्बई में १३.१०.७४ से ३०.१०.७४ तक हुआ। श्रीमद्भगवद्गीता का प्रथम अष्टादशाह प्रवचन ज्ञान साधन आश्रम भरूच में १५.१२.७४ को और उपनिषद् अष्टादशाह श्री राधकृष्ण मन्दिर दिल्ली में २४.७.७५ को शुरू हुआ। इस प्रकार आप अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ के आदि प्रवर्तकाचार्य बने। इस प्रकार की अपूर्व देन समाज को कोई युगपुरुष ही दे सकता है।

संस्कार प्रवर्तकाचार्य

आज भारतीय वैदिक संस्कार लुप्त प्राय: हो रहे हैं। इसकी एक वजह यह भी है कि पंडित, उपदेशक, धर्माचार्य इस ओर से इतने निराश हो गये हैं कि उन्होंने इसके बारे में कुछ कहना पूछना ही छोड़ दिया है। सभी धार्मिक कृत्य वे लोगों से करवा रहे हैं परन्तु यजमान से कभी यह नहीं पूछा कि आप के कंधे पर जनेऊ है जिसके बिना कोई शास्त्रीय कर्म करने का अधिकार ही नहीं। महाराज श्री ऐसे वातावरण में एक नई रौशनी ले कर प्रकट हुये। उन्होंने यज्ञोपवीत संस्कार को मुख्य कर लोगों को सब से पहले इसी संस्कार को अपनाने का उपदेश प्रारम्भ किया। और हजारों लोगों को यज्ञोपवीत अपने हाथों से दिया। कैलास आश्रम में सामूहिक यज्ञोपवीत धारण की व्यवस्था भी वार्षिक उत्सव के दिनों प्रतिवर्ष कर दी। यह एक अभूतपूर्व सफल प्रयास आज के युग में आप द्वारा हो रहा है।

दिव्य-ग्रन्थ-निर्माणाचार्य

सन्त महापुरुषों के दर्शनों एवं साक्षात् उन के मुखारविन्द से निकले वचनों को श्रवण करने से अपूर्व एवं अतुलनीय लाभ मिलता है। परन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह सब समय, सभी देश और सभी व्यक्तियों को सुलभ नहीं। अतः शास्त्रों का निर्माण कर ऋषि, मुनि, विद्वानों ने जीव के कल्याण का मार्ग निकाला जिस से मानव उन के अनुसार चल कर अभ्युदय निःश्रेयस को प्राप्त कर सके। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि शास्त्र वही होता है जो परमात्मा की प्रेरणा से आधिकारिक महापुरुषों द्वारा रचा जाता है और उसी के अनुसार जीवन बनाने से परम सिद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। अन्यथा आजकल धर्मिक पुस्तकों की कमी नहीं है। हर कोई उपदेशक बनना चाहता है और अपने उपदेशों को पुस्तक रूप में छपवाकर उस का प्रचार-प्रसार करने में जुट जाता है। इससे कई बार मानव भटक भी जाता है। गीता आदि दिव्य प्रामाणिक शास्त्रों के साधारण अनुवादों का ही पाठ लोग करके अपने आप में समझते हैं कि हम ने गीता का पाठ कर लिया। यह प्रवृत्ति मेरे विचार में ठीक नहीं। पाठ तो मूल ग्रन्थों का ही होना चाहिए। ऐसे ही प्रामाणिक ग्रन्थों का ही स्वाध्याय करना चाहिये।

महाराज श्री ने यह महसूस किया कि वैदिक सनातन धर्म में शास्त्रों का खजाना तो पहले से भरा पड़ा है। केवल उस के प्रशिक्षण की कमी है। उसी प्रशिक्षण उपयोगी कार्य करना ही युगधर्म है। महाराज श्री ने यह भी विचार किया कि जब हमारे शास्त्रों की रचना हुई थी उस समय संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। किन्तु अब संस्कृत को पढ़ने और समझने की क्षमता अत्यन्त सीमित है। इधर हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा बन चुकी है और साधारण जनता इसे समझती है; अतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से शास्त्र की गहराईयों को स्पर्श किया और कराया जावे। तदनुसार महाराज श्री ने अनेकों ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद, टीका टिप्पणि सहित प्रकाशन करवाया, जिससे उनका प्रशिक्षण सुलभ हो सके। विशेषतया भगवान् आद्यशंकराचार्य के प्रस्थानत्रयी पर भाष्यों की हिन्दी व्याख्या की रचना कर न केवल साधारण जन का प्रत्युत विद्वानों का भी उपकार किया नहीं तो भावी युग में अपने बुद्धि बल पर शांकर भाष्यों को समझना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो जाता। इन सभी दिव्य ग्रन्थों का निर्माण कर महाराज श्री ने युगपुरुष होने का ही परिचय दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निःस्वार्थता एवं पूर्वाचार्यों के प्रति अपूर्वनिष्ठा

आज के स्वार्थ परायण वातावरण में एक ऐसे आदर्श पुरुष की आवश्यकता थी जो स्वार्थ से हट कर जीने की कला सिखा सके। ईशावास्य उपनिषद के मंत्र "तेन त्यक्तेन युञ्जीथाः" के अर्थ को चरितार्थ कर सके और एक समर्पित व्यक्तित्व का प्रदर्शन कर सके। प्रभुकृपा से यह सब गुण महाराज श्री में विद्यमान् हुये। महाराज श्री ने जो भी कार्य हाथ में लिया उसमें स्वार्थ का सर्वथा त्याग कर पूर्णरूपेण स्मर्पित हो कर परमेश्वर पूजा समझकर सम्पन्न किया और उसी में परमानन्द की अनुभूति की। विश्वात्मा की ऐसी उदार समाराधना वे कैलासाश्रम के पीठाधीश्वर बनने से पूर्व भी करते थे, पर कैलास के दशमपीठाचार्य बन कर उक्त समर्चना में पूर्वाचार्यों के प्रति उनकी अपूर्व निष्ठा का विशेषतया उद्घाटन हुआ। परम पूज्य षष्ठ पीठाचार्य श्री बड़े महाराज जी के सूत्रात्मक वाक्य को जो उन्होंने आप के पट्टाभिषेक के समय उद्धृत किया उसे आपने अपने भावी कार्यक्रम का आधार बना लिया। पूर्वाचार्यों द्वारा रचित टिप्पणियों को बड़े प्रयत्न पूर्वक प्रकाशित करवा कर उनके यश को उजागर किया। अनेकों महोत्सवों को मना कर पदे पदे पूर्वाचार्यों का पुण्य स्मरण किया, इतना ही नहीं प्रत्युत एक अपूर्व भावना को सभी सन्तों और भक्तों के मन में दृढ़ किया कि सभी ब्रह्मलीन पूर्वाचार्य कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव में समाहित हैं। अतएव उन सभी के दर्शन अर्चन महादेव के विग्रह में करने का उदार दृष्टिकोन प्रदान किया। पूर्वाचार्यों की तीव्र भक्ति से उनके कई पुरातन चिह्न आप को प्रसाद रूप में प्राप्त हुये जिन को आप अपने जीवन की अमूल्य उपलब्ध्यि मानते हैं।

इस प्रकार का आदर्श एक युग पुरुष ही प्रस्तुत कर सकता है। आप की इसी निष्ठा के प्रसाद से **भगवत्पादीय दिव्य युगारम्भ** का अनुभव आपने किया जो आज आशा की समुज्जवल किरण बन कर सज्जनों के मन को प्रसन्नता प्रदान करने का हेतु बना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री का जीवन वृत्तान्त

शास्त्रों में पृथ्वी को सप्तद्वीपा कहा गया है। इसके जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौञ्च, शाक एवं पुष्कर द्वीपों में से हम जिस द्वीप पर रह रहे हैं उसे जम्बूद्वीप कहते हैं जो खारे जल के समुद्र से घिरा हुआ है। जम्बू द्वीप १० वर्षों में विभक्त है जिन में से एक का नाम भारतवर्ष है जो एक मात्र कर्म भूमि है। यहाँ पर मनुष्य शरीर प्राप्ति की देवता भी अभिलाषा करते हैं क्योंकि यहाँ मोक्षरूपी परमपुरुषार्थ की सिद्धि सम्भव है। परमात्मा के कृपामय विधान के अनुसार मनुष्य को भक्ति ज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करने एवं अपने वास्तविक आत्मस्वरूप का बोध कराने के लिए तत्त्वनिष्ठ महापुरुषों को भगवान् इस धरा पर और विशेष कर भारतवर्ष में भेजते रहते हैं। इसी शृखंला में आज से ७५ वर्ष पूर्व भारत के बिहार प्रदेश में एक महापुरुष का जन्म हुआ जो आज श्री कैलासआश्रम ब्रह्मविद्यापीठ के यशस्वी दशम पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के नाम से प्रख्यात हैं।

जन्म, बाल-लीला एवं प्रारम्भिक अध्ययन

भारत के गौरवमय इतिहास में बिहार प्रदेश की विशिष्ट भूमिका रही है। पाटलीपुत्र (पटना) राजगृह, नालन्दा गया आदि स्थान प्राचीन सभ्यता एवं विद्या के महान् केन्द्र प्रसिद्ध थे। उसी पटना जिले के गाज़ीपुर ग्राम में एक श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार में वि.सं. १९७८ मार्गशीर्ष अमावस्या, भौमवार (२९ नवम्बर सन् १९२१) को महाराज श्री का जन्म हुआ। आप के पिता जी का नाम श्री जवाहर शर्मा एवं माता जी श्रीमती ललिता देवी थीं जिन्होंने दीर्घ देवाराधना के फलस्वरूप आप को पुत्र रत्न के रूप में प्राप्त किया। आप का राशि नाम नूरनारायण तथा प्रचलित नाम चन्दन शर्मा था। बड़े प्यार से आप का लालन पालन हुआ।

बाल्यकाल से ही आप साधु महात्माओं को देखर कर मुग्ध हो जाया करते थे और उनके आचरणों का अनुकरण करने लगते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आध्यात्मिक बात को सुन कर आप के हृदय में घाव सा हो जाया करता था। आप ने एक बार महात्माओं के मुख से **'ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी'** चौपाई का श्रवण किया तो आप फूट-फूट कर रोने लगे और विचारने लगे कि इस बन्धन में कैसे पड़ गये और इस से कैसे छूटा जाय। महाराज श्री का अन्तः करण स्वभाव से ही शुद्ध था। बस गुरुमुख से महावाक्य का श्रवण मात्र ही करना शेष रह गया था। प्रारम्भिक शिक्षा के साथ ही आप ने श्रीरामचरितमानस को पढ़ना और विचारना शुरू कर दिया। इस दिव्य ग्रन्थ का आप ने भरसक अभ्यास किया और सम्पूर्ण रामायण कण्ठ कर ली। मानस के प्रति आप का अनुराग अब भी आप के उपदेशों एवं प्रवचनों में झलकता है। आप की स्वाभाविक रुचि संस्कृत अध्ययन की थी किन्तु पिता जी को अपने समृद्ध जिमींदारी को चलाने के लिए उत्तराधिकारी चाहिये था। अतः उनके आदेशानुसार आप ने उर्दु, हिन्दी, फारसी तथा कुछ अंग्रेजी का भी अध्ययन किया।

अलौकिक विवाह संबन्ध

कौन माता पिता अपने लाडले इक्लौते पुत्र का विवाह कर पुत्रवधु एवं पौत्र का मुख नहीं देखना चाहते? ऐसा ही महाराज श्री के माता पिता की अभिलाषा थी और उन दिनों कम उम्र में विवाह की प्रथा तो थी ही। अतः १५ वर्ष की उम्र में ही आप का विवाह नालन्दा के बड़गाव नामक ग्राम निवासी वत्सगोत्रीय ब्राह्मण कन्या श्री राम प्यारी देवो से ज्येष्ठ मास वि.सं. १९९४ में सम्पन्न हुआ। आप के भावी कार्यक्रमानुसार भगवत्कृपा एवं प्रेरणा से आप का वैवाहिक संबन्ध न केवल वासना शून्य रहा अपितु श्री राम प्यारी जी के स्वाभावगत विवेक, वैराग्य, प्रभु परायणता, पातिव्रत्य आदि सद्‌गुणों के कारण आप में सुषुप्त परमात्म भक्ति को जागृत करने का हेतु बना। अतएव विवाह के साथ ही आप दोनों के मन में आध्यात्मिक विचारों का मन्थन शुरू हुआ जिस के फलस्वरूप विवाह के दो वर्ष के अन्दर ही आप दोनों ही ने यह निश्चय किया कि हमें परमार्थ पथ पर चल कर जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना है। उस देवी स्वरूपा पत्नी के मन में एक अभिलाषा अवश्य थी कि हमारे पतिदेव का वियोग हमें कभी भी न हो जो एक सती साधवी पति परायणा स्त्री के लिये सर्वथा उचित विचार था किन्तु इस के विपरीत आगे चल कर हो गया।

पिता जी की चिंता

इसी बीच अपने एक मित्र के साथ घर में किसी से परामर्श किये बिना ही आप काशी, अयोध्य, हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनारायण केदार नाथ की यात्रा को चले गये। आप दो मास बाद घर लौटे। आप के वियोग में परिवार वालों की जो हालत हुई होगी उस का अनुमान लगाना कठिन नहीं। विशेष कर आप के पिता जी राजा दशरथ की तरह दिन रात रोते रहते थे जिस का प्रभाव उन के स्वास्थ्य पर पड़ा। आप के घर लौटने से उन्हें प्रसन्नता तो हुई परन्तु आप के स्वभाव में पहले से भी अधिक उदासीनता एवं वैराग्य को देख कर उन का अन्तः करण संतप्त रहने लगा और स्वास्थ्य बिगड़ता गया। उस परिस्थिति में अब उन का सभी पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्व आप को संभालना पड़ा। आप की आयु उस समय केवल १८ वर्ष की थी। इस स्वल्प आयु में जिस योग्यता से सभी कार्य को आप ने संभाला और कई गम्भीर समस्याओं का समाधान जिस प्रकार से किया उसे देख कर सब को आश्चर्य एवं प्रसन्नता हुई। आप को सयानों ने तो महाराजा विक्रमादित्य का अवतार ही समझा। वि.सं. १९९८ के माघ मास में आप के पिता जी का स्वर्गवास हो गया।

गुरु दर्शन एवं दीक्षा

पिता जी की और्ध्वदेहिक क्रिया से निवृत्त होकर आप पूर्णतया परमार्थ साधना में लग गये। उन्हीं दिनों आप को सद्‌गुरु देव परमहंस अनन्तश्री स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज तथा उनके गुरुदेव योगिराज अनन्तश्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज का समागम प्राप्त हुआ। उन के सत्संग से आप को पर्याप्त मार्ग दर्शन मिला। आप बड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्सुकता से गीता, उपनिषद् ब्रह्मसूत्र आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे। आप की कुशाग्र बुद्धि और साधन तत्परता को देख कर दोनों गुरुवर अत्यन्त संतुष्ट एवं प्रभावित होते। आप ने अब आध्यात्मिक सरोवर में डुबकी लगा कर जीवन रत्न को प्राप्त करने का निश्चय कर के गुरुदेव से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ले ली और उनके आदेशानुसार अपने ग्राम से बाहर एक कुटीर बना कर अहोरात्र परमात्म चिन्तन में लग गये। आप की ऐसी साधु वृत्ति को देख सभी लोग आप को अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। आप की यह साधना छः वर्षों तक बिना नमक के सादा भोजन करके चलती रही।

माता से वचन बद्ध होना

आप की स्नेहमयी माता को आप का और आप की धर्म पत्नी का आध्यत्मिक जीवन यापन तो सत्संग के प्रभाव से पसंद था किन्तु आप का गृह त्याग करना उन को कतई अभीष्ट नहीं था। विवश हो कर उन्हेंने एक ही अभिलाषा आपके सम्मुख प्रकट की कि मेरे मरने के बाद मेरा सम्पूर्ण क्रिया कर्म आप अपने हाथों करो। माता की यह अभिलाषा आप संन्यासी बन कर तो पूर्ण नहीं कर सकते थे। अतः आप ने माता की इच्छानुसार उन के समक्ष प्रतिज्ञा की कि आप जब तक जीवित रहेंगी मैं इस प्रकार नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही बना रहूँगा और आप की सम्पूर्ण और्ध्वदेहिक क्रिया अपने हाथ से करूँगा, तत्पश्चात् ही संन्यास दीक्षा लूँगा। अपनी प्रतिज्ञानुसार कभी-कभी माता जी के दर्शनों को आप जाते रहते। आजीवन आपने माता जी के चरणों का स्पर्श करते हुये प्रणाम किया। मातृ भक्ति में आप ने आदि श्री शंकराचार्य जी का अनुसरण किया।

श्री राम प्यारी देवी का प्रशंसनीय सेवा व्रत

आध्यात्मिक वेदी पर सर्वस्व बलिदान करने वाली देवी राम प्यारी ने परम धैर्य पूर्वक अपने पति के गृह त्याग कर साधु जीवन अपनाने के कष्ट को सहा। महाराज श्री ने उन को माता की सेवा का भार सौंपते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुये निश्चिन्तता का अनुभव किया क्योंकि आप उस देवी के स्वभाव को जानते थे कि यह कभी स्वप्न में भी हमारी आज्ञा को अस्वीकार नहीं करेगी। पति आज्ञा पालन को जीवन का आधार बना कर उन्हों ने मन कर्म बचन से मातृ सेवा व्रत को निभाया। उन का यह सेवा व्रत अति प्रशंसनीय और कोटिशः साधुवाद के योग्य है। उन के त्याग की तुलना श्री लक्ष्मण जी की पत्नी उर्मिला देवी के त्याग से एक अंश में की जा सकती है अन्यथा उन के सम्पूर्ण जीवन की उपमा मिलना कठिन है।

विद्या पिपासा

नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा के पश्चात् आप बड़ी उत्सुकता से शास्त्रों का अध्ययन करने लगे। आप एक ऐसे विद्वान् अध्यापक की खोज में थे जो प्राचीन परम्परा के अनुसार व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्ययन करा सके। संयोगवश आपको एक ऐसे ही संस्कृत के असाधारण विद्वान् जिनका नाम ब्रह्मानन्द जी था और जो अरई नामक ग्राम में अवधूत के वेष में रहा करते थे, मिल गये। उनसे आपने अत्यन्त तत्परता के साथ काशिकावृत्ति के आधार, पाणिनीय अष्टाध्यायी और पातञ्जल महाभाष्य का अध्ययन किया। अध्ययन की संलग्नता में आपको दिन-रात का भी पता नहीं रहता था। आप अष्टाध्यायी के समस्त सूत्रों को कण्ठ कर, सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की आवृत्ति चलते फिरते कण्ठतः कर लिया करते थे। पू. ब्रह्मानन्द जी की अव्यवस्थित वृत्ति के कारण उनसे आप दो वर्ष ही अध्ययन कर सके और शेष अध्ययन को पूरा करने के लिए आपने काशी आदि संस्कृत विद्या केन्द्रों की ओर जाने का निश्चय किया। आप १९५० ई. में एक बार काशी होकर इसलिए लौट आये क्योंकि वहाँ की परीक्षा क्रम से अध्ययन कराने की परम्परा आपको अभीष्ट नहीं थी।

१९५१ ई. मई मास में पुनः आप काशी, हरिद्वार होते हुये ऋषिकेश गीता-भवन पहुँचे, जहाँ आप के गुरुदेव स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सत्सङ्ग में पहुँचे हुए थे। वहाँ आपने श्री कैलास आश्रम के विषय में सुना कि वहाँ बिना परीक्षा क्रम के स्वतन्त्र रूप से व्याकरण आदि समग्र शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होता है। यह बात आपके मनोनुकूल थी। वहाँ रहकर शास्त्र अध्ययन करने की इच्छा को लेकर आप श्री कैलास आश्रम आये। वहाँ तत्कालीन महामण्डलेश्वर अनन्तश्री स्वामी निर्दोषानन्द गिरि जी महाराज एवं श्री स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज के दर्शन किये और अपना आशय व्यक्त किया। अध्ययन की व्यवस्था में कोई कठिनाई न होते हुए भी आवासादि व्यवस्था के लिए आप को कोठारी जी से मिलने का परामर्श मिला। कोठारी श्री स्वामी श्रद्धानन्द पुरी जी ने कहा कि अभ्यागतों के लिये केवल तीन रोज का प्रबन्ध आश्रम में हो सकता है; अधिक दिन का नहीं। आपके अनेकबार अनुरोध पर भी आपको वहाँ निवास करने की सुविधा देने के लिए कोठारीजी राजी नहीं हुये। उनको क्या पता था कि भविष्य में यही साधु एक रोज संन्यासी सम्राट् बनकर कैलासपीठाधीश्वर पद को सुशोभित करेगा। आप केवल ३ दिनों कैलास आश्रम में काल क्षेप के लिये नहीं रहना चाहते थे, अपितु कुछ-काल स्थायीरूप से रहकर अध्ययन करना चाहते थे। आपने इसी हेतु हरिद्वार आदि अन्य आश्रमों की व्यवस्था देखकर वाराणसी लौट कर परीक्षा क्रम से ही अध्ययन करने का निश्चय किया।

वाराणसी में आपने दक्षिणामूर्त्तिमठ में रहकर मध्यमा से लेकर शास्त्री वेदान्त तथा सर्वदर्शनाचार्य पर्यन्त परीक्षा क्रम से अध्ययन किया और सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रणी में उत्तीर्ण हुये। अध्ययन के साथ-साथ आपने अध्यापन भी शुरू किया और अपनी विद्वत्ता और प्रेम से विद्यार्थियों के हृदय सम्राट् बन गये। श्री दक्षिणमूर्ति मठ के महामण्डलेश्वर जी ने आपको श्री दक्षिणामूर्ति संस्कृत महाविद्यालय में वेदान्त प्राध्यापक पद को सम्भालने के लिए आग्रह किया। जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आपके व्यवहार तथा अध्यापन कौशल्य से अत्यन्त प्रभावित हुये महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी नृसिंह गिरिजी महाराज ने नव्य स्थापित दिल्लीस्थ श्रीविश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय का सम्पूर्ण दायित्व सम्भालने के लिए आपको राजी कर लिया एवं आप १९५९ ई. से संन्यास आश्रम दिल्ली में रहकर महाविद्यालय का संचालन करने लगे ओर १० वर्षों में उसको इतना चमकाया कि संस्कृत विद्या क्षेत्र में सभी की आँखें इस महाविद्यालय की ओर खींच गयीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माता जी का स्वर्गवास

१९६४ में आप के माता जी की अस्वस्थता का तार आप को दिल्ली में मिला। आप तुरन्त सब कार्यक्रम स्थगित कर उनके दर्शनों के लिए चल पड़े किन्तु आप के पहुँचने से पूर्व ही वे देहत्याग चुकी थीं और उनके देह की अन्त्येष्टि गंगा जी के तट पर लोग कर चुके थे। अपने वचनानुसार आप ने अवशिष्ट कृत्य अपने हाथों से ही किया। सपिण्डीकरणश्राद्ध तथा ब्रह्मभोज करने के बाद आप ने गया में श्राद्ध कराने का संकल्प किया और तदनुसार गया जी में तीन पक्ष निवास कर वहाँ की सभी वेदियों में विधिवत् माता जी का श्राद्ध सम्पन्न किया। अब आप के संन्यास ग्रहण करने में कोई प्रतिबन्ध नहीं था। अतः वहीं से आचार्यपाद स्वामी नृसिं गिरि जी महाराज की सेवा में पत्र दिया कि अब मैं शीघ्र ही आपके कर कमलों से संन्यास दीक्षा लेना चाहता हूँ। गया श्राद्ध करके आप पुनः जन्मभूमि लौटे और वहाँ माता जी के निमत्त श्रीमद्भागवत सप्ताह तथा विशाल भण्डारा भी किया जिसे देख कर सभी लोगों को और आप के मन में परम संतोष हुआ।

श्री राम प्यारी देवी की विनीत प्रार्थना

आप के गृह त्याग के बाद आप की आज्ञा मान पति परायणा श्री राम प्यारी देवी ने लगभग २३ वर्ष माताजी के जीवनपर्यन्त जिस निष्ठा से उनकी सेवा की उस का उदाहरण मिलना कठिन है। माता जी के दिवंगत होने पर अब इस देवी के पास कोई अवलम्ब नहीं रह गया। अतः उस समय इन्होंने महाराज श्री के चरणों में साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणम करके सैंकड़ों लोगों के बीच यही आज्ञा माँगी कि आप के आदेशानुसार हमने माता जी की सेवा की। अब भविष्य में आप के दर्शनों की कोई आशा नहीं दीखती है। ऐसी स्थिति में तपश्चर्यापूर्वक इस तुच्छ देह का मैं अन्त कर देना चाहती हूँ। आप इसके लिए सहर्ष अपनी स्वीकृति देवें। उत्तर में आप ने कहा कि देवी! यह मानव शरीर परमात्मा की दी हुई धरोहर है। इस की सुरक्षा करते हुए परमात्मा की प्राप्ति में ही इसे लगाना चाहिए। हमारे आदेशानुसार माता जी की सेवा से आप का अन्तः करण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुद्ध हो चुका है। अब शीघ्र ही इस में परमात्म तत्त्व का बोध उत्पन्न होगा और आप यहाँ रहते हुये ही शाश्वत शान्ति का अनुभव करेंगी। इस में हामरी शुभ कामना भी शामिल है। आप के समझाने से उस देवी ने अपने उक्त विचार को बदल दिया और दिन रात भजन में लग गईं।

कैलास आश्रम ब्रह्मविद्या पीठ पर पट्टाभिषेक

आप श्री कैलास पीठाधीश्वर पद पर १९६९ ई. में अभिषिक्त हुए जो प्रसङ्ग अपने में एक सहस्य पूर्ण ईश्वरीय लीला ही थी। श्री कैलास आश्रम के नवम पीठाधिपति के पदत्याग के पश्चात् अष्टम पीठाधीश्वर परमपूज्य श्री शास्त्री ज़ी महाराज को पुनः कार्यवाहक रूप से अध्यक्ष पद को सम्भालना पड़ा था। तभी से स्वयं उनको और आश्रम हितैषी सभी सन्तों एवं भक्तों को भी एक ऐसे सुयोग्य महापुरुष की खोज एवं प्रतीक्षा थी, जो कैलासपीठाधीश्वर पद को सुशोभित करे। यह खेज लगभग चार वर्ष जारी रही। उधर संन्यास आश्रम दिल्ली के श्रीविश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पद को सुशोभित किये हुए आपकी योग्यता से अतिशय प्रभावित हुए वहाँ के आचार्यों ने आप को भावी मण्डलेश्वर के योग्य समझकर १६-१-१९६८ ई. (माघ कृष्ण द्वितीया २०२४ वि.) के शुभ दिन ठिठुरती शीत में प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में यमुना जी में आपको शास्त्र विधि के अनुसार संन्यास दीक्षा दी। परन्तु विश्वनाथ भगवान् महादेव की इच्छा कुछ और ही थी। अतः उन्होंने वैसी ही लीला रची। उज्जैन कुम्भ (१९६९ ई.) में स्वामी कृष्णानन्द गिरि जी महाराज का निरञ्जनपीठाधीश्वर पद पर अभिषेक हो गया। तब भगवदिच्छा से प्रेरित हुए कैलास आश्रम के कुछ विशिष्ट सन्तों ने महाराज श्री को कैलासपीठाधीश्वर बनाने के लिए अपना प्रस्ताव कैलाश आश्रम आचार्यों की सेवा में रखा जिन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

महाराज श्री महाविद्यालीय ग्रीष्मावकाश १९६९ ई. में महामण्डलेश्वर त्यागमूर्ति श्री स्वामी गणेशानन्द पुरी जी महाराज के आमन्त्रण पर स्वामी प्रेमपुरी सत्संग मण्डल बम्बई में सत्संग के लिए पधारे हुए थे। बम्बई में आपके पास कैलास के अधिकारियों का उक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुरोध पहुँचा और आपको ऋषिकेश पधारने का आमन्त्रण मिला। आप वहाँ के कार्यक्रम को बीच में छोड़कर आना नहीं चाहते थे। परन्तु जिनके निमन्त्रण पर आप बम्बई पधारे थे, उन्होंने जब टेलीफोन पर आपसे विशेष अनुरोध किया तो आप प्रवचन का शेष कार्यक्रम स्थगित कर वहाँ से पहिले दिल्ली पधारे। दिल्ली संन्यास आश्रम के बड़े महाराज जी परमपूज्य अनन्त श्री स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज की आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्तकर आप ऋषिकेश पधारे। कैलास आश्रम पहुँच कर सर्व प्रथम मन्दिर में भगवान् भाष्यकार एवं भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव के दर्शन किये। तत्पश्चात्, बड़े महाराजी के दर्शनों के लिये उनकी कुटी में गये। अत्यन्त श्रद्धा से उनको दण्डवत प्रणम करके उनके चरणों में बैठ गये। सामान्य कुशलाचार में ही एक महापुरुष ने दूसरे महापुरुष को पहचान लिया। महाराज श्री के वहाँ से निकलते ही पूज्य बड़े महाराजी ने आनन्दातिरेक से कहा—"बड़ा सुन्दर मण्डलेश्वर मिल गया।" महाराज श्री का पट्टाभिषेक आशाढ़ शुक्ल सप्तमी वि.सं. २०२६ तदनुसार २१.७.१९६९ को बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ। परम पूज्य बड़े महाराज जी एवं पूज्य शास्त्री जी महाराज तथा पूज्य हरिहार तीर्थ जी महाराज इस समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे उपस्थित महापुरुषों मण्डलेश्वरों, मठाधीशों ने आप को चद्दर के बाद चद्दर ओढ़ाई और तत्पश्चात् अभिनन्द भाषण में शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद भी दिये। महाराज श्री ने बड़े विनम्र शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त की।

कैलासपीठ पर आप के आसीन होने के पश्चात् उन्नति, लक्ष्मी, विद्या, कीर्ति, समृद्धि आदि ने कैलास आश्रम में मानों अपना डेरा डाल दिया। आप के दृढ़ संकल्प, क्रिया शक्ति, विद्वत्ता एवं कुशल नेतृत्व के आगे यह सभी शक्तियां नत्मस्तक हो गईं। कैलास आश्रम में राम राज्य वाली बात चरितार्थ हो गई। परमपूज्य बड़े महाराज जी एवं परम पूज्य शास्त्री जी महाराज केवल ३ वर्ष इस सुखद दृश्य को देख कर परम संतोष का अनुभव कर सके। वि.सं. २०२९ में ये दोनों विभूतियाँ ब्रह्मलीन हो गईं। पूज्य छोटे महाराज जी ने कैलास आश्रम की समुन्नति को सन् १९९० तक यानि २१ वर्षों तक देखा। पूर्वाचार्यों का यश महाराज श्री ने विविध प्रकार से उजागर किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनन्दन ग्रन्थ 'यतीन्द्र तिलक'

आप के सर्वतोभावेन समर्पित जीवन के पच्चास वर्ष १९७१ ई. में पूरे हुये। आपकी स्वर्ण जयन्ती मनाने का शुभ अवसर उस समय भक्तों और शिष्यों ने खो दिया। आप तो 'सबहिं मानप्रद आपु अमानी हैं।' आपके मुखारविन्द से इस बारे में कभी कोई शब्द नहीं निकला। आप आश्रम पुनरुद्धार नव निर्माण आदि कार्यों में उस समय दिन रात संलग्न थे। आप की ६० वर्ष की आयु १९८१ में सम्पन्न हुई। उस समय भी इस उपलक्ष्य में एक महोत्सव मनाने का विचार भक्तों के मन में नहीं आया। हाँ उससे कुछ काल पूर्व जब कैलासाश्रम की शताब्दी राष्ट्रीय स्तर पर महाराज श्री की अध्यक्षता में उन्हीं द्वारा संकल्पित एवं सम्पादित अनेकों प्रगतिशील कार्यों द्वारा मनाई जा रही थी, उस शताब्दी के समापन महोत्सव पर आप का अभिनन्दन यतीन्द्रतिलक नामक अभिनन्दन ग्रन्थ स्मर्पित करके किया गया। एतदर्थ इस के संकल्पक एवं सम्पादक दो विद्वान् महानुभाव डॉ. विष्णुदत्त राकेश जी एवं पं. डॉ. जगेश नारायण जी शर्मा भोजपुरी अनेक साधुवाद के योग्य हैं।

पट्टाभिषेक रजत महोत्सव

दो बार चूके हुये भक्त और सन्तगण कृतज्ञतावश अब महाराज श्री का कोई महोत्सव मनाने के लिये लालायत थे। तब तक महाराज श्री की महोत्सव मनाने की कला एवं लगन से काफी प्रशिक्षण भक्तों और सन्तों को प्राप्त हो चुका था। अतः पट्टाभिषेक रजत महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर एक वर्ष पर्यन्त १९९३-९४ में मनाने का कार्यक्रम पट्टाभिषेक रजत महोत्सव महासमिति ने तैयार किया। इस महासमिति के स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज परमाध्यक्ष थे और स्वामी परमेश्वरानन्द जी महाराज कार्यकारी अध्यक्ष थे। इस मांगलिक कार्य को सुचारु रूप से मनाने के लिये महासमिति के सभी अधिकारी और सदस्य भूरिशः धन्यवाद के योग्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमृत महोत्सव

दिव्य वर्ष पञ्चकम् (१९९२-९७) की कल्पना कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की शताब्दी के उपलक्ष्य में महाराज श्री ने की। इन पाँच वर्षों में जो भी महोत्सव कैलास आश्रम में मनाये जायेंगे वे अभिनव चन्द्रेश्वर के पावन संस्मरण में होंगे एवं उनकी शताब्दी के अङ्गरूप से मनाये जायेंगे। इस में सभी २५ बिन्दु बड़े विचार पूर्वक रखे गये। उनमें से २० महोत्सव सम्पन्न हो चुके हैं। अब केवल पाँच महोत्सव शेष हैं जिन का समापन १९९७ मार्च में महा शिवरात्रि पर्व पर होगा। इन्हीं पाँच में से एक महाराज श्री का अमृत महोत्सव भी है। महाराज श्री को इस धरा पर पधारे १०.१२.९६ को ७५ वर्ष हो जायेंगे। महाराज श्री ने इस महोत्सव को मनाने का अपना एक ही सुझाव रखा है और वह यह कि ७.१२.९६ प्रातः ७ बजे से कैलास आश्रम ऋषिकेश और इस की समस्त शाखाओं में ॐनमःशिवाय महामन्त्र का ७५ घंटे का पारायण हो जिस का भोग १०.१२.९६ को प्रातः १० बजे पड़े। इस के अतिरिक्त जो भी कार्यक्रम हों वे भक्तों की रुचि के अनुसार होंगे। उनके इस सुझाव में भी उन की उसी उदार दृष्टि और लोक कल्याण की भावना झलकती है जो उनके अन्य सभी परोपकारी प्रवृत्तियों में दीखती है। महाराज श्री जब ७५वें वर्ष में प्रवेश किये उस समय नडियाद (गुजरात) में उन का उपनिषद् अष्टादशाह चल रहा था। वहाँ भक्तों ने बड़ी धूम-धाम से इस अमृत महोत्सव को मनाया। इस के बाद मुम्बई, रोहतक, दिल्ली में भी यह महोत्सव अत्यन्त उत्साह एवं श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। जैसा कि पूर्व में निवेदन किया है अमृताञ्जलि छपवाने की योजना भी महाराज श्री के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में बनी और इसे समस्त भक्तों एवं सन्तों की और से १०.१२.९६ को महाराज श्री को भेंट कर उनके प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया जायेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशस्तिपत्रम्

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

श्रीमद्विमलतमाद्वैततत्त्वकल्लोलकल्लोलिनीसुमधुरगम्भीर-स्वरनिनादिनीशाङ्करसुरभारतीप्रवाहपरिरक्षणक्षणवैदुष्यादिसद्गुणगणा-लङ्कृतत्रिजगज्जेगीयमान-मानवातिशायि-सौमनस्यसमुपासकाद्वैतवीथी-पथिकोपभुज्यमानानन्त-श्रीकैलासाश्रमदशमपीठाधीश्वर-श्रीमत्पर-महंसपरिव्राजकाचार्यश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठमहामण्डलेश्वरस्वामिविद्यानन्द-गिरिमहाराजपट्टाभिषेक-रजत-महोत्सवारम्भे।

श्रीशङ्कराङ्घ्रिरजसा परमः पवित्रो
भागीरथीजलतटेऽस्ति गुहाप्रदेशः।
कैलासनाम विदिताश्रममत्र दिव्यं
विद्यावतंस — धनराजगिरिश्चकार॥ १॥

विद्यानन्दाः ये गिरयो यतीन्द्रा
अधीश्वराः ब्रह्मविद्यापीठस्थाः।
विराजमानाः दशमाः जयन्तु
महादृताः रौप्यमहोत्सवेन॥ २॥

वागब्धिवारिण्यवगाहमानः
प्रवर्तयन् ब्रह्मविद्याप्रदायम्।
आत्मानुभूतौ विहरन् वदान्यः
कैलासपीठाधिपतिर्नमस्यः ॥ ३॥

स्वयं सदा ब्रह्मपरायणोऽयं
लोकान् पुनानो विचरन् दयालुः।
तथापि वेदान्तवचोविभूते-
रध्यापनेऽतीव रतः कृपालुः॥ ४॥

लब्धप्रतिष्ठो विदुषां गणेषु
लब्धादरो राज्यधुरन्धरेषु।
विचारदक्षः कुशलः क्रियायां
विराजते भक्त — विरक्तवृन्दे॥ ५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पदे प्रमाणे च तथैव वाक्ये
निष्णात ईड्यो विदुषाँ वरेण्यः।
विधातुमन्यान् विदुषां वरेण्यान्
नितान्त — मेकान्त — प्रयत्नशीलः ॥ ६ ॥
यामद्वयं प्रत्यहमेकचित्तो
ह्यध्यापनेनैव नयन्प्रसन्नः।
कैलासनाथस्य मुदे महात्मा
वेत्ति श्रमं नैव कदापि कश्चित्॥ ७ ॥
उदारचेता अभिजातवृत्तिः
प्रसन्न — गम्भीर — वचः — प्रवृत्तिः।
निजे महिम्नि स्थित आत्मवर्त्म
प्रबोधयन् शिष्यजनान् विराजते॥ ८ ॥
अष्टादशाहस्य प्रवर्तको यः
श्रीशाङ्कराब्दस्य प्रयोजकः सः।
ब्रह्मावलीनस्मृति — बोधनार्थं
जन्माह—पुण्याह—'शताब्दी'—योजकः॥ ९ ॥
वेद-तत्त्वज्ञान - वृष्टि - विस्तृति - प्रणीप्सितं
भक्तवर्ग-छात्रवर्ग-बोध-वृद्धि — लक्षितम्।
इष्टदेव-भक्ति-प्रीतिलब्धये नियोजितं
शान्तिशक्ति-वृद्धिकारि 'दिव्यवर्षपञ्चकम्'॥ १० ॥
नीताः प्रकाशं बहुग्रन्थवर्याः
सटिप्पणाः सानुवादाः सटीकाः।
नीतः प्रसिद्धिं भृशमाश्रमोऽयं
कैलासनामा भुवि लब्धकीर्तिः॥ ११ ॥
श्रीचित्सुखाचार्य - कृतिर्महिष्ठा
या चित्सुखीति प्रथिता पृथिव्याम्।
'हृत्तोषिणीं' छात्रहिताय टीकां
विलिख्य लब्धं सुमहत्सु गौरवम्॥ १२ ॥
समानमण्ड्यामथ कर्णपुर्यां
प्रयागराजे पुनरिन्द्रप्रस्थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारे हरे राजगृहस्य प्रान्ते
पुर्यां तथैवोत्तरस्यां च काश्याम्॥ १३॥
कैलासनाथ - व्यपदेशभाजः
जीर्णाश्रमान् कांश्चन नूतनाश्रमान्।
उद्धार-निर्माण-कृतेः प्रयोगाद्
विधाय भव्यान् समलङ्करोत्ययम्॥ १४॥
विनिर्मितं गोसदनं सुरम्य-
मासन्नपञ्चाशगवां विशालम्।
प्रवर्धितं गौरवमाश्रमस्य
प्रसन्नतामेति मनो निरीक्ष्य॥ १५॥
श्रीशङ्कराचार्य — वचो — विभूते—
र्विस्तारणार्थं नवराजधान्याम्।
आचार्य - श्रीशङ्करस्मारकस्य
निर्माणकार्येण दृढप्रतिष्ठः॥ १६॥
वस्वर्षिनिध्यर्क (१९७८) मिते हि जन्म
वेदाङ्कनागार्क (१९९४) मिते विवाहः।
नभः-खशून्याक्षि (२०००) मिते प्रयाणं
बाणाक्षिशून्याक्षि (२०२५) मिते च दीक्षा॥ १७॥
संन्यासदीक्षां समवाप्य दिव्या-
माज्ञां गुरूणां शिरसावधार्य।
कैलासपीठाधिपतेः पदं यत्
स्वलङ्कृतं ब्रह्मविद्याप्रसृत्यै॥ १८॥
पूर्वाश्रमीया भुवि लोकवन्द्या
वसुन्धरा पुण्यवती यतो यैः।
कामं यतीनां स्मरणाय नार्हा
विस्मर्तुकामा न हि शिष्यवर्गाः॥ १९॥
धन्यास्य माता च पिताऽपि धन्यो
धन्यास्य जाया च समर्पितो यैः।
निजात्मबोधाय तथैव लोका-
नुद्धर्तुकामाय, भवस्य प्रीत्यै॥ २०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीरामकृष्णादिसमो विशुद्धः
परो हि हंसो भुवि विद्यमानः।
गृहस्थ एवाप्यगृहस्थ एष
व्रजत्सु वर्यः शिरसाभिवन्द्यः॥ २१॥
दीक्षा- समारोह इवाद्य कोऽपि
शिक्षासमारोह उताप्रतीतः।
सम्माननीयोऽस्ति गुरुर्गुरूणां
संस्मारणीयाऽस्ति सती सतीनाम्॥ २२॥
तपस्विनी स्वाकृतश्वश्रूसेवा
पतिं परेशं मनसीक्षमाणा।
मनस्विनी ब्रह्मपरा वदान्या
ह्यस्मन्नमस्या परमादरेण॥ २३॥
नमो नमो ज्ञानविरागमूर्तये
परेऽमले ब्रह्मणि लग्नवृत्तये।
गीर्वाणभाषोदयदत्तबुद्धये
स्वसंस्कृते रक्षणलब्धकीर्तये॥ २४॥
वयं नमामश्चरणारविन्दं
यस्य प्रसादात् प्रतिलभ्य विद्याम्।
ज्ञानं प्रकाशं, हृदयेन मूर्ध्ना
पुनः प्रणामात् कृतिनो भवेम॥ २५॥

अत्रभवदीयाः
वयं
सादराः सविनयाः सप्रणामाः विनम्राः
श्रीकैलास-ब्रह्मविद्यापीठान्तेवासिनः॥
स्थलम्—कैलासाश्रमः हृषीकेशः।
आषाढ़शुक्लसप्तमी वि०सं० २०५०
दिनांक २६-६-१९९३
शाङ्कराब्द—१२०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आध्यात्मिक अभ्युदय के देवदूत—यतीन्द्रकुलतिलक स्वामी विद्यानंद गिरिजी

—दण्डि स्वामी विमलांनन्द सरस्वती अध्यक्ष राजगुरुमठ वाराणसी

मनुष्य में एक न केवल जीने की, अपितु गौरव के साथ जीने की मौलिक आकांक्षा विद्यमान है। जब हमारे इस गौरवपूर्ण जीवन को ब्रह्मांडीय समर्थन प्राप्त हो जाता है, तब हमारे अन्दर एक विशिष्ट प्रकार का धार्मिक उत्साह भर उठता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी नहीं है, जिसके मन में कभी न कभी ये आधारभूत प्रश्न न उठे हों कि—'मैं कौन हूँ, मेरा मूल कहां है, मेरी भवितव्यता क्या है? कहा भी गया है:—

'कोऽहं क्वहं कुलं किं मे, सम्बन्धः कीदृशो मम।
स्वधर्मो नहि लुप्येत ह्येवं संचितयेद् बुधैः॥'

साहित्यकार युगस्त्रष्टा होते हैं। उनकी यह मान्यता है कि हर एक व्यक्ति को तीन आँखें होती हैं। दो आगे रहती हैं और एक पीछे। इतिहास तीसरी आँख है। अतः हमको अपने को समझने के लिये तीसरे नेत्र से भी देखना होगा। अतीत के विश्लेषण से भविष्य के निर्माण के लिये प्रेरणा प्राप्त होती है।

विचार कर्म का सार है। प्रारम्भ में केवल शब्द था, शब्द से ही यह हाड़मांस बना। दर्शन इतिहास बन जाता है और संस्कृति सभ्यता। जीवन आदर्शों से शासित रहता है और सब क्रांतिकारी आन्दोलनों की पृष्ठभूमि में विचारधाराएँ (दर्शन) काम करती रही हैं। हम जो कुछ सोचते हैं उसी के परिणाम हम हैं। दार्शनिक लोग भविष्य के स्त्रष्टा होते हैं। दर्शन का काम केवल जीवन की व्याख्या प्रस्तुत कर देना नहीं है, अपितु उसे दृष्टि प्रदान करना और मार्ग दिखाना भी है। जब-जब संकट की विषम घड़ी आ उपस्थित होती है और मानवता प्रताड़ित और अत्पीड़ित हो कराहने लगती है तो, सत्पुरुषों की रक्षा, दुष्टों के दमन एवं विनाश तथा धर्म के पुनरुज्जीवन के लिये, उसकी प्रतिष्ठा के लिये, विश्व-ब्रह्मांड नायक के विशिष्ट अंश से, सुकृती महापुरुषों अर्थात् दिव्यविभूतियों का धराधाम पर अवतरण होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान् आद्य शंकराचार्य एक ऐसी ही दिव्यविभूति थे जिन्होंने दक्षिण भारत के केरल राज्य में कालड़ी की पुण्यभूमि पर अवतीर्ण होकर देश का उद्धार किया और त्रस्त एवं आतंकग्रस्त मानवता का अमित कल्याण किया।

धर्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ और परमभगवद्भक्त शिव गुरु के कुल परिवार में भावी युगपुरुष के पदार्पण से एक ओर तो कालड़ी प्रदेश में प्रसन्नता विराजमान थी और नित्यनवीन विलक्षण घटनाएं होती देखी जाती थीं। दूसरी ओर समग्र भारत में हाहाकार मचा था। अरबों के आक्रमण से उत्तर पश्चिम के राज्यों में त्राही-त्राही मची थी। मूलस्थान (मुल्तान) तक अरबों का झण्डा लहराने लगा था। एक-एक करके उस क्षेत्र के छोटे-छोटे राजा अपने अस्तित्व मर्यादा रक्षा के लिये युद्ध में अपना प्राण अर्पित करते जा रहे थे। उत्तर भारत की राजशक्तियां पारसपरिक वैर-विरोध के कारण इतनी क्षीण हो गयी थीं कि विदेशियों को भारतीय राजशक्तियों को पराजित करने में कहीं किसी प्रकार की बाधा नहीं प्राप्त हो रही थी। उधर दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट, चालुक्य, पल्लव, चोल आदि राजा दिनरात आपस में लड़ रहे थे। अरबों की शक्ति गुजरात तक पहुँच चुकी थी। समय और परिस्थिति अनुकूल पाकर उनकी धाक ऐसी जमती आ रही थी कि छोटे-छोटे राजे बिना युद्ध के ही या तो हार स्वीकार कर लेते थे या देश को छोड़कर बन में भाग जाते। फलतः अनाथ जनता बर्बरों के हाथ मृत्यु का शिकार बन रही थी। विदेशी सैनिक सिन्ध प्रान्त को रौंदते हुए गुजरात पार करके उज्जैन तक पहुँचने का प्रयास कर रहे थे। इस संकट काल में भी राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहारों को हरा कर सारे उत्तर भारत का अधिपति बनने के लोभ में देश द्रोही बन अरबों की पूरी मदद कर रहे थे।

धार्मिक कलह भी चरमसीमा पर पहुँच चुका था। शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन आदि बहत्तर सम्प्रदायों में बँटकर देश विशृङ्खलित हो चुका था। धार्मिक गुरुओं पणिडत-पुरोहितों, मठ-संघारामों का ऐसा चारित्रिक पतन हो गया था कि वे विदेशियों की सहायता करते हुए अपने प्रतिद्वंदी को पराजित करके एक प्रकार का सुख अनुभव कर रहे थे। देश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की आर्थिक स्थिति दिनरात के कलह, संघर्ष और युद्ध के कारण बिगड़ती जा रही थी। कहीं सूखा पड़ा हुआ था तो कहीं बाढ़ का प्रकोप, कहीं टिड्डीदल खेतों को खा रहा था तो कहीं कीटाणुओं के प्रकोप से हरी-भरी फसलें सूख रही थीं। इन कारणों से प्रजा में हाहाकार मचा था। बौद्ध भिक्षुओं में हीनयान और महायान के कलह के कारण और भी विषम परिस्थिति पैदा हो रही थी। ऐसी संकट की घड़ी में इनेगिने महात्मा ऐसे थे जो ईश्वरीय शक्ति में विश्वास कर जनता को धैर्य और साहस की शिक्षा देकर आश्वस्त करते पाये जाते थे और धर्म का सच्चास्वरूप समझाने के लिये दिनरात प्रयत्नशील थे। अमावस्या की तमसाच्छन्न कालरात्रि का पहरा भी बीतता है और प्राकृतशक्ति उषाकाल की आभा अरुणिमा द्वारा नये बिहान की सूचना देती है। यही सनातन नियम है।

भारतीय राष्ट्र के इसी अंधकार युग को समाप्त करके संयम-सदाचार और सुख-समृद्धि तथा शांति आनंद का प्रभुत्व स्थापित करने के लिये महात्मा शंकर का पदार्पण हुआ था। वे अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न महा मनीषी, योगी-तपस्वी और युगद्रष्टा थे, अमृतपुत्र थे। अतः बहुत थोड़े समय में ही उन्होंने वेदशास्त्रों तथा समग्र धर्मग्रंथों का पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया और धार्मिक अभ्युदय के अपने कर्तव्य कर्म में जुट गये। महापुरुष जिस मार्ग से चलते हैं वही युगधर्म बन जाता है। जनता उसी का अनुगमन करती है। गीता में भगवान् का वचन है किः—

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥'

संन्यास आश्रम में दीक्षित होने के लिये अपने श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव की खोज में महात्मा शंकर की यात्रा अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। दो महीने की अपनी कठिन पदयात्रा के क्रम में वे एक दिन ऐसे घने जंगल में पहुँचे जहाँ किसी मनुष्य का प्रवेश नहीं था। मध्याह्न के समय सूरज की प्रचण्ड ज्वाला से वचने के लिये वे एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। निर्जन वन में शांति का अनुभव करते हुए थोड़ा विश्राम कर रहे थे त्यों ही उन्हें एक विलक्षण दृश्य दिखाई पड़ा। वृक्ष के निकट एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटा पोखर था जिसमें से निकलकर मेढ़क उस दोपहरी में पेड़ के समीप तप रहे थे। एक विशाल नाग गेहुँवन पहाड़ की किसी निकटस्थ चट्टान से निकलकर अपने फन से उन पर छाया कर रहा था। सर्प का अचानक मेढ़कों पर छाया करना और मेढ़कों की गेहुँवन से मैत्री देखकर शंकर को आश्चर्य हुआ उन्हें विश्वास हो गया कि पास में कोई न कोई महात्मा अवश्य रहते हैं। जिनकी तपस्या के प्रभाव से यहां के जीवजन्तु सब के सब आनन्द कर रहे हैं। थोड़ी दूर चलने पर उन्हें एक कुटिया मिली और उसमें निवास करने वाले संत से ज्ञात हुआ कि यहां कभी ऋषि पुंगव शृङ्ग का आश्रम था।

इस प्रकार दो महीने की कठिन यात्रा के उपरांत शंकर नर्मदा नदी के तट पर पहुँचे जहाँ ओंकारेश्वर का प्रसिद्ध तीर्थ विद्यमान था। मंदिर में ठहरकर उन्होंने संत-महात्माओं और कतिपय भक्तजनों से मूर्द्धन्य योगीश्वर गोविन्द मुनि का पता पा लिया। वे बहुत काल से पर्वत की किसी गुफा में समाधि लीन थे। शंकर ने गुफाद्वार पर बैठकर गुरुवर गोविन्द मुनि की स्तुति प्रारम्भ की जिससे उनकी समाधि खुली और उन्होंने अर्द्धनिमीलित नेत्रों से शंकर को देखते हुए गुरु ने उनका परिचय पूछा?

शंकर ने अपना परिचय देते हुए कहा:—

'न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायु-
र्न खं नेन्द्रियं वा न तेषां समूहः।
अनैकान्तिकत्वात्सुषप्त्येक - सिद्ध-
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम्॥ १॥'

'न मैं पृथ्वी हूँ न जल, न अग्नि हूँ, न वायु, न आकाश हूँ। और उन सभी के सम्मिलन से बना हुआ भी कोई तत्त्व नहीं हूँ। ये पंचतत्त्व निरंतर बदलते रहते हैं, पर मैं शिव हूँ जिसमें कभी परिवर्तन नहीं होता, शिवोऽहम्, शिवोऽहम्।'

शंकर की प्रतिभा उस समय इतनी समुन्नत हो चुकी थी कि उन्होंने दस श्लोकों में संपूर्ण वेदान्त का सार गुरु गोविन्दमुनि के सम्मुख रख दिया। महात्मा आश्चर्य चकित होकर शंकर की ओर पूरी तरह आंख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोलकर देखने लगे। यही थे गुरु गोविन्द पाद जिनकी खोज में शंकर महीनों से भटक रहे थे। शंकर पर प्रसन्न होकर उन्होंने आने का उद्देश्य पूछा। शंकर ने निवेदन किया कि आप के चरणों में बैठकर ब्रह्मविद्या सीखना चाहता हूँ। आप कृपया मुझे संन्यास आश्रम में दीक्षित कीजिये। इस प्रकार गुरुसेवा में लगे रह वहां तीन वर्ष तक निवास कर शंकर ने महात्मा गोविन्दपाद से वैदिक साहित्य, योगप्रक्रिया तथा विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया।

यतिवर शंकर अन्य परिव्राजकों के साथ ग्रामवासी विद्वानों के आग्रह पर गुरु आज्ञावश कभी-कभी जनपद में जाया करते थे। उन्होंने जनता से सुन रखा था कि ऋष्य-शृङ्ग नामक महात्मा इसी विन्ध्यप्रदेश में एक गुफा में तप किया करते थे। जिसकी आकृति कमंडल की तरह थी। उनकी तपस्या के बल से किसी समय सूखा ग्रस्त मगधराज्य में प्रचुर वर्षा हुई। उस समय उन्होंने नर्मदा की बाढ़ से तटवर्ती प्रदेशों को डूबने से बचाया था। उन्हें उस कमण्डलाकृति गुफा का ज्ञान हो गया था जिसकी पतली चट्टानों को तोड़कर बाढ़ के प्रबल प्रवाह को दूसरी ओर मोड़ा जा सकता था।

संन्यासी शंकर पर्वतीय जनता के साथ प्रायः विन्ध्याटवी में भ्रमण किया करते थे। एक बार घूमते-घूमते उन्हें एक ऐसी गुफा दिख पड़ी जिसका पृष्ठभाग तोड़कर नर्मदा जल की धार को मोड़ा जा सकता था। उन्होंने सूखा-ग्रस्त किसानों को एकत्र किया। जन साधारण के हृदय में यह विश्वास बैठ गया था कि शंकर के अभिषिक्त जल में अपूर्व शक्ति है। उससे मृतक भी जीवित हो जाता है, निर्धन धनी बन जाता है, रोगी निरोग हो जाता है। यदि उनका आशीर्वाद मिल जाय तो नर्मदा की बाढ़ का जल इस गुफा के द्वारा हमारे, सूखे खेतों को सींचकर उर्वरा बना सकता है।

भक्त जनता शंकर की अनुमति से चट्टानें तोड़ने लगी। ग्रामनिवासी पत्थर तोड़ने की कला जानते थे। शंकर अपने कमंडल जल को मंत्र से अभिषिक्त कर जहाँ छिड़क देते थे वहाँ की कठोर चट्टान मिट्टी के ढूहे की तरह टूटती चली जाती थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्षा में नर्मदा का जल उमड़ रहा था। आश्रम में आचार्य गोविन्द पाद की गुफा को नर्मदा जलमग्न करने वाली ही थी कि उत्साही ग्रामवासियों ने ऋष्यशृङ्ग आश्रम के समीप स्थित कमंडलगुफा का पृष्ठभाग तोड़ दिया। उसी के नीचे किसी समय झील बन गयी थी जिसमें ऋष्यशृङ्ग के प्रताप से नर्मदा की बाढ़ का जल प्रति वर्ष जमा हो सूखाग्रस्त भूभाग को सींचता रहा। सायंकाल होते-होते शिलाभंजक ग्रामनिवासियों ने शंकर से कहा कि अब आप आश्रम जाइये। नर्मदा की बाढ़ अब गुफा के मध्य से होकर हमारे सूखे प्रदेश को पहुँचने वाली है। शंकर ने कमंडल उठाया। बड़ी तेजगति से गुरु-गुफा के पास पहुँचे। गुरुगुफा जलमगन होने ही वाली थी। शिष्य गण त्राहि-त्राहि पुकार रहे थे। उन्हें विश्वास था कि शंकर ही इस विपत्ति से हमारी रक्षा कर सकता है। शंकर के जो सहपाठी उनकी खोज में स्थान-स्थान भटक रहे थे वे भी ऋष्यशृङ्ग आश्रम के समीप स्थित कमंडल गुफा तक पहुँच गये। उन्होंने नर्मदा जल को आश्रम की ओर मुड़ते देखा तब तक शंकर अपने कमंडल में नर्मदा का जल भर चुके थे।

गुरु गोविंद पाद की समाधि खुली तो उन्होंने शंकर को अपने चरणों के समीप प्रणाम करते पाया। गुरु ने समाधि में, नर्मदा के प्रवाह और शंकर के प्रयास और मंत्रशक्ति को देख लिया था। इसी समय अन्य शिष्य जलप्रवाह का दिशा परिवर्तन देख आए थे। उन्हीं के साथ नहर निर्माताओं का दल भी आ पहुँचा। सायंकाल आश्रम वासियों ने नर्मदा की पूजा की। जन-आग्रह पर गोविन्द पाद ने अपने प्रवचन से शिष्यों सहित समाज को संबोधित किया।

कुछ समय के उपरांत गोविन्दपाद ने शंकर को एकान्त में बुलाकर कहा—'तुम में वह शक्ति आ गई है कि तुम स्वयं अपरोक्षानुभूति का मार्ग दूसरों को बता सकते हो। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी देह में ब्रह्म की दिव्यज्योति प्रस्फुटित हो चुकी है। तुम्हें ब्राह्मी स्थिति प्राप्त हो गई है। तुम काशी जाकर अद्वैत मत का प्रचार करो। तुम्हें इस धरा पर वैदिक धर्म के संस्थापन के लिये भेजा गया है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंकर ने मौनभाव से गुरु की आज्ञा शिरोधार्य की। वे गुरु-आदेश पाकर काशी की यात्रा पर चल पड़े। उस समय काशी में विद्वानों का केन्द्र था और उसे भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। इस प्रकार शंकर ने कालड़ी से काशी और कश्मीर बद्रीनारायण, कैलाश-मानसरोवर तथा कामरूप तक के सभी तीर्थों की यात्रा की। अपने दीर्घकाल व्यापी विस्तृत देश-पर्यटन के क्रम में उन्होंने पदयात्रा द्वारा हजारों संत-महात्माओं और देशभक्त समाज सेवकों के साथ विशाल जनसमूह से सीधा संपर्क स्थापित कर उसे अपने वैदिक धर्मोपदेश द्वारा अनुप्राणित किया। फलतः दबे और संशय ग्रस्त समाज में नई स्फूर्ति, नया तेजबल और स्वाभिमान जाग उठा। इस तरह शताब्दियों का सोया देश नव-जागरण के दिव्यालोक से उद्भासित अभ्युदय के प्रशस्त और परिष्कृत राज मार्ग पर आगे बढ़ा। आचार्य शंकर ने एकता का देवदूत बन विशृङ्खलित समग्र भारतीय राष्ट को पुनः एक सुदृढ़ धार्मिक एवं सांस्कृतिक सूत्र में बांध कर सचमुच कालजयी युगपुरुष का अनुपम कार्य किया। उनकी वाणी के प्रभाव से जनता इतनी शक्तिशाली हो गई और उसमें त्याग-बलिदान की ऐसी प्रखर भावना जाग पड़ी जिससे आगे की पाँच शताब्दियों तक देशवासी विदेशी आक्रामकों को अपनी मातृभूमि से दूर खदेड़कर सुख शान्ति का जीवन बिताने में सक्षम बने रहे।

महापुरुष नवोदय के जिस युगान्तरकारी आलोक-पथ से चलते हैं वही लोकहितकारी युगधर्म बन जाता है। आचार्य गोविन्दपाद देश के नैतिक पतन, धर्म के ह्रास और वैदिकविद्या के लोप होने से बहुत चिन्तित और व्यग्र थे। भगवान् की असीम कृपा से उन्हें शंकर के समान अद्भुद् प्रतिभासंपन्न सुयोग्य शिष्य मिल गया जिसे इस लोक-कल्याण-कारी पुण्यकार्य में लगाकर उन्होंने चैन की सांस ली। शंकर अनोखी सूझ-बूझ वाले युगद्रष्टा और महान् समाजसुधारक थे। उनकी आध्यात्मिक दृष्टि दिव्यज्योति से परिपूर्ण थी। उनकी वाणी में जादू था। उन्हें संगठन की कला मालूम थी उनमें समन्वय की सुकोमल मधुर भावना और अमित सहिष्णुता थी जिससे विभिन्न सम्प्रदायों के मतभेद से बँटे जनमानस की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोगामी विचारधारा को वे सबल राष्ट्रीयधारा का स्वरूप देकर धर्म के ठोस रचनात्मक कार्य में लगा सके। अत: युगों बाद वे देश के सच्चे लोकनायक और मानवता के प्रधी प्रजारी बन सके।

ब्रह्मविद्या के पुनरुद्धार के लिये भी उनके कार्य अपूर्व और आश्चर्यचकित करने वाले हैं। आचार्य गोविन्दपाद ने ब्रह्मविद्या के संरक्षण और संवर्धन का जो भार उन्हें सौंपा था उसे उन्होंने सम्यक् प्रकार से पूरा करके मानवता का भारी कल्याण किया। उन्होंने बहुत थोड़ी अवधि में बारह उपनिषदों, श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र और सनत् सुजातीयम्, इन पन्द्रह ग्रंथों पर भाष्य लिखा। इसके अतिरिक्त उन्होंने अद्वैत भावों से अनुप्राणित बहुत सी छोटी-मोटी पद्यात्मक रचनाएँ प्रस्तुत की जिनसे बहुत लोकोपकार हुआ। जनता के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने में इन कोमल कान्त-पदावलियों का विलक्षण योगदान रहा है। अपनी मधुरता और लालित्य के कारण आज भी वे भक्तजनों के भजन-सुमिरन में नित्यप्रति सुनी जाती हैं। उनसे धर्म और सदाचार को परिपुष्ट करने में सरलता होती है।

ब्रह्मसूत्र, गीता और उपनिषद् को प्रस्थानत्रयी के नाम से जाना जाता है। ब्रह्मसूत्र को न्याय प्रस्थान कहते हैं और उपनिषद् श्रुति प्रस्थान के नाम से विख्यात हैं। श्रुतिप्रस्थान की तरह गीता को स्मृति प्रस्थान कहते हैं।

भगवान् आद्य शंकराचार्य के अपनी लोक-लीला के संवरण के बाद देश विदेशी सत्ता की लौहशृङ्खला में बंधा कभी सोता, कभी जागता, तन्द्रा-प्रमाद में पड़ा छटपटाता रहा। किन्तु पारस्परिक बैर-विरोध, और क्रोध-लोभ, दंभ-अभिमान विक्षिप्त राजशक्तियों के कुत्सित कार्यों के कुफल से देश कभी पूर्णत: मुक्त नहीं हो सका। फलत: दासता की जंजीरें तोड़ी नहीं जा सकीं। बीच-बीच में रामभक्ति-शाखा और कृष्णभक्ति शाखा के संतकवियों, विचारकों ने राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का भरपूर प्रयास किया तथा बहुत अंशों में सफल भी हुए। उनमें गोस्वामी तुलसी दास जी सर्वाधिक लोकप्रिय हुए और उन्होंने अपनी अनूठी विनयपत्रिका, कवितावली और दोहावली द्वारा जन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधारण में नवजागरण, नई स्फूर्ति तथा पुरुषार्थ की सबल भावना ला दी। उनकी कालजयी रचना रामचरित मानस ने तो जन-जन में अपूर्व क्रांति की वह शक्ति जगा दी कि कुछ ही समय में लोग समन्वय के सुदृढ़सूत्र में एकजुट हो राष्ट्र के कल्याणकारी कार्यों की ओर उत्साह और उत्सुकता से अग्रसर होने लगे। उन्होंने श्रद्धाभाव से धार्मिक मर्यादा की रक्षा का व्रत ले लिया और अपने त्याग बलिदान से देश को प्रगति की नई दिशा दिखाई।

देश ने अंगड़ाई ली, नव जागरण से चेतना आई किन्तु इसी बीच शासन-सत्ता पर अधिकार जमाने के आपसी कलह, फूट और संघर्ष से मुगल साम्राज्य विखर कर पतन के गर्त्त में जा गिरा। इस संक्रमणकालीन विषम परिस्थिति से लाभ उठाकर देश में पहले से घुस-पैठ फिरंगी देश के व्यापारियों ने अपनी कूटनीति और छल-छद्म से धीरे-धीरे प्रभुत्व स्थापित कर लिया ओर सत्ता की बागडोर उनके हाथों में चली गई। हमारे देशवासी अपनी भाषा और संस्कृति से पुनः एक बार वंचित होकर दब गये। जहाँ कलह और बिखराव होता है, दासता वहीं डेरा डालकर बैठजाती है। भाषा संस्कृति का बाहन है। अतः फिरंगी शासकों ने अपनी अंग्रेजी भाषा को शिक्षा और राजकाज की भाषा बना कर लोगों पर लाद दिया। ऐसी विषम परिस्थिति में, पुंश्चली वृत्त पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति की दुष्प्रवृत्तियों से मूर्च्छित समाज में धर्म और सदाचार की प्राणोन्मेषिनी शक्ति उत्पन्न करना सहज कार्य नहीं था।

एक ओर तो लोग बहुत दिनों से अपने धर्म और अपनी संस्कृति से अलग जा पड़े थे। दूसरी ओर देववाणी संस्कृत की शिक्षा लुप्तप्राय थी। अच्छे-अच्छे मनीषी भी अध्यात्म विद्या से दूर एवं पराङ्मुख हो गये थे। उन्हें अपने वेद-शास्त्रादि सद्ग्रंथों का कोई मौलिक ज्ञान नहीं हो पाता था।

ऐसे संकट काल में, जब अस्तित्व खतरे में था, पौरुष और स्वाभिमान के दिव्य स्वरूप, राष्ट के नैसर्गिक प्रहरी देवतात्मा हिमालय के हृदय और भगवान् शिव के निवास कैलाश की पावन गोद में पुण्यसलिला भगवती भागीरथी के तट पर ऋषियों की तपोभूमि ऋषिकेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में अपनी तपस्या-साधना में लीन, चन्द्रमौलेश्वर की कृपा से एक तपस्वी ने समय पाकर यह मधुर स्वप्न देखा कि यहाँ एक ज्ञानपीठ की स्थापना करके ब्रह्मविद्या के पठन-पाठन का पुण्य कार्य करना ही भगवान् की सच्ची आराधना और अर्चापूजा है। इस प्रकार भगवत्-प्रेरणा से १८८१ ई. में ऋषिकेश में कैलाश-आश्रम की स्थापना हुई और कठिनाइयों से लड़ते हुए अदम्य उत्साह और अमित धैर्य के साथ वैदिक संस्कृति के अभ्युदय एवं ब्रह्मविद्या के उद्धार का सम्यक् संकल्प लिया गया। मधुर स्वप्नद्रष्टा वे अलौकिक महात्मा आचार्य शिरोमणि महंत धनराज गिरि थे, जिनका नाम बीसवीं शताब्दी के ब्रह्मविद्या-प्रचारकों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। उनका यह कार्य अनुपम और अर्पूव समझा जायेगा।

मालूम होता है कि लोक-संग्रह की पावन-भावना से अनुप्राणित आचार्य श्री ने अनूठी लगन और सच्ची निष्ठा से यह कार्य शुरू किया था और थोड़ी अवधि में ही उन्हें अपने इस कार्य को संचालित और अनुशासित करने में आशातीत सफलता मिली। परिणामस्वरूप कैलाश-आश्रम ऋषिकेश में ब्रह्मविद्या के अध्ययन-अध्यापन का प्रमुख केन्द्र बन गया। धीरे-धीरे उसे समुचित मर्यादा और ख्याति प्राप्त होती गई॥ इसका ज्वलंत प्रमाण है कि इसकी शैशवावस्था में ही विश्वविख्यात संत महात्मा स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, उनके गुरुभाई स्वामी अभेदानन्द और संन्यास को सार्थक करने वाले दण्डि संन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसे युगान्तरकारी विचारकों ने भी कभीकाल यहाँ पहुँचकर वेदांतविद्या की कुछ शिक्षा ग्रहण की तथा लोकोपकार की प्रेरणा प्राप्त की।

अपने संस्थापक आचार्य के ब्रह्मलीन होने के उपरांत इस ब्रह्मविद्यापीठ का कार्य उत्तरोत्तर विकसित और परिपुष्टे होता गया। भागीरथी के अविशांत प्रवाह की तरह इसकी प्रगति कभी रुकी नहीं। इस चिरकालिक ज्ञान-सूत्र को सुसंपन्न करने वाले दो मनीषी संत, ऋत्विज और उद्‌गाता, पूर्ववर्ती आचार्यवर स्वामी चैतन्य गिरि और विद्यावाचस्पति महामण्डलेश्वर स्वामी विष्णुदेवानंद गिरि जी महाराज के कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस तरह समग्र स्थिति का अद्यतन सिंहावलोकन करते हुए स्पष्ट प्रतीत होता है कि वि.सं. २०२६ आषाढ़ शुक्ल सप्तमी तदनुसार २१ जुलाई १९६९ ई. को, जिस पुनीत घड़ी में दशम पीठाधीश्वर पूज्य प्रात: स्मरणीय श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ स्वामी विद्यानंद गिरि पीठासीन हुए उस दिन यह एक युगान्तरकारी और अलौकिक कार्य हुआ। उसी दिन धरती का पहला मानव चन्द्रमा पर उतरा था। कई सन्त-महात्माओं ने इसे कैलाश-आश्रम के उज्जवल भविष्य का द्योतक माना।

दशम पीठाधीश्वर स्वामी विद्यानंद गिरि जी महाराज के अलौकिक व्यक्तित्व और कुशल मार्गदर्शन से विगत सत्ताईस वर्षों में आश्रम की असाधारण उन्नति हुई। इस बीच महाराज श्री ने जो कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित किये उन्हें देख कर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। आपने अनेकानेक योजनाओं, महोत्सवों और उनमें प्रगति के चमत्कारी कार्यक्रमों का आविष्कार किया और उनको अद्भुद् प्रयास, लगन एवं निष्ठा के साथ सफल बनाया। इनमें कैलाश-आश्रम शताब्दी-महोत्सव (१९८०-८१), आचार्यद्वय जन्मशताब्दी महोत्सव, (१९८५-८६), भगवान् आद्यशंकराचार्य द्वादश-शताब्दी (महोत्सव) समारोह (१९८७-८८) परम उल्लेखनीय हैं।

महाराज श्री ने दो दशकों में जो चमत्कारी कार्य कर दिखाए उन्हें वस्तुत: दो शतकों में भी पूरा करना कठिन है। भारत के आध्यात्मिक एवं धार्मिक विकास के क्षेत्र में कैलाशआश्रम का अपना विशिष्ट स्थान है। इस ब्रह्मविद्यापीठ के माध्यम से वर्त्तमान पीठाधीश्वर महाराज श्री ने राष्ट चरित्र के नवनिर्माण और ब्रह्मविद्या के अभ्युदय का जो कार्य किया है, वह भगवान् का इस विशेष कार्य के लिये भेजा गया कोई देवदूत ही कर सकता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि आप आज के नैतिक पतन और चरित्र-संकट के विषम-समय में उत्तराखण्ड में, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि में आध्यात्मिक अभ्युदय के देवदूत बनकर अवतरित हुए हैं। आपके प्रतिभाशाली नेतृत्व में ऋषिकेशस्थ कैलाश-आश्रम के अतिरिक्त देश के विभिन्न महत्वपूर्ण नगर और तीर्थ-केन्द्रों में आधे दर्जन से अधिक आश्रम और सारस्वत-साधना के केन्द्र सुचारु रूप से संचालित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो रहे हैं। उनमें ब्रह्मानंद-आश्रम, दशनाम संन्यास-आश्रम हरिद्वार, उत्तरकाशीस्थ कैलाश-आश्रम, कैलाश-आश्रम रोहतक (हरियाणा), श्रीराम आश्रम, समाना मण्डी, पटियाला (पंजाब), श्री कैलास-धाम, नई झूँसी, प्रयाग, और कैलासविद्यालोक कानपुर में लोकोपकारी कार्य अनुशासित रीति से चल रहे हैं। ये सभी आश्रम और विद्यापीठ महाराज श्री के संरक्षण में हमारी धार्मिक और आध्यात्मिक मर्यादा की रक्षा करने में निष्ठापूर्वक लगे हैं।

महामण्डलेश्वर स्वामीविद्यानंदगिरिजी महाराज परम तपस्वी, पूर्ण वीतराग और अध्यात्म-विद्या-विशारद, महामनीषी और ओजस्वी प्रवचनकर्त्ता हैं। कैलाश-आश्रम ऋषिकेश के ब्रह्मविद्यापीठ में आप स्वयं परिश्रमपूर्वक नियमित रीति से वेदांत-विद्या के अध्यापन का कार्य करते हैं। वहाँ प्रस्थानत्रयी-ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् और गीता-न्याय प्रस्थान, श्रुतिप्रस्थान और स्मृति प्रस्थान का पठन-पाठन आप की विलक्षण प्रतिभा से सरल सुबोध एवं रोचक रूप में होता है जो अन्यत्र दुर्लभ है। आपने सभी प्रमुख उपनिषदों, और ब्रह्मसूत्र पर सरल सुबोध भाषा में भाष्यों की रचना कर आश्रम की ओर से प्रकाशित किया है। ब्रह्मसूत्र पर आपने संस्कृत में वृत्ति की रचना की है। वेदान्त-परिभाषा पर भी आपने सरल सुबोध टीका की रचना कर आश्रम की ओर से प्रकाशित किया है। अपने पूर्वाचार्यों की अध्यात्मविद्या संबंधी अनेक अनमोल कृतियों को सुबोध-टिप्पणी के साथ प्रकाश में लाकर आपने अध्यात्मविद्या के जिज्ञासुओं का भारी उपकार किया है।

भारत की राजधानी दिल्ली में भी आपने ऋषिकेशस्थ मूल कैलाश-आश्रम की सुव्यवस्थित शाखा कैलासविद्यातीर्थ के नाम से बनाने का सत्य संकल्प लिया जो अपनी योजना के अनुसार निर्माण हो चुका है। कैलास विद्यातीर्थ दिल्ली में भगवान् आद्य शंकराचार्य जी के स्मारक का भी निर्माण हुआ है।

कैलास-धाम झूंसी (प्रतिष्ठानपुरम्) प्रयाग की स्थापना इतिहास की टूटी कड़ी को जोड़ने वाला विलक्षण कार्य है जिसका अपना विशिष्ट महत्त्व है। वह विस्मृति के गर्भ में विलीन गौरवपूर्ण आध्यात्मिक शिक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही नहीं, राष्ट की व्यावहारिक शिक्षा, कर्मकाण्ड और योग-विद्या की, पूर्व युग-पुरुषों द्वारा दी गई अनमोल देन पर नवीन आलोक डालने वाला है। कैलासशधाम जिस परमपुनीत भूमि के केन्द्रीय-स्थल पर बना है, वह आठवीं शताब्दी में उत्तर भारत का विख्यात आध्यात्मिक केन्द्र और विद्याधाम था।

विक्रम की नवीं शताब्दी के मध्य सन् ८०० ई. के लगभग भारत मे दो महान् धर्माचार्य कुमारिलभट्ट और शंकर ख्याति प्राप्त कर चुके थे। कुमारिल भट्ट महान् कवि एवं साहित्याकार बाणभट्ट के वंशज थे। बाणभट्ट हिरण्यवाह की गोद में, पाटलिपुत्र से अनतिदूर मगधदेश वासी विलक्षण प्रतिभासम्पन्न यशस्वी विद्वान् थे। कुमारिल की मूल परम्परा मित्रवंश की थी और वे कश्यप गोत्रीय थे। यह गोत्र एक हजार वर्ष से अविच्छिन्न चला आ रहा था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शुंगवंशी ब्राह्मणसेनापति पुश्यमित्र ने, जो कश्यप गौत्रीय था, युद्धभीत, कायर और विलासी मगधसम्राट् वृहद्रथ को मारकर शकों का सामना किया तथा उन्हें अपनी बुद्धिकुशलता और शौर्यबल से गान्धार देश से बाहर निकालकर छोड़ा। पुष्यमित्र तथा अग्निमित्र नामक प्रतापी शुंगवंशी ब्राह्मणराजा तक्षशिला से कामरूप तक एकछत्र शासन करते थे। 'स्मिथ' और 'जायसवाल' दोनों इतिहासकार इनके परिवार को राजगृह के आसपास का मानते हैं। आजकल भी 'कश्यप गोत्रीय सुगन्यिां बाभन' पटना जिला के पालीगंज थाने में खपुरा के आस-पास पाये जाते हैं। ये लोग प्राचीन शुङ्गायन ब्राह्मणों के वंशज हैं जिसवंश को सर्वप्रथम सम्राट् पुंष्पमित्र और अग्निमित्र ने अलंकृत किया।

इतिहास इस बात को सत्यापित करता है कि शुंगवंशी और कण्ववंशी राजाओं ने विदेशियों से दो सौ वर्षों तक देश की रक्षा की और विदेशियों को, समय-समय पर आक्रमण करते समय जीतकर अश्वमेध यज्ञ के द्वारा यह घोषणा करा दी कि—'यज्ञो वै विष्णुः'। अर्थात् यज्ञ ही विष्णु है।

पाटलिपुत्र के निकट सोनभद्र तट पर कुमारिलभट्ट का जन्म हुआ था। उनके पूर्वज बाणभट्ट लगभग एक सौ वर्ष पूर्व देश में ख्याति प्राप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर चुके थे। महाराज हर्षवर्द्धन् के राजकवि होने के कारण उन्हें अपार संपत्ति प्राप्त हो चुकी थी। वंशपरम्परा से चली आ रही विशालसंपत्ति के अतिरिक्त उन्हें इतनी धनराशि प्राप्त हो चुकी थी कि अकेले कुमारिल के पास एक सहस्त्र घोड़े पांच सौ हाथी और सैकड़ों सेवक रहते थे। कोसों तक फैले इनके खेत ऐश्वर्य के द्योतक थे। इनके पूर्वजों की संस्कृत पाठशाला थी जहाँ ग्रामीण छात्र-छात्राएं प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करती थीं। बाल्यकाल की शिक्षा समाप्तकर कुमारिल ने काशी पहुँचकर व्याकरण, निरुक्त, वेद, धर्मशास्त्रादि का अध्ययन समाप्त किया और मीमांसा में विशेष योगयता प्राप्त की।

एक बार इनके आचार्यदेव अपने शिष्यों सहित ऋषिपत्तन-सारनाथ पहुँचे। नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति धर्मकीर्ति के प्रशिष्य बौद्ध भिक्षु, वैदिकों के साथ प्राय: शास्त्रार्थ किया करते रहे। कुमारिल ने वौद्धभिक्षुओं को शास्त्रार्थ के लिये आमंत्रित किया। उस समय सारनाथ में एक भिक्षु नालंदा के कुलपति धर्मकीर्ति की परम्परा में शिक्षित-दीक्षित होकर आए थे। वे उन्हीं की तरह अपने समय में दिग्विजयी माने जाते थे। अत: उन्हें काशी सारनाथ का द्वितीय धर्मकीर्ति घोषित किया गया था। कुमारिल भट्ट ने जब उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया तो वह बौद्धविहार छोड़कर ऐसे लुप्त हुए कि पुन: सारनाथ आए ही नहीं।

प्रतिष्ठानपुर में एक सुव्यवस्थित विद्यापीठ की स्थापना कुमारिल के पितृदेव पं. विश्वामित्र ने उस समय की थी जब पालवंशी राजा धर्मपाल ने दूसरे बौद्ध विश्वविद्यालय विक्रमशिला का निर्माण कराया था। प्रतिष्ठानपुर के बालिका विद्यालय में कुमारिल की बहन भारती अध्ययन करती थी। कुल में कुमारिल और भारती दो संतान जीवित थीं। पिता ने कुमारिल को बहुत समझाया पर वे विवाह करने को प्रस्तुत नहीं हुए। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वैदिकधर्म की सेवा करना चाहते थे। ऐसी परिस्थिति में कुमारिल के पिता पं. विश्वामित्र ने अपनी अधिकांश संपत्ति प्रतिष्ठानपुर के विद्यापीठ को, जो विश्वविद्यालय का स्वरूप धारण कर चुका था, अर्पित कर दी थी। गंगातट पर कई कोस की भूमि विद्यापीठ के अधिकार में थी। इस विद्यापीठ में संपूर्ण भारत के वैदिकधर्मावलंबी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा अपनी राजकन्याओं को उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजते रहे। उस समय अरब आक्रामकों के आतंक से, सिंध-गुजरात आदि राज्यों से भागी अनाथ महिलाओं को यहीं शरण मिलती थी। इस विद्यापीठ में राष्ट्रकूटों के महाराज गोविन्द तृतीय की कन्या चंचला, मगध-महाराज धर्मपाल की कन्या मागधी, सौराष्ट्र के प्रतिहार राजा बाणभट्ट की कन्या विजया और सेठकन्या प्रभा ने उच्चशिक्षा प्राप्त की थी।

आचार्य शंकर से शास्त्रार्थ में पराजित होने पर जब मंडनमिश्र ने संन्यास-आश्रम की दीक्षा ले ली तो उनकी धर्मपत्नी परमविदुषी भारती ने उपरोक्त सभी सुशिक्षिता राजकन्याओं के साथ एक सुदृढ़ संगठन बनाकर, आचार्य शंकर की भारत-व्यापी धार्मिक पदयात्रा में, उनके जनजागरण, धार्मिक अभ्युदय और राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने के परम पुनीत कार्य में उनकी भरपूर सहायता की।

कहने का तात्पर्य कि आज एक ओर जहाँ देश की सामान्य जनता जिस प्रकार घोर आर्थिक संकट से पीड़ित दुखमय जीवन बिता रही है और मंहगाई सुरसा की तरह दिन दूनी रात चौगुनी अपना विकराल वदन सुरसा की तरह फैलाकर निरीह और कमजोर लोगों को निगलती जा रही है। वहीं दूसरी ओर दिनानुदिन नैतिकता के ह्रास और चरित्र-संकट से समाज पतन के अतल गर्त्त में गिरता जा रहा है। भारतीय अध्यात्मज्ञान का ह्रास और अपेक्षा इसके प्रधान कारण हैं। अर्थ-संकट से भी अधिक दुखदायी चरित्र का संकट है जो विघटन और विनाश का कारण है। इस गिरावट को रोकने और मानवता की रक्षा के लिये भारतीय ज्ञान का अभ्युदय बहुत जरूरी है। मैक्समूलर ने कहा था कि-'यदि मुझसे कोई पूछे कि किस मानव-आकाश के नीचे मनुष्य के मस्तिष्क का सर्वाधिक विकास हुआ है और कहाँ जीवन की कठिनतम समस्याओं पर गहनतम विचार कर इनके ऐसे समाधान भी खोजे गये हैं जिन पर कि प्लेटो और कांट का अध्ययन करने वाले भी गौर किये बिना नहीं रह सकते, तो मैं भारत की ओर इशारा करूँगा'। लेकिन दो सौ वर्षों की दासता की अवधि में पश्चिमी ज्ञान और शिक्षा के दबाव-प्रभाव ने भारतीय विचार और दर्शन के वृक्ष को इस प्रकार जकड़कर अवसन्न कर दिया है कि वह अपनी जड़ों से पोषण ग्रहण करने की क्षमता ही खो बैठा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे देश में प्राचीन दर्शन और ज्ञान के प्रति आकर्षण कम होने से नये संदर्भों में उन्हें पुनर्प्रतिष्ठित करने के प्रयास उल्लेखनीय स्तर पर नहीं हो पा रहे हैं। प्राचीन ग्रंथों के ईमानदार संरक्षक और अध्येताओं के अभाव के कारण कितने ग्रंथ नष्ट हो गये। पाली, प्राकृत और संस्कृत की शिक्षा की उपेक्षा भी इन ग्रंथों से अलगाव का एक प्रमुख कारण है। विद्वानों की खोज के अनुसार हमारे यहां विभिन्न विषयों के लगभग साठ करोड़ प्राचीन ग्रंथ टीका सहित उपलब्ध थे। इनमें अनेक तो काल कवलिव हो गये। वृद्धपंडित और शास्त्री ज्ञान और शिक्षा की मुख्यधारा से अलग अंधेरे कोनों में उपेक्षित और अभावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। इनके अवसान के साथ इन करोड़ों ग्रंथों की चाभी भी हमारे हाथ से निकल जायेगी। इसलिये गहन और प्रभूत भारतीय ज्ञान के संरक्षण अनुवाद, सम्प्रेषण और उन्नयन की बहुत बड़ी जरूरत है। इस काम के लिये पंडितों-शास्त्रियों के पीठों-मंचों की स्थापना और उनके साथ पश्चिमी शिक्षा और ज्ञान-प्रणाली में प्रशिक्षित आधुनिक विद्वानों का संवाद आयोजित किया जाना चाहिये।

यद्यपि प्राचीन ज्ञान और दर्शन के संरक्षण, उन्नयन और दोहन के इधर-उधर थोड़े बहुत प्रयास हुए हैं। लेकिन इनकी गति धीमी और संख्या सीमित हैं। हमारे पैरों के नीचे अपनी जमीन नहीं होना भी समय के साथ दौड़ में हमारे पिछड़ने का एक महत्वपूर्ण कारण है।

इस दिशा में महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानंदगिरि जी महाराज ने अनेक आश्रमों की स्थापना करके प्राचीन भारतीय ब्रह्मविद्या के उन्नयन और संरक्षण का अपूर्व कार्य किया है और निरन्तर उस कार्य को पूर्णरूप से गतिशील बनाने की सदिच्छा से अनेक स्थानों में आध्यात्मिक ज्ञानपीठों की स्थापना से प्रशस्त एवं परिष्कृत पथ तैयार कर रहे हैं।

यह कार्य भगवान् की कृपा से अलौकिक प्रतिभा संपन्न कोई देवदूत ही कर सकता है।

संपूर्ण सृष्टि का उद्देश्य मानव जीवन का विकास करना है, मनुष्य का पुनर्निर्माण मानव-प्रकृति को बदले बिना हम मानवजीवन और मानव समाज को बदल पाने की आशा नहीं कर सकते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म का आधार व्यक्ति के सारभूत मूल्य और गौरव का उद्घाटन और वास्तविकता के उच्चतर संसार के साथ व्यक्ति का सम्बन्ध है। पूजा मनुष्य का (दिव्य) ब्रह्म तक पहुँचने का प्रयत्न है। धर्म वह अनुशासन है, जो अन्तरात्मा को स्पर्श करता है और हमें बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है; काम, क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा करता है; नैतिक बल को उन्मुक्त करता है; संसार को बचाने के महान् कार्य के लिये साहस प्रदान करता है। मन के अनुशासन के रूप में इस (धर्म) में उस बुराई का मुकाबिला करने की कुंजी और सारभूत साधन विद्यमान हैं, जो सभ्य संसार के लिये खतरा बनी हुई है। इसमें हमारे विचार और आचरण को आत्मा के धर्मों का वशवर्त्ती बनाने की बात निहित है।

धर्म का मूल एक प्रकार की विस्मय की अनुभूति में और स्वयं जीवन के शाश्वत रहस्य में, इसकी चारुता और शक्ति में, जब हम किसी तृप्तिदायक वस्तु को प्राप्त करते हैं, तब होने वाले परम उल्लास के अनुभव में है; और इनके अनुभव के अभाव में मनुष्य मृतक सदृश है।

हमारे मार्ग दर्शक, धर्माचार्य महाराज श्री ने वह अमूल्य कार्य किया है जिसके सहारे हम अपने को शाश्वत सत्य से जोड़ने के प्रयास में सफल हो सकते हैं। "अरी गार्गी, जो इस 'अविनश्वर' को बिना जाने, इस संसार से प्रयाण कर जाता है, वह दरिद्र है, दया का पात्र है; दूसरी ओर, जो कोई इस 'अविनश्वर' का ज्ञान प्राप्त करके इस संसार से प्रयाण करता है, वह ब्राह्मण है।" **'यो वा एतदक्षरं गार्गि अविदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रेति स कृपणः अथ एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽ स्माल्लोकात् प्रेति स ब्राह्मणः।'**

जब तक उस सर्वोच्च की झलक न मिले, तब तक जीवन अपूर्ण रहता है। आत्मा की भी ठीक वैसी ही आंखें हैं, जैसी शरीर की हैं, उन आंखों से वह परमसत्य का ज्ञान प्राप्त करती है और परम पूर्णता से, जो परमात्मा है, प्रेम करना सीखती है।

धर्म का मूल सिद्धान्त है मानवीय आत्मा के गौरव को प्राप्त करना; जो भगवान् का निवास स्थान है। "सब धर्मों का सर्व स्वीकृत मूल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धान्त यह ज्ञान ही है कि परमात्मा प्रत्येक जीवित प्राणी के हृदय में निवास करता है।"[१] "समझ लो कि धर्म का सार यही है और फिर इसके अनुसार आचरण करो; दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार मत करो, जैसा, तुम नहीं चाहते कि कोई तुम्हारे साथ करे।"[२] हमें दूसरों को अपने जैसा ही समझना चाहिये। "जो अपने मन, वचन और कर्म से निरन्तर दूसरों के कल्याण में लगा रहता है और जो सदा दूसरों का मित्र रहता है, ओ जाजलि, वह धर्म को ठीक-ठीक समझता है।"[३]

विनयशील संपन्न धर्म जिज्ञासुओं के लिये आज महाराज, यतीन्द्रकुलतिलक स्वामी विद्यानंद गिरि जी जो कुछ कर रहे हैं वह सर्वोत्तम परमात्मा की आराधना है, योगसाधना और पूजा है। वे धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा के लिये यहां उतरे देवदूत हैं। ब्रह्मविद्या के संदेश को सर्वजन सुलभ बनाने वाले युगपुरुष हैं, अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाले ज्योतिपुंज दिव्य अंशुमाली हैं। उन्हें अपने मार्गदर्शक के रूप में पाकर हम कृतकृत्य हैं। उनके धर्मकार्य हमारे उज्जवल भविष्य के सूचक हैं।

---

१. भगवान् वासुदेवो हि सर्वभूतेष्ववस्थितः।
एतज्ज्ञानं हि सर्वस्य मूलं धर्मस्य शाश्वतम्॥

२. श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधर्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

३. सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः।
कर्मणा मनसा वाचा, स धर्मं वेद जाजले॥ (महा. शां)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ कैलासपीठाधीश्वर - अनन्तश्रीविभूषित - महामण्डलेश्वर- स्वामिविद्यानन्दगिरि - महाराज - अष्टोत्तरशत— नामावलिः

१. ॐ अनन्तश्रीविभूषिताय नमः
२. ॐ परमहंसाचार्याय नमः
३. ॐ परिव्राजकाचार्याय नमः
४. ॐ विद्यावाचस्पतये नमः
५. ॐ वाग्देवीप्रियाय नमः
६. ॐ ब्रह्म - विद्या - प्रवणाय नमः
७. ॐ ब्रह्म - विद्या - प्रचारकाय नमः
८. ॐ वेदान्तविद्वराय नमः
९. ॐ वेदान्तरहस्यज्ञाय नमः
१०. ॐ गीर्वाण - भाषा - प्रियाय नमः
११. ॐ वेदान्ताध्यापनरताय नमः
१२. ॐ आर्यसंस्कृत्युद्बोधकाय नमः
१३. ॐ धर्मदेशिकवराय नमः
१४. ॐ अनेकशिष्यदीक्षागुरवे नमः
१५. ॐ अनेक - शिष्य - शिक्षागुरवे नमः
१६. ॐ यज्ञोपवीतदीक्षागुरवे नमः
१७. ॐ पुण्यश्लोकाय नमः
१८. ॐ स्वे - महिम्नि - स्थिताय नमः
१९. ॐ ब्रह्मविद्वराय नमः
२०. ॐ सद्रूपाय नमः
२१. ॐ चिद्रूपाय नमः
२२. ॐ आनन्दरूपाय नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२३. ॐ भक्तानन्दकराय नमः
२४. ॐ ब्रह्म - स्वरूपाय नमः
२५. ॐ आत्मरूपाय नमः
२६. ॐ श्रोत्रियाय नमः
२७. ॐ ब्रह्मनिष्ठाय नमः
२८. ॐ ज्येष्ठाय नमः
२९. ॐ श्रेष्ठाय नमः
३०. ॐ महात्मने नमः
३१. ॐ परमात्मने नमः
३२. ॐ कल्याणकृते नमः
३३. ॐ समदृष्टिवराय नमः
३४. ॐ क्रान्तदृष्टिवराय नमः
३५. ॐ सूक्ष्मदृष्टिवराय नमः
३६. ॐ मधुरदेशिकवराय नमः
३७. ॐ प्रतिवादशमनाय नमः
३८. ॐ महापुरुषाय नमः
३९. ॐ युगपुरुषाय नमः
४०. ॐ शंकराचार्य - प्रियाय नमः
४१. ॐ भगवत्पाद - प्रियाय नमः
४२. ॐ पूर्वाचार्य - प्रियाय नमः
४३. ॐ धनराजगिरि - प्रियाय नमः
४४. ॐ विष्णुदेवानन्द - गिरि - प्रियाय नमः
४५. ॐ वेदान्त - छात्र - प्रियाय नमः
४६. ॐ वेदान्त - श्रोतृगण - प्रियाय नमः
४७. ॐ प्रसन्नवदनाय नमः
४८. ॐ मधुर - भाषिणे नमः
४९. ॐ कषायवस्त्रालंकृताय नमः
५०. ॐ ब्रह्मवर्चसदीप्ताय नमः
५१. ॐ त्रिपुण्ड्रशोभाय नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५२. ॐ सौम्यदर्शनाय नमः
५३. ॐ महाप्रभावशालिने नमः
५४. ॐ अभिजातचरिताय नमः
५५. ॐ कृपामूर्तये नमः
५६. ॐ शान्तदृष्टिवराय नमः
५७. ॐ उदारहृदयाय नमः
५८. ॐ योगारूढाय नमः
५९. ॐ दृष्टतत्त्वाय नमः
६०. ॐ तत्त्वदर्शकाय नमः
६१. ॐ कुशलाध्यापकाय नमः
६२. ॐ कुशलसंयोजकाय नमः
६३. ॐ सद्गुणालंकृताय नमः
६४. ॐ सद्गुणपरीक्षकाय नमः
६५. ॐ शुद्धाय नमः
६६. ॐ दिव्याय नमः
६७. ॐ भव्याय नमः
६८. ॐ यज्ञप्रियाय नमः
६९. ॐ पूर्वमीमांसारक्षकाय नमः
७०. ॐ उत्तरमीमांसासंवर्धकाय नमः
७१. ॐ सदाचारोद्बोधकाय नमः
७२. ॐ व्रात्यद्विजोद्धारकाय नमः
७३. ॐ गायत्रीविदे नमः
७४. ॐ ब्रह्मविद्यारसिकाय नमः
७५. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः
७६. ॐ गोभक्ताय नमः
७७. ॐ गोमातृकाय नमः
७८. ॐ आदर्शगोशालानिर्मात्रे नमः
७९. ॐ कैलाससेतुविधात्रे नमः
८०. ॐ अध्यापनपरंपरारक्षकाय नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८१. ॐ सर्वदर्शनाचार्याय नमः
८२. ॐ उपनिषदष्टादशाहप्रवर्तकाय नमः
८३. ॐ गीताष्टादशाहप्रवर्तकाय नमः
८४. ॐ ब्रह्मसूत्राष्टादशाहप्रवर्तकाय नमः
८५. ॐ नैयायिकवराय नमः
८६. ॐ कैलासाश्रमस्थविद्याप्रकरणकृते नमः
८७. ॐ ब्रह्मसूत्रवृत्तिकाराय नमः
८८. ॐ शाङ्कराद्वैतमतधुरंधराय नमः
८९. ॐ सटीक - प्राचीन - ग्रन्थ - प्रकाशकाय नमः
९०. ॐ कैलासाश्रमोद्धारकाय नमः
९१. ॐ कैलासशाखा - जीर्णोद्धारकाय नमः
९२. ॐ कैलासविद्यातीर्थ - संस्थापकाय नमः
९३. ॐ हरिहरस्वरूपप्रतिष्ठापकाय नमः
९४. ॐ अध्यात्म - ज्ञानगङ्गाप्रवाहकाय नमः
९५. ॐ राष्ट्रलब्ध - प्रतिष्ठाय नमः
९६. ॐ अपरराष्ट्रलब्धकीर्तये नमः
९७. ॐ संन्यासिसमाजलब्धादराय नमः
९८. ॐ भक्तगणबहुमताय नमः
९९. ॐ आदृतसतीगणाय नमः
१००. ॐ उल्लेखित - शंकरचरिताय नमः
१०१. ॐ शंकराचार्यशक - प्रवर्तकाय नमः
१०२. ॐ जनकल्याणरताय नमः
१०३. ॐ भक्तजनगणमन - अधिनायकाय नमः
१०४. ॐ भारतमातृधन्य - पुत्राय नमः
१०५. ॐ भारताग्रणी - वराय नमः
१०६. ॐ भारतहित - चिन्तकाय नमः
१०७. ॐ भारत - राष्ट्रगौरवाय नमः
१०८. ॐ हृषीकेशस्थतपस्विवराय नमः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

श्रीमद्विमलतमाद्वैततत्त्वकल्लोलकल्लोलिनी-
सुमधुरगम्भीर-स्वरनिनादिनी-शाङ्करसुर-
भारतीप्रवाहपरिरक्षणक्षणवैदुष्यादिसद्गुणगणालङ्कृत-त्रिजगज्जेगीयमान-
मानवातिशायि-सौमनस्यसमुपासकाद्वैतवीथीपथिकोपभुज्यमानानन्त-
श्रीकैलासाश्रमदशमपीठाधीश्वर-श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-
श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठमहामण्डलेश्वर-

स्वामिविद्यानन्दगिरि-
महाराजामृतमहोत्सवमुपलक्ष्य प्रशस्तिपत्रम्

ॐ

मातुश्छत्रं स्वमर्धं सुखमयसदनं लीलया यो विहाय,
विंशे वर्षे प्रविष्टो मुनिवरपदवीं विद्ययाकृष्टचेताः।
उत्तार्यैवं स्वकीयान्प्रवरकुलजनाँल्लोकमुन्नेतुकामः,
कैलासे राजतेऽयं यतिकुलतिलको ब्रह्मविद्यावरिष्ठः॥ १॥
सानन्दं सर्वलोकव्यवहृतिकुशलो निश्चलाध्यात्मयोगो,
भक्तान्भक्तिं च कर्म ह्यपरजनगणाञ्ज्ञानिनो बुद्धियोगम्।
छात्रान्स्वाध्यायरक्तान्परममुपदिशन्ब्रह्मणो यत्स्वरूपं,
स्वस्थः स्वात्मन्यवस्थः स्मितवदनलसन् स्वीकरोत्वस्मदर्घम्॥ २॥
गोशाला मातृशाला मतिरिति भवतो गोषु मातृत्वबुद्धेः
कर्मैवाराधनार्थं वरमिति कृतधीराश्रमाणां नियन्ता।
विद्या मोक्षस्य दात्री ह्यतुलसुखकरी स्थापयित्री महिम्नि
विद्यादानं प्रधानं हीति कृतसुमतिर्ब्रह्मपीठे विभाति॥ ३॥
आचार्यप्रवरश्रीशंकरगुरुर्विश्वस्य ख्यातो महान्,
ब्रह्मात्म्यैक्यनिदर्शनेन विरलं वेदामृतं प्रत्तवान्।
केनैतस्य भवेदृणापनयनं मत्वेति श्रीशंकरा-
चार्याणां स्मृतिदं विधाय सदनं दिल्लीपुरे शोभते॥ ४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरम्भो यस्य जातो नटपुरनगरे गुर्जरेष्वद्वितीयो,
दिव्यां भव्यां प्रवृद्धिं प्रतिदिनमगमद्दिक्षु सर्वासु वेगैः।
सद्भिर्भक्तैश्च शिष्यैः प्रमुदितमनसा पूर्णतां नीयमानो,
यो पीयूषोत्सवोऽयं प्रभवतु सुचिरं मङ्गलो मङ्गलानाम्॥५॥

अत्रभवदीयाः

वयं

सादराः सविनयाः सप्रणामाः विनम्राः
श्रीकैलास-ब्रह्मविद्यापीठान्तेवासिनः॥

मार्गशीर्षामावास्या-वि.सं. २०५३

दिनाङ्क - १०-१२-१९९६ ◆ शाङ्कराब्द - १२०९

सद्योदीक्षित यति स्वामी श्रीधरानन्द गिरि
महाराज श्री के चरणों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्वत्ता एवं व्यावहारिकता का अद्भुत समन्वय-कैलास के दशम पीठाधीश्वर

—बलदेवानन्द सागर

ऋषिकेशस्थ कैलास-आश्रम की महिमा भला शब्दों से कैसे बखानी जा सकती है? साक्षात् महादेव जहाँ निवास करते हैं और परम विरक्त-सन्तों की जो साधना-स्थली है-उसकी महिमा तो केवल अनुभव ही की जा सकती है।

ऐसे परम-पवित्र कैलास-आश्रम के वर्त्तमान पीठाधीश्वर परमपूज्य पद-वाक्य-प्रमांण-पारावारीण आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के जीवन के विषय में भी कुछ कहना या लिखना बहुत दुष्कर-कार्य है।

पूज्य महाराज जी के जीवन के अनेक उज्ज्वल पक्ष हैं जिनके विषय में जितना भी कहा जाय, कम है।

पूज्य महाराज जी के वयक्तित्व एवं कृतित्व पर अनुसनधान किया जाय तो अपनी ही तरह का एक शोध-प्रबन्ध तैयार हो जायेगा।

सन्तों का तो जीवन ही परोपकारक होता है किन्तु महाराज जी ने तो परोपकार को भी उपकृत किया है। संन्यासव्रत धारण करके आपने "लोकानुग्रहकांक्षा" को चरितार्थ किया है।

संन्यास स्वीकार करने के बाद एकान्त-वास करते हुए कई सन्त-साधक निवृत्ति-परायण होकर अपना प्रारब्ध-शेष करते हैं किन्तु इस प्रारब्ध-शेष की यात्रा को प्रवृत्तिपरक बनाकर पूज्य महाराज जी ने, न केवल संन्यासी-समुदाय को प्रेरणा प्रदान की है, अपितु पूरे मानव-समाज को इस देश की महान् आर्ष-परम्परा से भलीभाँति अवगत कराया है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे बचपन से ही पूज्य महाराज जी के स्नेहसान्निध्य का लाभ मिला है। आज करीब बीस-वर्षों के बाद जब मैं इन पंक्तियों को लिपिबद्ध कर रहा हूँ तो मुझे काशीका वह 'गीतामन्दिर' याद आ रहा है, जहाँ पर आप 'वेदान्तपरिभाषा' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन-मुद्रण के लिए पधारे थे। तब से लेकर आजतक सतत् कर्म को ही साधना बना कर लगातार 'चरैवेति चरैवेति' के महामन्त्र के अनुष्ठान में आप साधनारत हैं।

आपका जीवन विद्वत्ता एवं व्यावहारिकता का अद्भुत समन्वय है। एक ओर तो आप सतत ब्रह्म-विद्या के अध्ययन-अध्यापन-प्रकाशन एवं प्रचार-कार्यों में संलग्न हैं, तो दूसरी ओर आप सामाजिक-कार्यों और निर्माण-कार्यों में निर्लेप भाव से निमग्न है।

आज भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में, आपके दीक्षित एवं शिक्षित शिष्यों की और भक्तों की एक अलग पहचान है जिनके आप साक्षात् सम्बल हैं।

अब, जब हम सब श्रद्धावनत आपके अमृत-महोत्सव के आयोजन का सात्त्विक आनंद अनुभव कर रहे हैं तो सहज ही कल्पना हो आती है कि भगवान् भाष्यकार आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जी के जीवनकाल में भी उनके श्रद्धालु-अनुयायियों को उनकी शारीरिक-उपस्थिति से इतना ही आनन्द प्राप्त होता होगा।

आपने-अपने जीवन का पल-पल ऋषि-परम्परा और आचार्य परम्परा को समर्पित किया, तभी तो इतना सबकुछ संभव हो रहा है। सामान्य मानव भला, इतने पारमार्थिक-कार्य कहाँ कर पाता है?

'विश्वनाथ-संस्कृत-महाविद्यालय' के आचार्य-पद से आपने अपनी कर्म-भूमिका आरंभ की और आज कैलास-आश्रम के परमाचार्य-पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपके स्नेहिल-स्वभाव का सुस्मरण करते हुए पूज्य मोरारी बापू कहते हैं कि कैलास-पीठाधीश्वर परम कारुणिक हैं और सहज प्रेम करना उनका स्वभाव है।

पूरा भक्त-समाज एवं संन्यासी-समुदाय आपकी कर्त्तव्यनिष्ठा के सामने नतमस्तक है।

परमेश्वर अभिनव-चन्द्रेश्वर एवं महाप्रभु भगवत्पादेश्वर शिवजी महाराज जी से आपके स्वस्थ दीर्घायुष्यकी प्रार्थना करते हुए मैं अपनी श्रद्धा-भावाञ्जलि आपको सविनय अर्पित करता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Sahaj Samadhi

—Swami Shreedharnanda Giri

It was a tired night in Bombay. MAHARAJ SRI had been admitted in the Jaslok hospital for a major operation. Some of us were there inside the cabin to attend on him. As it was getting late, Maharaj Ji repeatedly asked all to retire for rest-so it was agreed that I will remain as the night attendant.

The doctor on night duty came and after examining Maharaj Sri - he administered some sedatives and told me that Maharaj will go to deep sleep for at least 3 hours and he went away after few minutes. Maharaj Sri went in to deep sleep. Everything was under very cold silence. From the windows, the starry night and the grim dark Arabian sea was visible, Amidst the chaotic stop - gap rustling of vehicles on the road the continuous rumbling of the sea was giving a serene back-ground music.

After one hour I heard a murmuring sound. It was Maharaj Sri him-self chanting Om! Om! Om! I was taken aback. Had he regained conciousness? It cannot be! I looked at him, there is no sign of waking. He is in deep sleep. Then again the chanting of Om, as if coming from a great distance with faint vibrations. After few minutes - it was a flow of Mantras - from Geeta.

I felt a tremour in my body - a squeeze in the heart. I touched the feet of Maharaj Sri and in no time I lost my outward consciousness - a vast unlimited sea

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

of bliss opened up - a rupture - a powerful flow of serene divine bliss covered up the whole existence. I got a clear glimpse of the meaning of my "Istha Mantra".

I Came back to my senses. Meanwhile half an hour had passed. I felt very calm and assured. I have secured a firm base in the path of truth.

I analysed the whole episode silently and traced out following few points for further Sadhana.

(i) When a Mantra is repeated regularly, and the Mantra begins to repeat itself with in, it shows that the Mantra has been taken up by the inner being "Antaryami Purusha" It is then more effective.

(ii) Whatever "Mantra" may be, if one concentrates whole heartedly - The Mantra will repeat itself. But chanting "Om" in deep sleep is not a mere repetition - it is the INNER BEING (Antaryami Purush) that calls. It is THAT which sings.

(iii) "Mantra" may come as a vison in meditation. One can witness the meaning of "Ista Mantra" with the grace of Gurudev - in silence.

Prior to this unique experience, I had tried lot even to the extent of violent desperation but within a few seconds, by the grace of Maharaj Sri everything became clear - a quest which had started 10 years back in the philosophy classes of Universities - came to a sure-success, ending with Peace and Benediction. Let no more the life divide, what the grace of Maharaj Sri has joined.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Eighteen day discourses of Maharaj Ji

—Priya Kant Ratti Lal Dave

I have had occasion and very good fortune to know Param Pujya Mahamandleshwar Swami Sri Vidyanand Giriji in the beginning of year 1974. He was kind enough to come to Bombay once a year. He started unique system of a explaining to us all the three most important works of our Rishis and scholars and under this scheme conducted for eighteen days discourse on Bharm - Sutra in Bombay at Sanyas Ashram in Ghatkopur in 1974. This was a unique achievement as all the sutras were fully explained and the important doubts that can arise in the mind of attentive listeners was raised and answered. This was his first Eighteen-day discourse on Brahmsutra. The first Eighteen-day discourse on Shrimad Bhagvadgita was in Gyana Sadhana Ashram in Muktanpur Bharuch. Prior to these our saints & scholars were giving intensive training extending over three to ten years, in the same subjects. What, in my opinion, is unique about the eighteen day discourse of Maharaj Ji is that the more one ruminates over the discourse and specific ideas & specific words used to explain the true and inner meaning of the verses (mantra and shloka) more light shines and verses as if on their own begin to teach the listener. Hundreds of peo-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ple in various parts of our country have benefitted from these discourses. I am sure even a negligible percentage of all the listeners could not have spent three to ten years in studying the Prasthan Trayee at Kailas Asham in Rishikesh, what to talk of hundreds who have listened to him. Param Pujya Maha Mandleshwar Vidyanand Giriji has a very special scholarly skill to explain our shastras in as much time as he chooses e.g. he can explain all the 12 upanishads in eighteen days i.e. 76 hours or he can take 30 hours to explain one or two mantras of Brihadaranyak Upnishad or thirty hours to complete one single chapter of Brihadaranyak. The discourse in all the three cases is to the point, nothing is missed and the elaboration does not have any digression from the main subject, there is no repetition and the listner will not be bored but his desire to know more would be greater than before. Being learned and being Brahmanishta has not prevented him from attending to the organization of Ashrams. The successful management of many Ashrams and Temples is a living proof. May the Almighty give him a long time and great strength to fulfill the mission that has been bestowed on him.

To my knowledge there is only one publication of his eighteen day discourses viz. Shrimad Bhagvadgita Ashtadashah in Shivanand Ashram in Rishikesh. This book is in my opinion a priceless exposition enabling the reader to read it again and again and to get to the depth of the subjects.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु बन्दना-अमृताञ्जलि

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं, गुरु शिव रूप महान।
इनते न्यारे ब्रह्म वही गावत श्रुति पुराण॥ १॥
नमन करूँ गुरु तत्त्व को यह विचारि मन माहिं।
जगत् जीव के भाव कभी बिनु गुरु कृपा न जाहिं॥ २॥
ध्यान मूल गुरु मूरति पूजनीय नित चरण।
मन्त्र रूप गुरु शब्द हैं मुक्ति कृपा अवतरण॥ ३॥
निज गुरु आनन्द बोधमय दया सिन्धु दशमेश।
सोहें पीठ कैलास पर मानो स्वयं महेश॥ ४॥
किये कर्म उद्भुत परम संवत द्विदश सात।
सप्तदशक और पाँच का वर्ष लगा शुभ गात॥ ५॥
भक्त शिष्य अरु संत सब अति आनन्द समेत।
अमर महोत्सव जगह-जगह रचें सुआशिश देत॥ ६॥
अमृताञ्जलि अर्पण करे 'स्वर्ण' सदैव विनीत।
सुमिरि शिवा शिव दण्डवत कर गुरु पाय पुणीत॥ ७॥

बालक मयंक चानना महाराज श्री की पूजा करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी दृष्टि में महाराज श्री

अपने सद्गुरुदेव वर्तमान दशम कैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर महाराज श्री की महिमा के बारे में मैंने इससे पूर्व भी लिखने का प्रयास किया है। परन्तु सदा वाणी की सामर्थ्य से महिमा को परे पाया है।

भरत महा महिमा जल राशी।
मुनि मति ठाड़ि तीर अबला सी॥

फिर भी महाराज श्री के वर्णन में विशेष आनन्द की अनुभूति होती है और मन पुनः पुनः कुछ लिखने को करता है। यह हम तुच्छ प्राणियों का अनुभव हो ऐसी बात नहीं प्रत्युत बड़े बड़े ऋषि मुनियों का भी ऐसा ही अनुभव है। श्री पुष्पदन्ताचार्य ने इस का सही समाधान देते हुये कहा है कि हमारी प्रार्थना का प्रयोजन परमेश्वर को बहलाना नहीं है किन्तु अपनी अपवित्र वाणी को पवित्र बनाना मात्र प्रयोजन है। महाराज श्री के इस वर्ष दिल्ली चतुर्मास्य में अमृताञ्जलि छपवाने की चर्चा जब उनके सामने आई तो उन्होंने कहा कि हाँ आप बढ़ा चढ़ा कर हमारे बारे में न लिखें प्रत्युत हम जो आप की दृष्टि में हैं उसी को लिखें। हम ने बाद में सोचा कि जो आप हैं उसके बारे में ही लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। अतः बढ़ा चढ़ा कर लिखने की तो बात ही नहीं है।

महाराज श्री के दर्शन पहली बार मुझे लगभग ३७ वर्ष पूर्व १९५९ ई. में संन्यास आश्रम, बेला रोड, दिल्ली में हुये। तब मैं दिल्ली इञ्जीनियरिंग कालेज कश्मीरी गेट में लेकचरार के पद पर काम करता था। उसी कोलेज में १९५३ से १९५७ तक पढ़ा था और यह चार वर्ष कश्मीरी गेट छात्रावास में रहा था। १९५६ में एक दिन बेला रोड के आस पास भ्रमण करते एक पंडित जी मिले। उन्हों ने श्री विश्वनाथ संन्यास आश्रम बेला रोड की ओर संकेत करते हुये कहा कि आप इस मन्दिर में दर्शन करने और महात्माओं के प्रवचन सुनने आया करो। दूसरे दिन मैं प्रातः वहाँ पहुँचा तो मन्दिर के दर्शन कर मन अति प्रसन्न हुआ। दैनिक प्रवचन एक अच्छे महात्मा करते थे। भगवत्कृपा से वहाँ के सत्संग में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं नित्य जाने लगा। कुछ समय पश्चात् संस्थापक महाराज श्री स्वनाम धन्य परम पूज्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषित स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज वहाँ पधारे। उनके दर्शनों से बड़ी तृप्ति का अनुभव हुआ। इस सत्संग का सिलसिला लगभग एक वर्ष चला। इधर मेरी पढ़ाई पूरी हो गई और नौकरी के लिये मुझे नंगल भाखड़ा डैम पर जाना पड़ा। संन्यास आश्रम के सत्संग को मैं बार-बार स्मरण करता और भगवान् से प्रार्थना करता कि पुनः दिल्ली में मैं चला जाऊँ। भगवान् की असीमानुकम्पा से कश्मीरी गेट दिल्ली इन्जीनियरिङ्ग कालेज में ही मुझे प्राध्यापक की नौकरी मिल गई जिससे एक वर्ष नंगल रह कर मैं पुनः दिल्ली आ गया और संन्यास आश्रम सत्संग में जाने लगा। यह बात नवम्बर १९५८ की है। कुछ समय बाद वहाँ नये मण्डलेश्वर परम पूज्य अनन्त श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज भी पधारे। उनके दर्शनों से भी मन बहुत प्रसन्न हुआ। संन्यास आश्रम के दो विशिष्ट सन्त स्वामी दयानन्द जी महाराज और स्वामी परमानद जी महाराज का स्नेह भी हमें प्राप्त हुआ। इस प्रकार एक वर्ष और व्यतीत हो गया।

सन् १९५९ में वासन्ती (चैत्र) नवरात्र के पश्चात् संन्यास आश्रम का वार्षिक महोत्सव प्रारम्भ हुआ। उसमें कई सन्त पधारे। उसी सन्त माला में मणि के समान महाराज श्री भी वाराणसी से पधारे। सन्त सम्मेलन की सभा संचालन का भार आपने संभाला। उस दिन मैं जब सत्संग के लिए संन्यास आश्रम में पहुँचा तो सभा मंच से महाराज श्री के अतिमधुर शब्द मेरे कानों में पड़े। मन में बड़ी उत्कण्ठा हुई कि यह अति मधुर भाषी सन्त कौन हैं। तभी सन्मुख हो प्रथम दर्शन मुझे महाराज श्री के हुये। मन उनके शब्दों को सुनने को लालायत हो गया। महाराज श्री ने सभा का संचालन ३/४ दिन किया और उन के प्रवचनों को सुन कर बहुत प्रसन्नता हुई। संन्यास आश्रम का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ तो पता चला कि महाराज श्री संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पद को सुशोभित करने के लिये वाराणसी दक्षिणामूर्ति मठ से पधारे हैं। अब तो प्रतिदिन उन के दर्शन होने लगे। उक्त महोत्सव के अनन्तर संन्यास आश्रम के दैनिक प्रवचन स्त्राध्याय का दायित्व भी महाराज श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को सौंपा गया। उन दिनों दिल्ली संन्यास आश्रम के श्रोता बड़े प्रौढ़ माने जाते थे। अत: यहाँ विद्वान् प्रवक्ता ही उनको संतुष्ट कर पाते थे। महाराज श्री की विद्वत्ता और कुशल वक्तृत्व की धाक कुछ ही दिनों में श्रोताओं के हृदय पर जम गई। महाराज श्री अपने प्रवचनों में द्विजोचित संस्कारों पर बहुत बल देते। श्रीरामचरितमानस के प्रचुर उदाहरण भी महाराज श्री की विशेषता थी। जब मानस के प्रसंगों को सस्वर सुनाते तो यह स्पष्ट लगता था कि आपको मानस कण्ठ है।

आप ने जिस दिन से विद्यालय का प्रधानाचार्यत्व संभाला उसी दिन से विद्यालय रूपी शिशु ने मानो चलना प्रारम्भ किया और कुछ ही समय में यह उन्नति पथ पर दौड़ने लगा। परमपूज्य बड़े महाराज जी (संन्यास आश्रम वाले) जिस उद्देश्य से आपको वाराण्सी से दिल्ली लाये थे वह स्वप्न विद्यालय की उन्नति होते देख साकार होता जान उन्हें परम संतोष का अनुभव हुआ।

महाराज श्री के बारे में एक और धारणा भक्तों की शीघ्र ही बन गई कि यह महापुरुष कभी थकते नहीं। दैनिक प्रवचन के बाद भी महाराज श्री जिज्ञासुओं की अलग क्लास लेते जिसमें गीतादि शास्त्रों का स्वाध्याय करवाते। महाराज श्री ने आश्रम में आने वाले भक्तों को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी और उनके लिये विद्यालय के समय से पूर्व और नित्य कथा के पश्चात् संस्कृत पढ़ाने की पेशकश की जिससे ३-४ विद्यार्थी संस्कृत पढ़ने के लिये तैयार हो गये जिन में एक मैं भी था। महाराज श्री ने लघुसिद्धान्त कौमुदी का पाठ प्रारम्भ करवाया और बड़े ही रोचक ढंग से संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा दी।

मेरा महाराज श्री के चरणों में बैठकर पाठ पढ़ना एवं उनके उपदेशामृत सुनना उत्तरोत्तर बढ़ता गया। कभी सायंकाल उनके साथ घूमने के लिये भी चले जाते। मेरा सत्संग को छोड़कर अभी तक कोई अन्य भजन उपासना का क्रम नहीं बना था। एक महात्मा ने गायत्री मन्त्र जपने के लिये उपदेश किया था जिसका कुछ समय तक मैंने पालन किया। परन्तु महाराज श्री के मुखारविन्द से जब मैंने यज्ञोपवीत संस्कार की बात सुनी और यह जाना कि इसके बिना सब पूजा पाठ और विशेषकर गायत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जप संध्योपासन का अधिकार ही नहीं है तो मैंने गायत्री जप छोड़ दिया क्योंकि मैंने जनेऊ धारण नहीं किया था। इस बात का निवेदन मैंने एक दिन महाराज जी के साथ भ्रमण करते हुये प्रसंग वश किया। महाराज श्री ने मेरे विचार का अनुमोदन किया। एक बार महाराज श्री ने कहा कि गृहस्थी स्वीकार करके मनुष्य धार्मिक तो बन सकता है परन्तु आध्यात्मिक जीवन बनाना कठिन हो जाता है। अतः हम अपने किसी मित्र को गृहस्थ बनने की सलाह नहीं देते। तात्कालिक बढ़े हुए मनोबल से इस पर मैंने कह दिया कि गृहस्थी का बन्धन तो किसी शत्रु को भी न हो जिसे सुन कर महाराज श्री हंस दिये मानो उन्हें मेरी आन्तरिक मनः स्थिति का पता था कि जब लड्डू सामने आयेंगे तो खाये बिना इस से रहा नहीं जायेगा।

इधर मेरे माता-पिता मेरे लिये योग्य कन्या की तलाश में थे। किन्तु मैंने पिताजी को पत्र द्वारा स्पष्ट कर दिया कि मैं गृहस्थ के झंझट में नहीं पड़ना चाहता जिससे वे बहुत चिन्तित हुये और तुरत मेरी माता जी को मेरे पास समझाने के लिये भेजा। उन्होंने रो धो कर ममता भरे शब्दों में मुझे समझाया। फिर संन्यास आश्रम में जाकर महाराज श्री और दूसरे सन्तों से भी मिले। महाराज श्री ने उन से कहा कि आप जल्दी न करें। समय आने पर सब ठीक हो जायेगा। वैसे विवाह के बाद पुत्र-पुत्रवधु आपके अनुकूल ही रहेंगे इस बात का क्या भरोसा है। परन्तु माता जी हर हालत में मेरा विवाह अवश्य करना चाहती थी। तब सन्तों ने मुझे समझाया और मैं राजी हो गया। गीता जयन्ती वाले दिन १९५९ ई. को मेरी सगई हो गई और एक व्रर्ष पश्चात् विवाह।

इस बीच में महाराज श्री ने कहा कि आप का यज्ञोपवीत होना चाहिये। विद्यालय के ग्रीष्मावकाश (१९६०) में महाराज श्री का ऋषिकेश में काली कमली वालों के यहां कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ था। महाराज श्री ने संकेत किया कि यदि आप ऋषिकेश आ सकें तो तब गंगा किनारे आप को यज्ञोपवीत पहनाएंगें। महाराज श्री कार्यक्रमानुसार ऋषिकेश काली कामली क्षेत्र पधारे और वहाँ सत्संग का उनका कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। मुझे महाराज श्री द्वारा दिये गये संकेत का स्मरण था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतः मैं भी वहाँ पहुँच गया और महाराज श्री के दर्शन करके, उनसे यज्ञोपवीत संस्कार के लिये प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि कल गंगा दसहरा भी है, इस पर्व पर गंगा तट पर आपको यज्ञोपवीत देंगे। तदनुसार दूसरे दिन गंगा किनारे त्रिवेणी घाट पर महाराज श्री ने पूजा आदि करवा कर अपने कर कमलों से मुझे यज्ञोपवीत दिया और गायत्री मन्त्र एवं इष्टमन्त्र की दीक्षा भी दी। और कुछ भजन का नियम भी बताया। मैं वहाँ से निर्जला एकादशी वाले दिन हरिद्वार आ गया और एक रात्रि हरिद्वार रहकर दिल्ली वापस आगया। मन में बड़ी प्रसन्नता थी कि हमें सद्गुरुदेव की प्राप्ति इतनी सरलता से हो गई।

महाराज श्री ऋषिकेश का कार्यक्रम सम्पन्न करके दिल्ली लौट आये और पुनः विद्यालय के कार्य को पूर्ववत् करने लगे। मेरा सत्संग का नियम भी भगवत्कृपा से बना रहा। अब महाराज श्री के सत्संग में विशष आनन्द आने लगा और अपनेपन की भावना उनके दर्शनों में होने लगी। संस्कृत व्याकरण की पढ़ाई भी उनसे पढ़ता रहा। इस प्रकार एक वर्ष और बीत गया। मैं गृहस्ती के बन्धन में तो आ ही चुका था। इससे पूर्व कि मैं गृहस्थाश्रम की व्यस्तता के कारण सत्संग से दूर होता, परमेश्वर ने ही कृपा करके मेरा तबादला करनाल कर दिया। वहाँ मैं छः वर्ष तक रहा। दूर रहने पर सत्संग का मूल्य एवं महाराज श्री और सन्तों के स्नेह की पुनः पुनः याद आने लगी। मन यही करता था कि शीघ्रातिशीघ्र फिर महाराज श्री के नित्य सत्संग में जाने का अवसर प्राप्त हो। कई बार अधीर हो महाराज श्री से प्रार्थना भी करता। महाराज श्री धैर्य बन्धाते हुये सभी काम परमेश्वर इच्छा के अनुसार करने का उपदेश करते और उपयुक्त समय की प्रतीक्षा के लिये आदेश देते।

महाराज श्री को यदा कदा अपनी समस्याओं की सूचना दे कर उनसे समाधान प्राप्त करता। महाराज श्री अपने स्वभाव के अनुरूप प्रत्येक पत्र का उत्तर बड़े स्नेह भरे शब्दों में देते और अपने उपदेश एवं आशीर्वाद से समस्त कष्टों को दूर कर देते। महाराज श्री के सभी पत्रों को सुरक्षित रखा हुआ है। कभी अवसर मिला तो उनको प्रकाश में लाऊँगा। अमृताञ्जलि में उन पत्रों में से दो चार का उल्लेख नमूने के तौर पर अवश्य आगे चल कर करूँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करनाल वास के छः वर्षों में कई बार दिल्ली जा कर महाराज श्री के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। जहाँ तक संभव हुआ अपने परिवार जनों को भी उनके दर्शनों एवं उपदेशों का लाभ प्राप्त कराने की चेष्टा करता रहा। दिल्ली नौकरी मिल जाने की बराबर कोशिश करता रहा। परमात्मा की कृपा से और महाराज श्री के आशीर्वाद से भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय में डेरी इञ्जीनियर के उन्नत पद पर १९६७ में मेरी नियुक्ति हो गई और पुनः सत्संग का सिलसला शुरु हो गया। इस नियुक्ति पर महाराज श्री ने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की।

महाराज श्री ने संन्यास आश्रम में गुरुजनों, सन्तों, भक्तों,, विद्यार्थियों को अपने कुछ वर्षों के निवास और निःस्वार्थ कार्यों से सर्वथा सतुंष्ट कर दिया था। संन्यास आश्रम में ऐसी हवा बनी कि महाराज श्री यहाँ के मण्डलेश्वर बनेंगे। बात में कुछ सच्चाई थी ऐसा संकेत तो हमें स्वयं महाराज श्री की बातों से भी मिला किन्तु महाराज श्री ने अत्यन्त संकोची स्वभाव होने से स्पष्टतया इस का जिकर कभी नहीं किया। इस पद पर बिठाने के लिये आचार्य पाद अनन्त श्री स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज एवं महामण्डलेश्वर अनन्त श्री सवामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने मिलकर आप से अनुरोध किया। आपने गुरुजनों से पुनः पुनः यही निवेदन किया कि क्या आप हमें इस पद के योग्य समझते हैं। उन्होंने कहा कि निःसंदेह आप इस के सर्वथा योग्य हैं। आपको एतदर्थ संन्यास दीक्षा देने का प्रबन्ध भी हो गया। उन दिनों संन्यास आश्रम में धर्माचार्य स्वामी राघवानन्द जी महाराज दैनिक कथा स्वाध्याय चला रहे थे। १६-१-६८ (माघ कृ. द्वितीय वि.सं. २०२४) को अपने प्रवचन में उन्होंने कहा कि आज बड़ा शुभदिन है। आज आपके प्रधानाचार्य जी का संन्यास संस्कार हुआ है। कथा के पश्चात् आप सभी उनका दर्शन करो। उस दिन गुरुदेव के दर्शन कर विशेष आनन्द एवं गौरव का अनुभव हुआ। महाराज श्री कथा के समय के बाद अपने कमरे में किसी न किसी पाठ को चलाते ही थे। उसमें आश्रम के कुछ संत भी आते थे। उस रोज स्वामी अनन्तानन्द जी महाराज (मुख्य पुजारी) ने कहा कि आज तो आप पाठ नहीं चलायेंगे। इस पर महाराज श्री ने उत्तर दिया कि आज ही तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमें स्वाध्याय कराने का असली अधिकार प्राप्त हुआ है। अतः आज पाठ अवश्य होगा। महाराज श्री को कर्तव्य कर्म में कभी आलस्य हुआ हम ने नहीं देखा।

१९६९ के विद्यालीय ग्रीष्मावकाश में स्वामी प्रेम पुरी सत्संग मण्डल बम्बई में महामण्डलेश्वर त्यागमूर्ति स्वामी गणेशानन्द पुरी जी महाराज के आमन्त्रण पर आप सत्संग के लिये जा रहे थे। हम लोग नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आपको छोड़ने आये। कुछ दिनों बाद महाराज श्री का बम्बाई से पत्र मिला कि हम किसी विशेष कार्य को लेकर दिल्ली होते हुये ऋषिकेश जा रहे हैं। हम पुनः महाराज श्री के दर्शनों को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। महाराज श्री संन्यास आश्रम के परम पूज्य बड़े महाराज जी स्वामी नृसिंहगिरिजी महाराज के दर्शनों के लिये उत्सुक थे। हमारी महाराज श्री से यह पूछने की हिम्मत नहीं हुई कि वह विशेष कार्य क्या है जिस के लिये आप बम्बई का कार्यक्रम बीच में ही छोड़कर ऋषिकेश जा रहे हैं। महाराज श्री ने अपने संकोची स्वभाव के कारण भी कुछ नहीं बताया। महाराज श्री एक दो दिन संन्यास आश्रम रह कर पूज्य बड़े महाराज श्री के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त कर ऋषिकेश पहुँच गये। वहाँ से कुछ दिन बाद आप का पत्र मिला तो प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा कि आप ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम के पीठाधीश्वर बनने जा रहे हैं। इससे पूर्व हमने कैलास आश्रम का नाम नहीं सुना था। महाराज श्री के पट्टाभिषेक के रोज प्रातः काल कैलास आश्रम प्रथम बार मैं पहुँचा और महाराज श्री के पट्टाभिषेक के भव्य कार्यक्रम को देखा एवं वहाँ के महापुरुषों के दर्शन किये। अतएव कैलास आश्रम के साथ हमारा सम्बन्ध महाराज श्री के वहाँ पीठाधीश्वर पद पर विराजने के दिन से ही जुड़ा।

वास्तव में मेरी दृष्टि में महाराज श्री ही सब कुछ हैं। '**अवध तहाँ जहँ राम निवासु। तहँइ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥ पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिअहिं राम के नातें॥**' वाली निष्ठा ही मेरे मन को अच्छी लगती है। कहावत है कि पानी पीजे छान कर और गुरु कीजे जानकर। यद्यपि सच्चे गुरु की प्राप्ति परमात्मा के अनुग्रह से होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर भी उपर्युक्त निष्ठा तो गुरु की परख के बाद ही होती है। हमारा परम सौभाग्य है कि हमें महाराज श्री जैसे आदर्श महापुरुष गुरु रूप में प्राप्त हुये। महाराज श्री माधुर्य मूर्ति हैं। उनको किसी भी छोर से निहारो वह पूर्ण दिखाई पड़ते हैं। उनके गुणों के बारे में लिखने की हम में सामर्थ्य नहीं। केवल वाणी की पवित्रता के लिये भक्तों द्वारा सौंपे गये कर्तव्य का पालन करना है। हमें और हमारे जैसे असंख्य शिष्यों एवं साधकों को उनका जो स्वरूप जहाँ तक आत्मसात हुआ है उसका संकलन इन शब्दों में यत्किंचित् किया जा सकता है कि **महाराज श्री एक पूर्ण गुरु, आदर्श पीठाधीश्वर, असाधारण विद्वान्, अतिविनय शील, महान् कर्मयोगी, अनुपम लेखक एवं प्रवक्ता, अद्‌भुत् क्षमता सम्पन्न संत, आदर्श गुरुभक्त, गोभक्त एवं राष्ट्रभक्त, त्याग तपोमूर्ति, सकल श्रुति स्मृति मर्मज्ञ, दिव्य शास्त्र रचयिता, तत्त्वनिष्ठ ज्ञानी भक्त युग पुरुष हैं। अमृताञ्जलि में ऐसे ही शीर्षकों को ले कर महाराज श्री के गुणों का चिन्तन आगे के लेखों में किया है। इसके अतिरिक्त भक्तों के अनुभवों का और महाराज श्री के कुछ पत्रों का भी यथाशक्ति उल्लेख किया है।** पाठक गण उनको भक्ति भाव से पढ़ेंगे तो भाषा की मेरी त्रुटियों को क्षमा करना उनके लिये सरल हो जायगा।

श्रीनिरञ्जनपीठाधीश्वर अनन्तश्री
स्वामी नृसिंहगिरि जी महाराज और महाराज श्री (१९६५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदर्श आचार्य निष्ठा

सदाशिवसमारम्भां शंकराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

मेरी दृष्टि में महाराज श्री के अनन्त सद्गुणो में से सर्वप्रथम उनकी आदर्श आचार्य निष्ठा का उल्लेख करना उचित होगा। यदि हम उनके कार्य कलापों का विहंग दृष्ट्या अवलोकन करें तो हमें यह स्पष्ट दीखेगा कि उनकी बहुधा प्रवृत्ति इसी निष्ठा के साथ जुड़ी हुई है। उन्होंने कैलास आश्रम के भवनों का नाम पूर्वाचार्यों के नाम पर रखकर उनका पुण्यस्मरण सुलभ सबके लिए कर दिया है। कैलास आश्रम शताब्दी कीर्ति स्तम्भ पर सभी पूर्वाचार्यों के नाम बड़े सम्मान पूर्वक अङ्कित किये हैं। आश्रम में आद्य माहराज श्री की, षष्ठपीठाधीश्वर पूज्य बड़े महाराज जी की, पूज्य शास्त्री जी महाराज की, पूज्य छोटे महाराज जी की सुन्दर प्रतिमाएें जयपुर से बनवाकर समुचित स्थानों पर स्थापित की हैं। पंचमपीठाचार्य की पुण्य स्मृति में स्वामी प्रेमपुरी गोसदन की संस्थापना भी उसी आचार्य निष्ठा का प्रतीक है। कैलास आश्रम शताब्दी कैलन्डर में सभी आचार्यों के दर्शन सुलभ करा कर भी बड़ा उपकार आप ने किया। आप समस्त महान् कार्यों के अपने द्वारा सम्पादन का श्रेय आचार्यों की प्रेरणा, शक्ति एवं कृपा को पुनः पुनः देते रहते हैं। आप आचार्यों को स्मरण एवं सम्मानित करने के नये-नये प्रसंग ढूंढते रहते हैं। इस प्रकार आप द्वारा कई ऐसे महोत्सवों का सम्पादन हुआ जिसकी किसी को कल्पना भी नहीं हो सकती है। आचार्यों का जन्म एवं निर्वाण महोत्सव, आप बड़े उत्साह एवं उल्लास से मनाते हैं और भक्तों को इसमें श्रद्धा भक्ति पूर्वक सक्रिय भाग लेने के लिये सदा प्रेरित करते रहते हैं।

आपने एक स्थान पर लिखा है कि गुरु के बिना न लौकिक ज्ञान और न पारलौकिक ज्ञान ही हो सकता है। जीव की सद्गति गुरु के बिना संभव ही नहीं है। साधारण पुरुषों की तो बात कौन कहे कृत-कृत्य जीवन मुक्त पुरुषों के लिये भी कहा गया है कि

यावज्जीवं त्रयो वन्द्याः वेदान्तो गुरुरीश्वरः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यानी जीवन पर्यन्त आत्मनिष्ठ महापुरुष के लिये भी तीन सदा पूजनीय हैं; एक वेद, दूसरे गुरु और तीसरे ईश्वर। महाराज श्री इस सूक्ति का अक्षरश: पालन करते हैं और आचार्यों के प्रति सदा कृतज्ञ रहते हैं। महाराज श्री के अनुसार कितने भी सद्गुण मनुष्य में क्यों न हों यदि उसके मन में गुरु पद कमलों में निष्ठा नहीं है तो सब व्यर्थ है जैसा कि गुर्वष्टकम् स्तोत्र में कहा है।

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

महाराज जी की आचार्य निष्ठा के कई ऐसे प्रसंग हैं जिनको पढ़ कर भक्त रोमाञ्चित हो जाता है।

महाराज श्री कैलासपीठाधीश्वर बनने के पश्चात् भी अपने गुरुदेव स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी महाराज परमहंस जी का नित्य स्मरण रख उनकी कुशल क्षेम एवं किसी प्रकार की सेवा के विषय में उन से पूछते रहते थे। मुझे इस बात का अनुभव तब हुआ जब एक बार उनकी ऐसी ही एक सेवा के बारे में महाराज श्री ने मुझे पत्र लिखा कि गुरुदेव के लिये जेब घड़ी लेकर उन्हें भेजनी है क्योंकि उन की पहली घड़ी पुरानी हो गई है और उन्हें प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठने के लिये समय जानने में कठिनाई होती है। उनकी इस आवश्यकता को पूरा करके महाराज श्री ने परम संतोष का अनुभव किया। उनको अस्वस्थ दशा में आग्रह पूर्वक कैलास आश्रम में रख कर उनकी सेवा का समुचित प्रबन्ध करना महाराज श्री की तीव्र आचार्य निष्ठा का उदाहरण है। उन की इसी निष्ठा के फलस्वरूप ईश्वरीय प्रेरणा से अमरनाथ की १९८२ की प्रस्तावित यात्रा स्थगित हुई और महाराज श्री अपने गुरुदेव की ब्रह्मलीनता पर उनके अन्तिम दर्शनों एवं जलसमाधि के लिये दिल्ली से समय पर ऋषिकेश पहुँच गये।

कैलासपीठ के षष्ठ यशस्वी आचार्य परम पूज्य स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज की जन्म शताब्दी राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यन्त (१९८५-८६) में मनाने का आपने निश्चय लिया। संयोग से आप के परम गुरुदेव योगिराज स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज के जन्म के सौ वर्ष भी इसी अवधि में पूरे हो रहे थे। उनके कुछ भक्तों को महाराज श्री ने कहा कि आप लोग उनकी जन्म शताब्दी मना कर अक्षय पुण्य का लाभ क्यों नहीं लेते। उसी समय महाराज श्री के मन में यह भाव भी उदय हुआ कि श्री योगिराज जी के भक्त उनकी जन्म शताब्दी मनाएँ या नहीं हम तो कैलास आश्रम के षष्ठ पीठाचार्य महामण्डलेश्वर विद्यावाचस्पति स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरिजी महाराज की जन्म शताब्दी के साथ-साथ अपने परम गुरुदेव योगिराज श्री स्वामी नित्यानन्द गिरि जी महाराज की जन्म शताब्दी मनाएँगे ही। एक ही मंच से दो दिव्यविभूतियों की जन्मशताब्दी का उद्घोष सुन सभी सन्त और भक्त उसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न हुये जैसे एक ही मण्डप में भगवान् श्री राम सहित चारों भाईयों के विवाह की बात से अयोध्या एवं जनक पुर् वासी अति आनन्दित हुये थे।

अपनी माता जी की और्ध्वदेहिक क्रियाओं को सम्पन्न कर जब महाराज श्री दिल्ली पहुँचे तो निरञ्जनपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज के चरणों में संन्यास दीक्षा केलिए नम्र निवेदन किया, साथ ही यह भी कहा कि इसके आगे विद्यालय का संचालन आदि कार्य हम से नहीं होगा क्योंकि संन्यास ग्रहण के बाद हम अहोरात्र वेदान्त चिन्तन करना चाहते हैं। आचार्य पाद ने कहा कि ऐसी स्थिति में अभी आप को संन्यास दीक्षा नहीं दी जायगी, क्योंकि आपके अभाव में विद्यालय का सफल संचालन होना सम्भव नहीं। उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर आप पूर्ववत् प्रधानाचार्य के अपने कर्तव्य को निभाते रहे। बीच बीच में आप आचार्यपाद से संन्यास देने की प्रार्थना करते रहे और पूर्ववत् रीति से वे इस का निषेध करते रहे। आप की आचार्य निष्ठा देख मन ही मन आचार्य पाद अत्यन्त सन्तुष्ट हुये और कुछ वर्ष बाद आप को स्वयं ही संन्यास दीक्षा दे कर मण्डलेश्वर की गद्दी देने तक को तैयार हो गये।

आपकी आचार्य निष्ठा की पराकाष्ठा का अनुभव हमें तब हुआ जब निरञ्जनपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महेशानन्द गिरि जी महाराज आप के पट्टाभिषेक के समय आपके बार बार अनुरोध करने पर भी जब वे वहाँ पधार न सके तो आप ने उनको कैलासाश्रम के वार्षिकोत्सव (१९७० ई.) में वहाँ आग्रहपूर्वक बुलाकर और उनका विधिवत् सम्मान करके ही परम संतोष का अनुभव किया। पुनः कैलास आश्रम शताब्दी समारोह के उद्घाटन के लिए उनको आमन्त्रित किया और उनके कर कमलों से शताब्दी समारोह और कीर्ति सतम्भ का उद्घाटन कराया एवं बृहदारण्यकोपनिषद् का विमोचन भी उन्हीं से करवाया। इस के बाद भी आप बराबर उनको सम्मानित करने के अवसर ढूढते रहे। १९९३ में आपने अपनी संन्यास रजत जयन्ती मनाने की घोषणा की जिस के अनुसार आपने विश्वनाथ संन्यास आश्रम दिल्ली में आचार्य पाद की इस पावन प्रसंग पर अर्चना करने का एक दिव्य महोत्सव रच कर बड़े भक्तिभाव से अपने संन्यास दीक्षा देने वाले गुरुदेव के चरण कमल, विशिष्ठ सन्तों और भक्तों की उपस्थिति में धोये और चन्दन पुष्प दीपादि सामग्री से उनकी पूजा की। इस पावन दृश्य को देखकर सभा में सभी उपस्थित महानुभाव रोमाञ्चित हुये और इस प्रसंग को अनुपम गुरुनिष्ठा का आदर्श माना। भगवान् आदि शंकराचार्य की द्वादश शताब्दाब्दी राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष पर्यन्त (१९८७-८८) में मना कर और दिल्ली में उनका दिव्य स्मारक (कैलास विद्यातीर्थ) बनवा कर अपनी अपूर्व आचार्य निष्ठा का शानदार परिचय समस्त राष्ट्र को दिया। स्मारक के उद्घाटन के लिये भी निरञ्जनपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज को ही आप ने आमन्त्रित किया परन्तु वे उद्घाटन के दिन आ नहीं सकते थे अतः दो दिन पूर्व वहाँ पधारे और संत सम्मेलन का उद्घाटन करके इस समारोह को सुशोभित किया।

ऐसे अनेकों प्रसंग हैं जिनसे महाराज श्री की आचार्य निष्ठा की अमिट छाप उनके समस्त कार्यों में स्पष्ट भासती है जो उनके युगपुरुष होने की ओर संकेत करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्याविग्रह-महाराज श्री

जब कोई साधक यति धर्म में निष्ठ होने के लिए सभी सांसारिक संबन्धों को तोड़कर आचार्य से दीक्षा लेता है तो आचार्य द्वारा उसे एक नये नाम से युक्त करने की परम्परा है। परमात्मा की असीमानुकम्पा से जब आचार्य कोई तत्त्वज्ञानी महापुरुष होते हैं तो शिष्य को उनके द्वारा जो नया नाम प्राप्त होता है वह सुन्दर होने के साथ-साथ गम्भीर अर्थ सम्पन्न भी होता है। उस नाम में शिष्य की आन्तरिक रुचि, क्षमता एवं गुरु का आशीर्वाद झलकता है और तभी यथा नाम तथा गुण वाली कहावत उसके जीवन में घटित होती है।

महाराज श्री के विषय में ठीक ऐसा ही हुआ लगता है। जिन महापुरुष को महाराज श्री ने गुरु रूप में पाया वे परम विरक्त निःस्पृह, नित्य निरन्तर तत्त्वचिन्तन में संलग्न, समस्त सद्‌गुण सदाचार सम्पन्न, निर्दोष, निष्कलङ्क, महान् विभूति स्वामी विज्ञानानन्द गिरि परमहंस जी महाराज थे। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा महाराज श्री ने उन से ली। उन्होंने महाराज श्री के श्रीचन्दन शर्मा नाम को बदल कर ब्रह्मचारी विद्यानन्द नाम दिया जो आप की भावी सारस्वत साधना के लिये गुरुदेव का आशीर्वाद आप को प्राप्त हुआ। इसके फलस्वरूप आप विद्या के उस ऊँचे शिखर तक पहुँच गये जहाँ कुछ गिने चुने विद्वान् ही जा पाये हैं।

श्री रामचरितमानस और कुछ हिन्दी ग्रन्थों का अभ्यास तो आप ने घर में रहते ही कर लिया था। पहले पहल जब परमहंस जी महाराज के दर्शनों को गये तो आप की आयु केवल १५-१६ वर्ष की थी। गुरु जी ने आप से गम्भीर प्रश्न द्वारा कबीर साहिब की एक साखी का अर्थ पूछा। आप ने उनको तत्काल यथोचित उत्तर देकर परम संतुष्ट किया। गुरुदेव उसी समय समझ गये कि यह लड़का बड़ा होकर महान् विद्वान् बनेगा।

२० वर्ष की आयु में आपने गृह बन्धन तोड़कर गुरुदेव से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली। उसके साथ ही सारस्वत साधना आप का मुख्य उद्देश्य बन गई। श्रीमद्‌भगवद्गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, भागवत आदि ग्रन्थों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अध्ययन आप बड़ी उत्सुकता से करने लगे। गुरु जी की आज्ञानुसार पाणिनीय अंष्टाध्यायी के अध्ययन का आप ने निश्चय किया। संयोग से संस्कृत के एक असाधारण विद्वान् श्री ब्रह्मानन्द जी अवधूत आप को मिल गये। उनसे एक वर्ष में आपने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की आवृत्ति करली और दूसरे वर्ष पातञ्जल भाष्य सहित एक और आवृत्ति पूर्ण की। आपने अष्टाध्यायी के समस्त ३९५५ सूत्रों को कण्ठ कर, चलते फिरते उस की आवृत्ति आप कर लिया करते थे। अध्ययन में आप इतना डूब गये कि आप को रात दिन की भी सुधि नहीं रहती थी। आप पूज्य ब्रह्मानन्द जी से अन्य शास्त्रों का भी अध्ययन करना चाहते थे परन्तु वे अपनी अवधूत वृत्ति के कारण एक स्थान पर अधिक दिन रहते नहीं थे जिसके कारण आगे का अध्ययन उनसे करना शक्य नहीं था। अतः विद्या पिपासा ने आप को काशी आदि विद्याकेन्द्रों की ओर जाने के लिये प्रेरित किया। आप सन् १९५० में काशी गये, परन्तु वहाँ परीक्षा क्रम से विद्यालयों में पढ़ाने का प्रबन्ध ही था जो आप की रुचि के अनुकुल न होने से आप वहाँ से लौट कर गुरुदेव के चरणों में पहुँच गये। १९५१ में पुनः अध्ययन के लिये उपयुक्त स्थान की खोज में आप काशी हरिद्वार होते हुये ऋषिकेश पहुँचे। कैलास आश्रम की ख्याति सुन कर आप वहाँ अध्ययन के लिये गये। परन्तु आवास की सुविधा आप को न मिल सकी। भगवान् अभिनव चन्द्रेश्वर की ऐसी इच्छा हो सकती है कि यहाँ का भावी पीठपति यहाँ का विद्यार्थी न बन कर सीधा आचार्य बन कर आवें और हमें वेदान्त सुनाएँ। इसी प्रकार अन्य आश्रमों में भी अध्ययन की व्यवस्था ठीक न देख कर परीक्षा क्रम से ही आपने अध्ययन करने का मन बना लिया और हरिद्वार होते हुये पुनः काशी पहुँचे।

वाराणसी में आपने धर्मसंघ, गोविन्दमठ संन्यासी कालेज एवं ब्रह्मविद्यालय में प्रवेश का यत्न किया किन्तु इन स्थानों में प्रबन्ध न हो सका। फिर आप दक्षिणामूर्ति मठ में आये। वहाँ के प्रबन्धक स्वामी आत्मानन्दगिरि जी महाराज ने बड़े प्रेम से आप को रखा। हाँ यहाँ पर नमक रहित भोजन के नियम को निभाना कठिन था क्योंकि एक विद्यार्थी के लिये अलग से अलोना भोजन बनाना सम्भव नहीं था। अतः आप को अध्ययन की खातिर यह व्रत छोड़ना पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उक्त विवरण से यह सिद्ध होता है कि विद्याध्ययन के लिये आप को कहाँ कहाँ नहीं जाना पड़ा और क्या क्या कष्ट नहीं सहना पड़ा। आप अपने लक्ष्य विद्या प्राप्ति पर अडिग रहे और वहाँ पूर्ण एकाग्रता और साधनामय जीवन व्यतीत करते हुए मध्यमा, शास्त्री, वेदान्ताचार्य, सर्वदर्शनाचार्य आदि परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आप की प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व से सहपाठी एवं अध्यापक दोनों अत्यन्त प्रभावित होते। विद्याध्ययन के साथ साथ अध्यापन करना आप की विशेषता थी। सभी आप के लिये यही कहते कि यह तो अभी से गुरु हैं।

विद्वान् बन कर आप दूसरों को विद्यादान करने में संलग्न हुये। दो वर्ष दक्षिणा मूर्ति मठ में प्राध्यापक और १० वर्ष विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय दिल्ली में प्रधानाचार्य बन कर निःशुल्क मुक्त हाथों से विद्या महादान करते रहे।

कैलास आश्रम ब्रह्मविद्या पीठ पर अभिषिक्त होने पर तो शांकरी विद्या का प्रचार प्रसार आप अपना मुख्य दायित्व मानने लगे। आप प्रधानाचार्य से अब विश्वविद्यालय रूपी अध्यात्म विद्याकेन्द्र के कुलपति बन कर सारस्वत समाराधना का क्रम जारी रखे। आप विग्रहवान आध्यात्मविद्या हैं। सभी सन्त, भक्त, विद्वान्, आचार्य महन्त एक स्वर से कहते हैं-आप जैसा विद्वान् होना अत्यन्त दुर्लभ है।

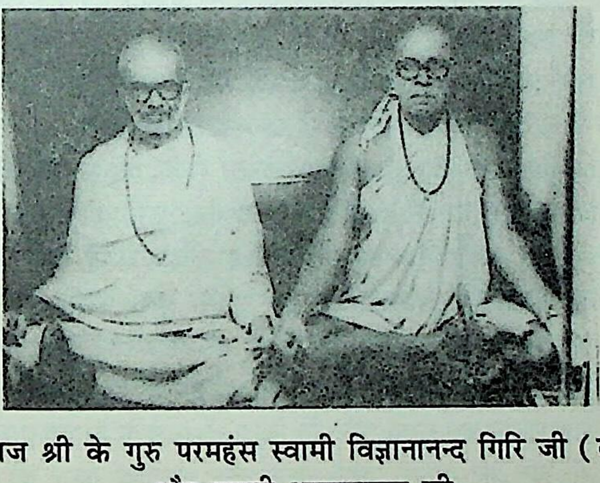

महाराज श्री के गुरु परमहंस स्वामी विज्ञानानन्द गिरि जी (दायें) और स्वामी आनन्दानन्द जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तप एवं त्यागमूर्ति

व्यवहार में जिस प्रकार द्रव्य की आवश्यकता है उससे भी कई गुणा अधिक परमार्थ में तप और त्याग जरूरी है। त्याग ही वह मूल्य है जिस के द्वारा परमात्मा रूपी लक्ष्य की ओर जाने वाली गाड़ी का टिकट खरीदा जा सकता है। तप और त्याग की बात करना और चीज है और इन्हें जीवन में उतारना दूसरी बात है। भगवान् श्री कृष्ण की सात्त्विक त्याग की परिभाषा और शारीरिक, वाचिक और मानसिक तप के वर्णन सहित सात्त्विक तप के खुलासे से सभी साधक परिचित होंगे।

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
संगं त्यक्त्वा फलं चैव सः त्यागः सात्त्विको मतः॥ १८.९॥
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते॥ १७.१७॥

अर्थात् आसक्ति और फलकी आशा को त्याग शास्त्रविहित कर्तव्य कर्मों का अनुष्ठान सात्त्विक त्याग है। और एकाग्रचित्त परमश्रद्धायुक्त, फल की इच्छा से रहित पुरुषों द्वारा तीन प्रकार के तप को सात्त्विक तप कहते हैं।

महाराज श्री के जीवन में प्रारम्भ से ही उक्त त्याग एवं तप सहज रूप से समाविष्ट हुआ दीखता है। परमार्थ पथ का पथिक बनते ही आप ने गृहस्थी को उसकी शैश्वावस्था में ही छोड़ दिया। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ले कर आप ने एक कुटीर में रह कर साधना प्रारम्भ की तो आपने नमक न खाने का व्रत ले लिया। **'लवण बिना बहु व्यंजन जैसे'** के अनुसार इस एक व्रत से ही सभी व्यंजनों का त्याग आपने किया। इससे कठोर नियम जीवन में शायद ही कोई हो। आप कभी छाछ एवं गुड़ के साथ भोजन करते अथवा फल एवं दूध पर गुजर करते। इस व्रत को आप ने कुछ दिन, कुछ महीने नहीं बल्कि आठ वर्षों तक निभाया।

दिल्लीस्थ विश्वनाथ संस्कृत, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य बनने पर आप ने विद्यालय का समय परिवर्तन किया तो आप के विद्यालय संचालन कार्य में दिन का भोजन आड़े आने लगा, क्योंकि आप की भोजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवस्था आश्रम में थी जहाँ एक आप के लिये आप के विद्यालीय समयानुसार भोजन बनाना दुष्कर था। आप ने व्यवस्थापकों को कष्ट दिये बिना तभी से दिन का भोजन न करके केवल रात्रि में एक बार भोजन करने का निश्चय कर लिया। यह व्रत दश वर्षों तक जब तक संन्यास आश्रम दिल्ली में रहे अखण्ड चलता रहा। कैलासपीठाधीश्वर बनने पर ही आप ने दिन में भोजन करना प्रारम्भ किया, परन्तु एक समय भोजन का व्रत न छोड़कर रात्रि भोजन त्याग दिया।

कैलास आश्रम में आप का जीवन कठोरतम परिश्रम का जीवन रहा है। यहाँ आकर आप ने आराम को मानो तिलाञ्जलि दे दी। कैलास पीठ की सेवा को आप ने श्री हनुमान जी की राम सेवा कीं तरह लिया। आप अकसर कहते भी हैं कि **'राम काज कीन्हे बिनु मोहि कहां विश्राम।'** भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू की 'आराम है हराम' वाली उक्ति का भी आप उदाहरण देते हैं। आप कार्य संलग्नता में बीमारी की भी परवाह नहीं करते। आप के दृढ़ संकल्प के सामने रोग भी झुक जाता है। आदि शंकराचार्य द्वादश शताब्दी वर्ष पर्यन्त देश भर में आप की अध्यक्षता में मनाई गई। उस दौरान आप ने एक बार कहा कि हमें बीमार होने की भी फुरसत नहीं है। अभी इस ७५ वर्ष की आयु में भी आप का वैसा ही परिश्रम चल रहा है जैसा आज से २५ साल पहले था।

दिल्लीस्थ कैलास विद्यातीर्थ में निवास के दौरान आप ने एक दिन दोपहर २ बजे किसी भक्त के यहां जाना था। व्यस्तता के कारण उस दिन भोजन डेढ़ बजे सम्पन्न हुआ। तनिक विश्राम के लिये महाराज श्री अपने कक्ष में लेटे तो आँख लग गई। जो सज्जन महाराज श्री को लिवा लेने आये थे वे समय पर दो बजे पहुँच गये। हम लोगों ने उन से थोड़ी देर रुकने के लिये कहा। महाराज श्री दो बजकर १० मिन्ट पर उठे तो वे सज्जन उन से मिले और कहा कि महाराज जी हम आप की आज्ञानुसार दो बजे पहुँच गये थे। महाराज जी ने सेवक महात्मा को कहा कि जब यह दो बजे आ गये थे तो आप ने हमे जगाया क्यों नहीं। संत ने सहज में उत्तर दिया कि हम ने सोचा कि आप तनिक विश्राम कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लें। महाराज श्री ने कहा कि विश्राम भी कोई काम है जिसके लिये समय बरबाद किया जाय।

आप दूसरों के कष्ट को बड़ी जल्दी महसूस करते हैं परन्तु अपने सुख की बिल्कुल परवाह नहीं करते। यात्रा से कितने ही थके हुये क्यों न आयें भक्तों को खुले दर्शन पर्याप्त समय तक देते हैं, किसी को भी निराश नहीं करते। अशक्त एवं वृद्ध भक्तों को उनकी सुविधा का ध्यान रखते हुये अपने कक्ष से बाहर आकर स्वयं दर्शन देते हैं।

महाराज श्री में नियम पालन की अद्भुत दृढ़ता है। आप ने विदेश यात्रा में भोजन न करने का नियम लिया और २ सप्ताह बिना भोजन के केवल फल खा कर कृष्काय हो वहां से लौटे।

हमने कई महात्माओं के बारे में सुना है कि वे धन को छूते नहीं। महाराज श्री धन को मन से नहीं छूते। परन्तु एकत्रित धन का सत्कार्यों में प्रयोग करते हैं। उन्हीं के शब्दों में कहा जाय तो आप एक डाकिये का काम करते हैं। एकत्रित द्रव्य को यथा स्थान पहुँचाते हैं। अपने व्यक्तिगत प्रयोग में वे नहीं लाते। यही सात्त्विक त्याग है। सात्त्विक त्याग और गीतोक्त सात्त्विक तप आप के सहज आभूषण हैं।

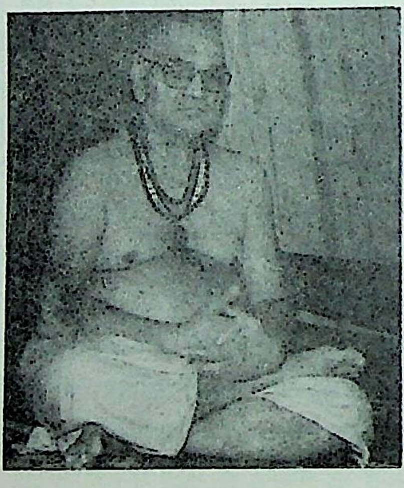

तप और त्यागमूर्ति महाराज श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री की अध्यापन एवं प्रशासन शैली

अध्यापन एक कला है। अध्यापक में विषय का ज्ञान तो होना आवश्यक ही है परन्तु इस से भी जरूरी विद्यार्थी के मस्तिष्क में उस विषय को जचाना एवं बिठाना है। एक कुशल अध्यापक मनोवैज्ञानिक होता है। उसमें विद्यार्थी के मन को विषय की ओर आकर्षित करने की क्षमता होती है। कई विद्वान् होते हुये भी कुशल अध्यापक सिद्ध नहीं होते। जहाँ अध्यापक पढ़ाता जाय और विद्यार्थी कुछ अन्य कार्यों में ही मन दिये रहें तो समय ही नष्ट होता है, अध्यापन नहीं हो पाता।

महाराज श्री अध्यापन कला में अत्यन्त निपुण हैं। यह योग्यता आप में विद्यार्थी जीवन से ही विद्यमान थी। आप अपने छात्रों को पुत्रवत् स्नेह देते हैं और उनमें प्रसुप्त गुणों को उभारने के साथ-साथ नये सद्गुणों का आधान भी करते हैं। जो छात्र आप से पढ़ा, वे जीवन भर आपको स्मरण रखता है, इस के कई उदाहरण विद्यमान हैं। डॉ. उमेशानन्द शास्त्री जी महाराज, श्री बलदेवानन्द सागर, पं. विश्वनाथ शर्मा आदि महानुभाव सभी महाराज श्री के विद्यार्थी रहने का गौरव अपने में आज भी अनुभव करते हैं।

प्रधानाचार्य के रूप में आप में सुयोग्य एवं कुशल प्रशासक रूपी व्यक्तित्व के दर्शन हुये। आप ने कभी किसी छात्र को दण्डित नहीं किया। फिर भी सभी छात्र बिना दण्डभय के सभी विद्यालीय नियमों को पालन करते थे। सभी छात्रों को बिना पक्षपात स्नेह प्रदान करना आप का सहज स्वभाव रहा है।

महाराज जी के छात्र पं. विश्वनाथ शर्मा (आकाश वाणी, दूरदर्शन दिल्ली) यतीन्द्र तिलक में लिखते हैं "सन् १९६८-६९ में विश्वनाथ संस्कृन महाविद्यालय के छात्रों का जो दब-दबा दिल्ली के संस्कृत जीवन पर था, उसे भुलाया नहीं जा सकता। एक ही वर्ष में प्रायः १० चल विजय वैजयन्तियाँ जीत कर छात्रों ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि अच्छे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशासक का नेतृत्व हो, विद्वान् गुरुजनों का संसर्ग हो तथा पिता सदृश प्रेम मिले, तो भण्डारों का भोजन करने वाले सांसारिकता से दूर रहकर जीने वाले यह छोटे छोटे संस्कृत के बालक किसी को भी पीछे छोड़ने में सक्षम हैं। और यह सब प्रेरणा, उत्साह एवं शुभाशीर्वाद एवं आत्मशक्ति गुरु जी (महाराज श्री) में ही थी। यह एक उनके ही परिश्रम का फल था जो कि विद्यालय इतना उन्नत हो गया''।

महाराज श्री के १० वर्ष प्रधानाचार्य पद पर रहने के पश्चात् श्री श्यामानन्द शास्त्री, न्याय-वेदान्ताचार्य जी प्रधानाचार्य बने। अतः महाराज श्री के कार्य काल का सही मूल्याङ्कन उन से अच्छा और कोई नहीं कर सकता। वे जो कुछ कहेंगे वह सवर्था सत्य एवं निष्पक्ष माना जायेगा। वे लिखते हैं कि ''आप बड़े मधुरभाषी, शास्त्र व्यसनी, संस्कृत प्रेमी एवं व्यवहार कुशल हैं। आप के क्रिया कलाप से छात्रों को तो प्रेरणा मिलती ही है, किन्तु संस्कृत के विद्वान् भी आप की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। आप की पाठन शैली अतीव रोचक और सरल है। आप के पास छात्र पढ़ने में उकताते नहीं थे। आप छात्रों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान की भी शिक्षा देते हैं।''

महाराज श्री से संस्कृत और कुछ अन्य शास्त्र पढ़ने का सौभाग्य मुझे भी मिला है। उनको जितना अधिकार शास्त्र पर है उतना ही विद्यार्थी के मन पर भी है, ऐसा अनुभव हुआ है। उनका अध्यापक का यह मधुर रूप सदा भक्तों का कल्याण करे, ऐसी कामना करता हूँ।

महाराज श्री एवं दिल्लीस्थ श्रीविश्वनाथ सं. म. विद्यालय के छात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मयोग निष्ठा

महाराज जी का जीवन श्रीमद्भगवद्गीता में उपदिष्ट कर्मयोग का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण लोक कल्याण रूपी कर्म में लगा हुआ है। प्रात: ४ से रात्रि ११ बजे तक प्राय: प्रति दिन आप को लोकार्थ कर्म स्वाध्याय, प्रवचन, लेखन भ्रमण यात्रा आदि ही करते देखा हैं। कर्म की आप में अपार क्षमता है। आप कभी इस में थकते नहीं। जब आप से पूछा गया कि क्या निरन्तर मानसिक और शारीरिक श्रम करने से आप को थकान नहीं होती? तो आपने उत्तर दिया कि अनन्त शक्ति सम्पन्न परमात्मा के आश्रित हो उनकी पूजा के रूप में निरन्तर मानसिक एवं शारीरिक श्रम करने पर भी थकान नहीं हाती, ऐसा हमारा अनुभव है। थकान और निराशा का मूल कारण अभिमान और फलासक्ति है। इस उत्तर से महाराज श्री ने श्रीमुख से अपने क्रिया कलाप में अभिमान और आसक्ति का अभाव बताया। यही तो गीता का भक्ति मिश्रित कर्म योग है। महाराज जी ये नहीं देखते कि उनके आस पास के लोग कर्मयोग का सम्पादन किस हद तक करते हैं। वे स्वयं इसका सम्यक्रूपेण पालन करके एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कैलास आश्रम की शताब्दी १९८०-८१ में वर्ष भर मनाई गई। इस दौरान पूरे भारत में महाराज श्री की अध्यक्षता में महोत्सव मनाये गये। ट्रेन यात्रा भी निकाली गई। बड़ा ही परिश्रमयुक्त वर्ष था। शताब्दी के समापन समारोह के बाद हम सभी यह महसूस करते थे कि महाराज श्री अब कुछ विश्राम अवश्य लेंगे। परन्तु दूसरे ही दिन स्वाध्याय कराते समय उन्होंने यह कहा कि आप यह न समझें की शताब्दी पूरी हो गई और अब हमें पर्याप्त विश्राम चाहिये। विश्राम का तो प्रश्न ही नहीं उठता। राम काज कीन्हें बिनु मोहि कहा विश्राम। हम कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठ की सेवा के लिये भगवान् अभिनवचन्द्रेश्वर द्वारा नियुक्त किये गये हैं और उनके कार्य में विश्राम कहाँ। क्या कोई पूजा कार्य करते समय विश्राम लेने की बात सोच सकता है? उसको तो अधिक से अधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संलग्नता से पूजा करते जाने में ही आनन्द है। और ऐसा ही हुआ; उन्नति के सभी कार्य क्रम शताब्दी के बाद पहिले से भी तेज रफतार से सम्पन्न होने लगे।

कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका के बहुधा लेख महाराज श्री ने स्वयं अपनी कलम से लिखे हैं। मैं जयपुर उनके कार्यक्रम में सम्मिलित होने गया। वहाँ देखा कि महाराज श्री रात्रि एक बजे उठकर समारिका के लेख लिख रहे हैं। वे जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे पूरि शक्ति से पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न करते हैं। यह असाधारण कर्म योगी के लक्षण नहीं तो और क्या हैं।

महाराज श्री की कर्मयोग में प्रवृत्ति मेरे विचार में श्रीमद्भगवद्गीता के निम्न दो श्लोकों पर आधारित है:—

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि॥ ४.२२॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ ४.२१॥

महाराज श्री लोक शिक्षार्थ एवं लोक कल्याणार्थ कर्म करते हैं।

जब किसी आश्रम या देवालय में जाते हैं तो पहिले देव दर्शन करते हैं। वहाँ से प्रस्थान के समय भी देव दर्शन करने के बाद ही बाहर आते हैं।

व्रत त्यौहार को स्वयं मनाते हैं और दूसरों को शिक्षा मिलती है। स्वयं आरती में आते हैं जिससे दूसरे लोग इसमें आने का प्रमाद न करें।

आप का जीवन कर्म योग की खुली पुस्तक है। जो वहाँ से जितनी चाहें इस कला को सीख लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिवेणी-भक्ति, ज्ञान, कर्म

गोस्वामी जी ने साधु समाज को कर्म भक्ति और ज्ञान की त्रिवेणी कहा है।

मुदमंगलमय सन्त समाजू। जो जग जङ्गम तीरथराजू॥
राम भक्ति जहं सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा॥
विधि निषेधमय कलि मल हरणी। कर्म कथा रविनन्दिनी बरणी॥

अत: जो वास्तव में सच्चा साधु होगा उसमें यह तीनों विद्यमान होंगी। इस का क्रम भी गोस्वामी जी ने बता दिया। पहले भक्ति, फिर उससे ज्ञान और तत्त्वनिष्ठ हो जाने पर लोकसंग्रहार्थ एवं लोकशिक्षार्थ कर्मयोग का संपादन। महाराज श्री में यह तीनों उक्त क्रम से ही आये। प्रारम्भ में महाराज श्री ने राम भक्ति को अपनाया, श्री राम चरित मानस एवं अन्य भक्तिग्रन्थों का खूब अभ्यास किया। यहाँ तक कि सम्पूर्ण राम चरित मानस कण्ठ करली। श्री हनुमान जी की अच्छी आराधना की जो आज भी अपने शिष्यों एवं भक्तों को आप प्रेरित करते हैं। श्री राम चरित मानस के पारायण से इष्ट फल प्राप्ति के आप ने कई भक्तों को सफल अनुष्ठान करवाये। आप कृपा पूर्वक, पाठके साथ अमुक सम्पुट लगाने का निर्देश करते हैं। जैसे किसी की कन्या का विवाह की समस्या हो तो उसे 'सुनु सीय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी'॥ सम्पुट लगाने को कहा। हमारे सामने भी कन्या के विवाह की समस्या आई तो उन के आदेशानुसार उक्त सम्पुट लगाकर नवाह्न पारायण श्री राम चरित मानस का किया। और विवाह के लिये योग्य वर मिल गया। वैसे तो हमारे विचार में महाराज श्री का आशीर्वाद ही इष्ट सिद्धि प्राप्ति के लिये पर्याप्त है किन्तु उनका ध्येय लोगों को भक्त बनाना है। अत: इस प्रकार के उपाय बताते हैं जिससे इष्ट फल की सिधि के साथ-साथ भक्ति का सम्पादन भी जीवन में हो जाये। देवताओं ने भगवती की स्तुति में कहा कि दैत्य हमारे शास्त्रों के लगने से पवित्र होकर उत्तम लोकों को जायें इसी विचार से आप इन पर शस्त्र प्रहार करती हैं, अन्यथा यह तो आप की दृष्टि मात्र से भस्म हो जाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्ट्वैव किं न भवति प्रकरोति भस्म,
सर्वान्सुरानरिषु यत्प्रहिणोति शस्त्रम्।
लोकान् प्रयातु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी॥ दुर्गा सप्तशती॥

भक्ति एवं उपासना से निर्मल एवं निश्चल हुआ अन्तः करण अपने निज स्वरूप प्राप्ति के योग्य होता है। महाराज श्री ने ज्ञान और भक्ति को कभी अलग-अलग नहीं समझाया। वे ज्ञान की परिपक्वता भक्ति में और भक्ति की पराकाष्ठा ज्ञान में मानते हैं। भक्ति क्या है इसे वे नारद भक्ति सूत्र द्वारा समझाते हैं **'सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा'** उस परम प्रेमास्पद आत्म-स्वरूप का निरन्तर चिन्तन ही भक्ति है और यही ज्ञान भी है। भक्तिसाधन भी है और साध्य भी। साध्य भक्ति और ज्ञान में अभिन्नता है।

भक्तिहि ज्ञानहि नहि कुछ भेदा।
उभय हरिहिं भव संभव खेदा॥
बिरति चर्म कृपाण असि काम क्रोध रिपु मारि।
जय पाईये सो हरि भक्ति देखु खगेस बिचारि॥

भक्ति और ज्ञान में जो अन्तर राम चरित मानस में दिखाया है जिसमें ज्ञान दीपक और भक्तिमणि का निरूपन है वह एकपक्षीय मान्यता के आधार पर है सर्वसम्मत नहीं है। इसीलिये इसके निरूपण के पूर्व गोस्वामी जी ने सावधान किया है

नाथ मुनीस कहहिं कछु अन्तर।
सावधान होई सुनु बिहंगबर॥

कुछ मुनि ऐसा कहते हैं सो गरुड़ जी आप उसे सावधान होकर सुन लीजिये। जहाँ खतरा हो वहीं सावधान किया जाता है। इस एकाकी मत में खतरे का बीज है। यह पूर्व में कहे गये भक्तिज्ञान अभेद परक वाक्य से विरुद्ध बात है जो शास्त्र की कसौटी पर पूरी नहीं उतरती।

महाराज श्री भक्ति ज्ञान कर्म की त्रिवेणी प्रयाग राज का अत्कृष्टतम् उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाक् माधुर्य

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ गी. १७.१५॥

वाणी का संयम वाचिक तप है। सत्य भाषण भी यदि प्रिय न हो अपितु कटु हो तो वह झूठ की श्रेणी में ही माना जाता है। सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियं, यह सनातन धर्म का सिद्धान्त है।

महाराज श्री की वाक्माधुर्य प्रसिद्ध है। वे कभी अप्रिय भाषा का प्रयोग नहीं करते। मुझे प्रथम बार उनके दर्शन एक अतिमधुर भाषी मंच संचालक सन्त के रूप में ही हुये थे। उन के पत्रों में लेखों में सर्वत्र मधुरता का दर्शन होता है। प्रत्येक भक्त को उनके माधुर्य का रसास्वादन होता है। 'वचने का दरिद्रता' का उपदेश वे देते हैं। किस समय किस प्रकार किसी को उपदेश करना है यह कला उन के पास स्वभाव सिद्ध है। **'जयति वचन रचना अति नागर'** भगवान् परशुराम जी ने भगवान् राम के वचनों में जिस मधुरता का अनुभव किया हालाँकि वे स्वयं अपना संतुलन खोये हुये थे परन्तु श्री राम ने प्रिय भाषण का त्याग नहीं किया। वही मधुरता महाराज श्री में है।

एक बार महाराज श्री के कक्ष वायु भवन में एक महात्मा आये। मैं भी वहाँ उपस्थित था। उन्होंने मठाधीशों, महन्तो, महामण्डलेश्वरों की कड़ी आलोचना शुरु कर दी। महाराज जी से भी बहुत तीखे शब्दों में व्यङ्ग किया कि आप ने ऐसी गलती क्यों की। महाराज श्री मुस्कराते हुये उनकी सब बातें सुनते रहे ओर यह नहीं कहा कि आप अनुचित रूप से आलोचना के लिये ही आलोचना कर रहे हैं, परन्तु इतना ही कहा कि स्वामी जी यदि आप हमें पहिले मिले होते तो सम्भवत: आपकी बात मान कर हम यह महामण्डलेश्वर का पद स्वीकार नहीं करते।

महाराज श्री के पावन सान्निध्य की माधुरी से भक्त इतने घुल मिल जाते हैं, कि एक पारिवारिक वातावरण बन जाता है। जैसे पुत्र अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समस्याओं को पिता के प्रति बताता हो ऐसे ही भक्त अपनी कठिनाईओं का ब्यान महाराज श्री के सन्मुख करते हैं। महाराज श्री बड़े प्रेम से उनको सुन कर समाधन करते हैं। महाराज श्री को अपने हजारों भक्तों के समस्त परिवारों का परिचय और उनके नाम याद रहते हैं। सभी भक्तों का यह विचित्र अनुभव है कि महाराज श्री का सर्वाधिक स्नेह उनके साथ है, यद्यपि जल में पद्मपत्र की भाँति उन का जीवन आसक्तिशून्य है। महाराज श्री की यह मधुर झांकी हमारा कल्याण करे।

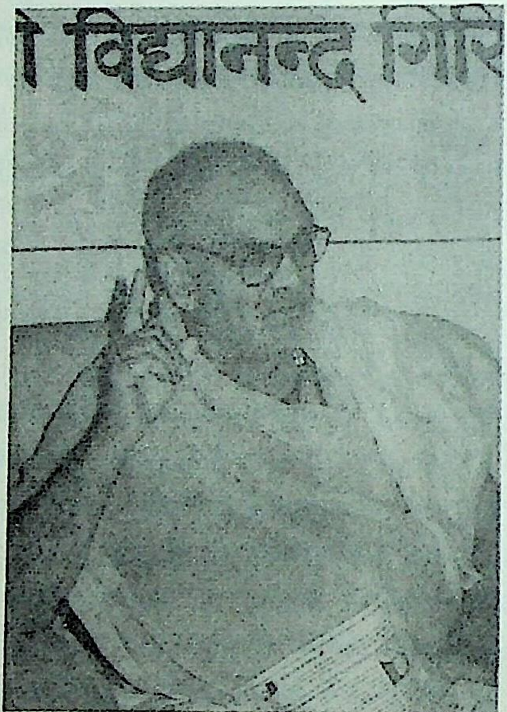

महाराज श्री नई दिल्ली पत्रकार सम्मेलन में (३.५.१९९३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाध्याय-प्रवचन

'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम्'

महाराज श्री को आलस्य प्रमाद तो छू तक भी नहीं गया। स्वाध्याय और प्रवचन के नियम का बड़ी दृढ़ता के साथ महाराज श्री पालन करते हैं। महाराज श्री जहाँ भी जायें पठन पाठन, स्वाध्याय प्रवचन का कार्यक्रम चलता है। आप एक प्रकार का चल विद्यालय हैं। जहां भी आप जाते हैं वहाँ विद्यार्थी मिल जाते हैं। आप जो भी बोलते हैं वह उपदेश होता है। आप अपने प्रवचन में विषय के दायरे से बाहर नहीं जाते। केवल शास्त्र सम्मत उपदेश करते हैं। इसमें श्रुति (वेद) को ही प्रमाण मानते हैं। वेदानुकूल स्मृति इतिहास का भी उदाहरण प्रमाण रूप में देते हैं।

शाङ्कराद्वैत सिद्धान्त में ही श्रुतियों का तात्पर्य है इसे युक्ति प्रमाण से सिद्ध करते हैं। उनके प्रवचनों के कुछ मुख्य बिन्दु निम्नाङ्कित मेरी बुद्धि में आये हैं।

१. मनुष्य जन्म अत्यन्त दुर्लभ है। इस से परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है जो किसी अन्य योनि में संभव नहीं। अतः परमार्थ साधनार्थ इस देह का सदुपयोग करना नितान्त आवश्यक है।

२. पुरुष की इछा के विषयों को चार भागों में विभक्त कर शास्त्रकारों ने देखा है। इन्हें धर्म, अर्थ काम और मोक्ष कहते हैं। मोक्ष परम पुरुषार्थ है। इनमें अर्थ (पदार्थ) और काम (भोगने का सामर्थ्य) प्रारब्धाधीन है। किन्तु धर्म और मोक्ष प्रयत्नसाध्य हैं। अतः प्रयत्न इसी दिशा में करना चाहिये। अर्थ और काम के लिये प्रयत्न करना धारा के विपरीत तैर कर नदी पार करने की तरह परिश्रम मात्र ही देता है।

३. सनातन धर्म एक ही है। जो मानव मात्र का धर्म है। और उस का मूल वेद है। इसके साथ वर्ण आश्रम धर्मों का भी पालन आवश्यक है।

४. ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य वर्ण में उत्पन्न बालकों का यज्ञोपवीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कार होना परमावश्यक है। इसके बिना जीवन उन्नति पथ पर नहीं चल सकता।

५. सब किसी को अपने से बड़ों का आदर अवश्य कर्तव्य है। माता पिता, गुरु, बड़े भाई इत्यादि जितने भी घर में बड़े हों उन को प्रातः काल उठ कर प्रणाम करना धर्म है। इससे मनुष्य की आयु, विद्या, यश बल बढ़ता है।

६. हर समय परमेश्वर का स्मरण करना चाहिए। इसके साथ अपने कर्तव्य कर्म का निवर्हण पूर्ण मनोयोग से करना चाहिये।

७. ईश्वर प्रदत्त साधनों का सदुपयोग करते हुये इन को सेवा, स्वाध्याय, दान, तप आदि सत्कर्मों में लगाना चाहिये।

८. मन, कर्म, वचन की एकता जीवन में होनी चाहिये जो सत्पुरुषों का लक्षण है

९. आत्मस्वरूप का चिन्तन सदा करते रहना और संसार के मिथ्यात्व का निश्चय कर इससे अहंता ममता को दूर करना चाहिये।

आपके ईशवास्योपनिषद् के ऊपर प्रवचन 'ईशावास्य प्रवचन सुधा' पुस्तक रूप में प्रकाशित हुये हैं। जो बहुत लोकप्रिय हुये। इस का अंग्रेजी और अन्य कुछ भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी छपा है। इसी प्रकार गीता अष्टादशाह प्रवच पुस्तक भी बहुत ही लोक प्रिय हुई है। स्वाध्याय में महाराज श्री भगवद्गीता, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थ आदि मुख्य रूप से रखते हैं। अष्टादशाह क्रम से प्रस्थान त्रयी का स्वाध्याय कराने से आप अष्टादशाह प्रवर्तकाचार्य के नाम से प्रख्यात हुये हैं।

स्वाध्याय प्रवचन की आप की अनुपम शैली है। आप विषय को कभी बोझिल नहीं होने देते। उदाहरणों और घटनाओं के आधार पर शास्त्र के गम्भीर तत्त्वों को सरलता से श्रोताओं को हृदयङ्गम करवा देते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गो भक्ति

गावो मे मातरः सर्वाः पितरश्चैव गोवृषाः

गो जगन्माता है। इस में देवताओं का वास है। इसकी सेवा से सब प्रकार की समृद्धि मानव प्राप्त कर सकता है। गो का सभी पदार्थ बड़े उपयोग का है। गोबर और गोमूत्र भी जिस का शुद्ध और खाद व ईन्धन के काम आता है ऐसा प्राणी गो के अतिरिक्त और कोई दूसरा इस धरती पर नहीं है।

महाराज श्री को गौ सेवा परम प्रिय है। जहाँ तक सम्भव हो महाराज श्री गो दुग्ध का ही सेवन करते हैं। कैलास आश्रम ऋषिकेश में आप के आगमन से पूर्व गौ रखने की व्यवस्था अति सीमित थी। २ गौ से अधिक वहाँ नहीं रखते थे। यदि कोई आती भी तो २ से अधिक को अन्य गौशाला में भेज देते। महाराज श्री को इस बात का पता नहीं था। एक बार किसी भक्त ने एक गाय भेजी। जिससे वहाँ की गो संख्या ३ हो गई। महाराज श्री इस बीच में भ्रमण सत्संग कार्यक्रम से बम्बई चले गये। जब लौटे तो उन्होंने उस गाय के बारे में पूछा। उत्तर मिला कि उसको भेज दिया। महाराज जी ने इस का कारण जानना चाहा तो पता लगा यहाँ तो २ से अधिक गौ रखने की व्यवस्था ही नहीं है। महाराज जी में इस बात से नवीन गौ सदन बनाने का संकल्प हुआ और पूर्वाचार्य स्वामी प्रेम पुरी जी महाराज की पुण्य स्मृति में स्वामी प्रेम पुरी गो सदन की संस्थापना हुई। जिसमें सुन्दर सुखद व्यवस्था २०/२५ गौ रहने की है। उनके चारे, जलादि की भी समुचित व्यवस्था की। अब गौ के चारे के लिऐ गोप्रेमकवलायतन का निर्माण भी हो गया।

महाराज श्री ने भक्तों को गौ सेवा के लिये प्रेरित कर गो सेवा प्रतिष्ठान की संस्थापना भी की है। जिस से गौ सेवा अनवरत चलती रहे और कभी द्रव्य संकोच से यह सेवा भविष्य में बन्द न हो जाये।

महाराज श्री अनोखे ढंग से भक्तों को गौसेवा के लिए अवसर देते हैं। उन्होंने एक बार व्यवस्थापक से पूछा कि भण्डारा में सब को भोजन मिल गया है। उन्होंने कहा हाँ महाराज सभी को मिल चुका है। महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी ने पूछा क्या गौ को मिल गया है? उन्होंने विस्मय से कहा कि इस की ओर तो हमारा ध्यान कभी नहीं गया। महाराज जी ने कहा कि गौ भी तो आश्रम का अङ्ग है उसको भोजन क्यों नहीं दिया गया। इससे जिस भक्त ने भण्डारा किया है उसको पूरा पूरा लाभ हो; अतः गो के लिये भी उसी द्रव्य में से भोजन व्यवस्था होनी चाहिए। उसदिन से सदा के लिए अब भण्डरा कराने वालों को गौ सेवा का भी महान् फल प्राप्त हो जाता है।

न केवल ऋषिकेश में ही अपितु दशनाम संन्यास आश्रम हरिद्वार कैलास आश्रम, उत्तर काशी राम आश्रम समाना मण्डी में भी गौ शालायें हैं। गौ के अमृतमय दूध का पान कर वहां के सन्त एवं भक्त बड़ी संतुष्टि का अनुभव करते हैं।

महाराज श्री ने १९६३ के गो रक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और १८ दिन तक तिहाड़ जेल दिल्ली में रहे।

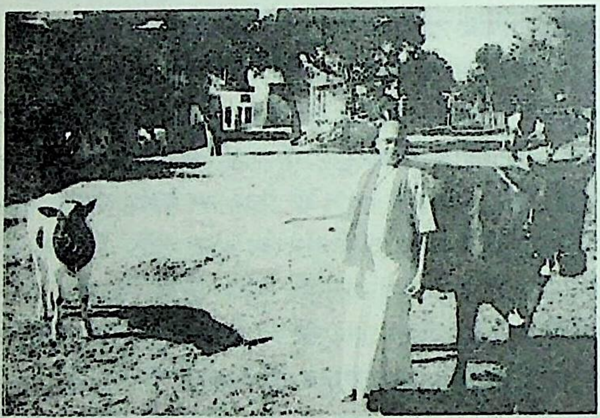

कैलास आश्रम ऋषिकेश में गो पालन का दृश्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तों के अनुभव

महापुषों के सत्संग में जाने वालों को और उनके निकट रह कर दर्शन एवं सेवा करने वालों को कई विचित्र एवं अलौकिक अनुभव होते हैं। कई लोग उनको सिद्धि का नाम भी देते हैं। कई यह कहते हैं कि अमुक संत बड़ी करणी वाले हैं। कई उन्हें सिद्ध योगी की संज्ञा देते हैं। कई उन्हें तन्त्र मन्त्र ज्ञाता कहते हैं। कोई उन्हें अर्न्तयामी कह कर उनकी महिमा गाते हैं।

महाराज श्री के विषय में भक्तों के बहुत से अनुभव सुनने में आते हैं जिन का भक्तों के आग्रह होने से इस पुस्तक में देना आवश्यक हो गया है। कैलास आश्रम के परम भक्त परिवार भक्त देसराज चानना जी सन्तों के सेवा से ही अपनी स्मृद्धि मानते हैं। विशेष कर महाराज श्री के आशीर्वाद से अपनी उन्नति को जोड़ने में मुक्तकण्ठ से कृतज्ञता के भाव व्यक्त करते हैं। श्री गोवर्धन लाल चानना ज्येष्ठ पुत्र सेवा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं जिस का अनुकरण उनके छोटे तीनों भाई भी करते हैं। उनकी अजमल खां रोड़, करौल बाग में दुकान है। उससे पूर्व पटरी पर एक अलमारी मात्र में ही अपना सामान रखते थे। दुकान लेने का विचार बना तो महाराज श्री की सेवा में निवेदन किया। महाराज श्री ने आशीर्वाद दिया कि आप दुकान ले लो। इन्होंने बिनती की कि महाराज दुकान ५-६ लाख की है और हमारे पास राशि बहुत कम है। महाराज ने कहा कि चिन्ता न करो महादेव की कृपा से सब व्यवस्था हो जावेगी। और ऐसे ही हुआ। संबन्ध परिस्थियाँ सब अनुकूल बनती गई और दुकान मिल गई। एक बार वे महाराज श्री के पास जाकर प्रार्थना करने लगे कि महाराज आयकर के अधिकारी हमारी दुकान पर छापा मारने वाले हैं। आप कृपा करो तो यह संकट टल जाय। महाराज श्री ने कहा कि कृपा की नहीं जाती परन्तु हो जाती है। दूसरे दिन आयकर अधिकारियों ने कई दुकानों पर छापे मारे, परन्तु इन की दुकान पर नहीं आये।

हमारे परममित्र ब्रह्मलीन स्वामी कैवल्यानन्दगिरि। (श्रीमान् केवल कृष्ण नय्यर) आज होते तो अपने कई अनुभव सुनाते और उनको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमृताञ्जलि में समावेश कराते। अतः उनके कुछ अनुभवों का उल्लेख करना उचित होगा।

बात १९७३ की है जब उत्तरकाशीस्थ कैलास आश्रम के नूतन भवनों एवं मन्दिर का उद्घाटन, देव प्रतिष्ठा महोत्सव था। सायंकाल शिवमहिम्नः स्तोत्र के पाठ में सब लोग बैठे थे। महाराज श्री भी विराजमान थे। नय्यर जी ने पुस्तक से ऊपर नजर उठाकर महाराज श्री की ओर देखा तो उन को महाराज श्री के स्थान में भगवान् गणेश जी के दर्शन हुये। वे आवाक रह गये। उसी समय गणेश जी तिरोहित होकर शिव जी वहाँ विराजे हुये उनको दिखाई दिये। वे और भी आश्चर्य चकित एवं रोमाञ्चित हुये। तदोपरान्त पुनः महाराज श्री पूर्ववत् वहाँ विराजे हुए दीखने लगे। श्री नय्यर को अपने इस अनुभव से अपने सद्गुरुदेव महाराज श्री पर अपार श्रद्धा और निष्ठा हो गई और वे महाराज श्री को साक्षात् शिव समझने लगे।

कैलास आश्रम शताब्दी ट्रेन यात्रा में वे सपत्नी यात्र पर गये थे। उनके साथ श्रीमक्खन लाल भट्ट भी थे। इन दोनों ने ट्रेन यात्रा की बिगड़ती हुई व्यवस्था को महाराज श्री के आदेश एवं आशीर्वाद से काफी संभाला था। नय्यर जी सुनाते थे कि गंगा सागर की यात्रा में कलकत्ता से स्टीमर पर जाते हुये बड़ी कठिनाई का अनुभव हुआ। स्टीमर तक पहुँचने के लिये समुद्र तट से नौका में सभी ६०० यात्रियों को जाना था। तट से नौका पर सवार होने के लिये केवल दो तख्तों का हल्का सा पुल बनाया हुआ था जिस पर कई यात्रि तो गिरत-गिरते बचे। गंगा सागर में स्नान कर सायंकाल लौटे तो नय्यर जी ने देखा कि उस स्थान पर जहाँ प्रातः कठिनाई का अनुभव हुआ था वहाँ एक सुन्दर प्लेट फार्म बना हुआ है जिस पर यात्रि बड़ी सुविधा से तट पर आ गये। यह एक आश्चर्य जनक घटना थी क्योंकि चन्द घण्टों में इतना अच्छा प्लेटफार्म बनना मनुष्य की शक्ति से बाहर था। महाराज जी की यह घोषणा तो थी ही कि यह यात्रा महादेव करा रहें है हम तो निमित्त मात्र हैं। उसी से इस घटना का समाधान नय्यर जी ने माना। नय्यर जी की धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। विशेषतया उनको चलने फिरने में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कठिनाई थी। दवाईयों के सहारे निर्वाह करती थीं। परन्तु यात्रा के दौरान ४८ दिनों तक भाग-भाग कर यात्रा की और कोई दवाई भी नहीं खायी। अन्य सभी यात्रियों का भी ऐसा ही सुखद अनुभव था। नय्यर जी महाराज श्री के प्रभाव का वर्णन करते थकते नहीं थे। उन की गुरुनिष्ठा से उनको विशेष अनुभव होते रहते थे।

राजगीर यात्रा

सन् १९९३, अगस्त मास की बात है। एक रात्रि लगभग १० बजे मुझे नय्यर जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि मैंने महाराज श्री का जीवन वृत्तान्त 'आदर्श जीवन' पुस्तक में पढ़ा है और इन के परिवार वालों के बलिदान से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यदि वे बलिदान न करते तो हमें महाराज श्री गुरु रूप में प्राप्त नहीं होते और विश्व को एक महान् विभूति नहीं मलती। मैंने उनकी बात का अनुमोदन किया। उन्होंने पुनः कहा कि इसी लिये मेरी प्रबल इच्छा है कि हम लोग महाराज श्री की जन्मभूमि जायें और उस परिवार के दर्शन कर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें। मैंने कहा कि आप का विचार बहुत अच्छा है। हम महाराज श्री से आज्ञा लेकर अवश्य वहाँ की यात्रा करेंगे। फोन बन्द करने के पश्चात् मैंने विचार किया कि नय्यर जी का हृदय कितना निर्मल है जहाँ उपकारी के प्रति ऐसी उत्कृष्ट कृतज्ञता का भाव सहज में ही उत्पन्न हुआ है। यही पुस्तक हमने भी पढ़ी है पर हमारे मन में ऐसा विशुद्ध भाव कभी उत्पन्न नहीं हुआ।

जब लगन सच्ची हो और संकल्प में दृढ़ता हो तो ईश्वर की सहायता शीघ्र प्राप्त हो जाती है। महाराज श्री उन्हीं दिनों विदेश यात्रा से दिल्ली लौटे थे। उन का कार्यक्रम यहाँ से राजगीर जाने का था, जहाँ उस समय महाराज श्री का पट्टाभिषेक रजत महोत्सव श्री स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज की अध्यक्षता में नवनिर्मित कैलास विद्यातीर्थ में चल रहा था। उस समय वहाँ मल्ल मास मेला भी था। महाराज श्री ने वहाँ १० सितम्बर को पहुँच कर भागवत सप्ताह करना था। महाराज श्री पंजाबी बाग श्रीमान् भूषण कपूर जी के यहाँ ठहरे हुये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

थे। वहाँ कपूर जी ने प्रस्तावना की कि महाराज श्री के मुखारविन्द से भागवतकथा सुनने का यह अच्छा अवसर है और हमें भी राजगीर की यात्रा में महाराज श्री के साथ चलना चाहिये। महाराज श्री ने भी इसमें अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। दूसरे दिन नय्यर जी को मैंने राजगीर की यात्रा के बारे में कहा और यह भी कहा कि इसी यात्रा के दौरान आपकी महाराज श्री के परिवार वालों के दर्शन करने की अभिलाषा भी पूरी हो सकती है। वे बहुत प्रसन्न हुये और हमने महाराज श्री से इस अभिलाषा के बारे में निवेदन किया। उन्होंने संकेत दिया कि आप की यह अभिलाषा राजगीर में ही पूर्ण हो जायेगी। फिर क्या था कपूर जी, नय्यर जी और मैं महाराज श्री के साथ राजगीर की यात्रा के लिये तैयार हो गया।

देवीदर्शन

महाराज श्री और सन्तों के संग हम लोग पटना तक रेल में और वहाँ से एक भक्त के वाहनों में राजगीर पहुँचे। महाराज श्री के भागवतसप्ताह ज्ञान यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। हमने एक महात्मा से अपनी उक्त अभिलाषा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि माता जी तो रोज सत्संग में आती हैं। आप को उनके सहज में दर्शन हो जायेंगे। दूसरे दिन के सत्संग में उसी महात्मा ने हमें संकेत से उनका दर्शन करा दिया। प्रातः काल की कथा समाप्त होते, हम तीनों ने उनके चरण स्पर्श करके प्रणाम किया और अपना परिचय दिया जिसे सुन कर वे बड़ी प्रसन्न हुईं। वे आजकल अपने भाई के सुपुत्र श्री नरेन्द्र प्रसाद वात्सायन के पास बड़गाँव (नालन्दा) जो राजगीर से ८-१० कि.मी. दूर है वहाँ निवास करती हैं। सत्संग के लिये उन दिनों भक्त श्री साधुशरण जी के आवास पर ठहरी हुई थीं। हम ने श्री साधुशरण जी से निवेदन किया कि हम आप के घर पर आकर माता श्री राम प्यारी जी के दर्शन करना चाहते हैं। उन्होंने दूसरे दिन सब व्यवस्था कर दी। हम तीनों पत्रपुष्प लेकर उस महान् देवी के दर्शन करने गये। हम ने उन के चरणों में प्रणाम किया और उनके सन्मुख बैठे। कुशलक्षेम की बात-चीत हुई। वे बिल्कुल प्रसन्न चित्त थीं। उन्होंने कहा कि हम महाराज श्री की आज्ञा का ही अपने जीवन में पालन करती हैं। उनकी आज्ञा के बिना एक स्थान से दूसरे स्थान भी नहीं जाती। हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन की साधुता, सरलता एवं मधुर सम्भाषण से अत्यन्त तृप्त हुये और मन ही मन उन के आदर्श जीवन और तपस्या की सराहना करते हुये उनसे आज्ञा ले कर पुनः आश्रम में कथा स्थल पर आ गये। नय्यर जी को अपनी यात्रा सफल होने से विशेष आनन्द मिला। इसके अतिरिक्त महाराज श्री के मुखारविन्द से श्री मद्‌भागवतसप्ताह का सातों दिन दोनों समय श्रवाणामृत पान कर हमने अपने जीवन को धन्य हुआ समझा। राजगीर में गर्म कुण्डों में महाराज श्री के संग जा कर स्नान का भी आनन्द लिया। भगवान् बुद्ध की तपः स्थली और अन्य ऐतिहासिक स्थानों का दर्शन करके आश्रमस्थ मन्दिर का शिलान्यास समारोह देख कर महाराज श्री से आज्ञा एवं आशीर्वाद ले वहाँ से विदा हुये।

महाराज श्री की आज्ञापाल से लाभ

महाराज श्री के अनन्य सेवक और मेरे परम मित्र श्री टेकचन्द ढींगरा जी ने आग्रह पूर्वक अपने कुछ अनुभवों को अमृताञ्जलि में देने के लिये कहा है। उन्होंने बताया कि एक बार जब वे नये-नये शिष्य बने थे, ऋषिकेश दर्शनों को गये। लौटते समय प्रातः महाराज श्री से आज्ञा लेने गये तो उनहोंने कहा कि आप भोजन करके जाना। इन को दिल्ली पहुँचने की शीघ्रता थी। अतः इन्होंने महाराज श्री की आज्ञा को नकारते हुये उनसे उसी समय प्रस्थान करने की पुनः आज्ञा चाही। महाराज श्री ने अच्छी बात कह कर उनको विदा किया। पहले तो कैलास आश्रम से बस अड्डा ऋषिकेश पहुँचने के लिये उनको कोई साधन नहीं मिला। पैदल ऋषिकेश बस अड्डा पहुँचे तो दिल्ली की बस नहीं मिली। काफी प्रतीक्षा के बाद हरिद्वार की बस ले कर हरिद्वार आ गये। वहाँ भी दिल्ली की बस उन्हें बड़े विलम्ब से मिली। परिणामस्वरूप वे प्रातः ७ बजे के निकले हुये रात्रि ९ बजे दिल्ली पहुँचे और मन ही मन सोचने लगे कि यदि हम महाराज श्री की आज्ञानुसार भोजन करके चलते तब भी इससे तो जल्दी पहुँच जाते।

१९८५ में जब महाराज श्री अमरनाथ यात्रा पर भक्तों की दो बसें ले कर गये थे तो ढींगरा जी को भी यात्रा पर चलने के लिये कहा। इन्होंने कहा कि महाराज जी १५ दिन के लिये दुकान बन्द करना पड़ेगी। अतः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

मैं नहीं जा सकूँगा। कुछ दिनों बाद महाराज श्री ने पुनः ढींगरा जी को यात्रा पर चलने के लिये प्रोत्साहित किया। परन्तु ढींगरा जी ने फिर वहीं मजबूरी का वर्णन किया। ढींगरा जी जिस दुकान की खातिर यात्रा पर नहीं गये वह पूरे १५ दिन, मालिक दुकान से विवाद छिड़ जाने के कारण, बन्द रही। और जो परेशानी विवाद के कारण उठानी पड़ी उसका तो कहना ही क्या। जिस रोज महाराज श्री यात्रा करके दिल्ली लौटे उसी दिन वह विवाद समाप्त हुआ और दुकान खुली। इस घटना से ढींगरा जी को यह अनुभव हुआ कि महाराज श्री भावी विवाद को देखते हुये ही हमें इस से बचाने के लिये यात्रा पर चलने के लिये कह रहे थे। और हमारे जाने से विवाद जनित कष्ट भी उठाना न पड़ता।

उपर्युक्त अनुभवों से ढींगरा जी ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि आगे से अब कभी महाराज श्री के वचनों को नकारना नहीं। जैसी उनकी आज्ञा हो वैसा ही करने में हमारा सब प्रकार से हित है। ढींगरा जी महाराज श्री के दर्शनों को रोहतक गये। लौटने की आज्ञा लेने गये तो महाराज श्री ने कहा कि भोजन करके जाना। ढींगरा जी ने वैसे ही किया। भोजन विश्राम के पश्चात् महाराज श्री ने स्वयं ही उनसे कहा कि अब आप जा सकते हैं। ढींगरा जी बस के लिये बाई पास रोड़ पर पहुँचे ही थे कि इनके पास एक नई मारुति कार आकर रुकी। कार में चालक के अतिरिक्त और कोई सवारी नहीं थी। चालक ने ढींगरा जी से पूछा कि आप दिल्ली चलेंगे? ढींगरा जी ने कहा दिल्ली तो जाना है पर आप भाड़ा क्या लेंगे। कार वाले ने कहा जो आप बस में देते हैं वही मैं ले लूँगा। ढींगरा जी कार में बैठ गये। रास्ते में भजन कैसेट सुनने का आनन्द भी लिया। कार वाला उनको उनके घर मोती नगर में ही छोड़ गया। ढींगरा जी ने यह सब सुविधा मिलने के लिये महाराज श्री की कृपा का कृतज्ञता पूर्वक स्मरण किया।

अपनी लड़की के विवाह के लिये ढींगरा जी योग्य वर की खोज में थे। एक जगह बात चली। इस का जिकर महाराज श्री से किया। उन्होंने हामी नहीं भरी। ढींगरा जी ने वह बात आगे नहीं चलाई। एक डेढ़ वर्ष बीत गया। पुनः उसी लड़के के मातापिता ने ढींगरा जी की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ बढ़ाया। ढींगरा जी ने पुनः महाराज श्री से निवेदन किया। महाराज श्री ने कहा कि ठीक है वहाँ रिश्ता कर दीजिये। और दो मास के अन्दर अप्रैल १९९६ में विवाह कर देवें। उन्होंने अक्षरशः वैसा ही किया। सभी कार्य ऐसी कुशलता से सिद्ध हुआ कि जैसे स्वयं ही हो रहा हो। महाराज श्री वर वधु को आशीर्वाद देने विवाह पण्डाल में पधारे। ढींगरा जी का कहना है कि विवाह के पकवानों में इतनी बरकत पड़ी कि अन्दाजे से दो सौ आदमी ज्यादा खाने पर आये परन्तु किसी प्रकार की कमी नहीं हुई। उनका यह भी कहना है कि हमें पता नहीं विवाह का सभी कार्य कैसे हो गया। मैंने अपने हाथों से कोई काम नहीं किया, हमें कुछ भी बोझ नहीं पड़ा। यह सब महाराज श्री के आशीर्वाद का फल है।

निजि अनुभव

आज से ३७ वर्ष पूर्व मैं जब से महाराज श्री की शरण में आया हूँ मुझे उनकी कृपा एवं दिव्यता का बराबर अनुभव होता रहता है। प्रत्येक कार्य में उनकी आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्त कर करने से कार्य में सदा सफलता मिली है। उनके परोपकारी कार्यों में कुछ सेवा करने का सौभाग्य बराबर मिलता रहता है। इसमें भी उनकी कृपा ही हेतु है जो भक्तों को निमित्त बना काम तो स्वयं करा देते हैं और यश भक्तों को मिल जाता है।

स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ॥

एक दिन महाराज श्री वायु भवन अपने कक्ष में विराजमान थे। मैं और कुछ सन्त उनकी सेवा में बैठे थे। उन्होंने सहसा कहा कि भौमराज जी आ रहे हैं। मैं यह सोच ही रहा था कि महाराज श्री ने यह वाक्य क्यों बोला, कुछ क्षणों बाद ही भौम राज जी वहाँ पहुँच गये। तब महाराज श्री की दिव्यता का अनुभव हुआ कि वे सिद्ध महापुरुष हैं। महाराज श्री के गीता अष्टादशाह प्रवचन के छठे अध्याय के चौथे श्लोक की व्याख्या में लिखा है कि "साधक लोग हम से आ कर पूछते हैं—इस हिमालय में कोई सिद्ध योगी महात्मा हो तो हमें बतलाइए। उन से क्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहें, हम ही सिद्ध योगी हैं—ऐसा कहना अच्छा नहीं लगता। हमारा ही दर्शन करो हम से सत्संग करो, ऐसा कहना भी अच्छ नहीं लगता। उन को मालूम पड़ता है सिद्ध योगी किसी गुफी में बैठे होंगे। वह हमारे मस्तक पर हाथ रखेंगे, समाधि लग जायेगी।''

कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका में महाराज श्री ने कैलास आश्रम से जुड़े हुये सभी महापुरुषों, सन्तों, दिव्यविभूतियों एवं भक्तों के जीवन पर स्वयं के लिखे लेखों द्वारा प्रकाश डाला है। उसमें विश्व विश्रुत दिव्य विभूतियाँ शीर्षक से विश्वविख्यात श्री स्वामी विवेकानन्द पुरी जी, स्वामी अभेदानन्द पुरी जी और श्री स्वामी रामतीर्थ जी (राम बादशाह) के जीवन पर उनके प्रमाणिक लेख हैं। उनको पढ़ने से ऐसा स्पष्ट भास होता है मानों यह सब घटनाएँ महाराज श्री के सामने घटी हों। उन का इस विषय में विचार सुनने के लिये मैंने एक बार उनका ध्यान इस ओर जिज्ञासा पूर्वक दिलाया। उन्होंने स्वीकार किया कि हम ने जब पूर्ण एकाग्रचित्त हो इन को लिखा तो यह सब जैसी घटी थीं वैसी हमारे सामने स्पष्ट दीखने और सुनाई देने लगीं।

कैलास आश्रम रोहतक के शिलान्यास प्रसंग पर उस प्लाट पर ही तम्बू लगा कर श्री रामचरितमानस का नवाह्न पारायण यज्ञादि मांगलिक कार्यों का आयोजन जून १९८५ में महाराज श्री की अध्यक्षता एवं माता सुशीला देवी जी के सान्निध्य में आरम्भ हुआ। इधर आकाश में गहरे बादल मण्डराने लगे। वर्षा का भय सभी भक्तों और विशेष कर आयोजकों को होने लगा कि हमारे अनुष्ठान का क्या होगा और यह नौ दिन कैसे निकलेंगे। महाराज श्री के सन्मुख इस चिन्ता को सभी ने व्यक्त किया। महाराज श्री ने सहज में कहा कि आप चिन्ता न करो वर्षा नहीं होगी। बादल छट गये और नौ दिनों तक वर्षा की एक बूंद नहीं बरसी हाँलाकि आस-पास के इलाकों में खूब वर्षा होती रही। शिलान्यास के अन्तिम दिन विधिविधान से सब कार्य सम्पन्न हुआ। उस के बाद हुई सभा को सम्बोधित करते हुये महाराज श्री ने कहा कि हमने नौ दिनों तक वर्षा को रोके रखा। अब हम कार्य सम्पन्न हो जाने से इस अकुंश को इन्द्र देवता पर से हटाते हैं। इतना कहना था कि कुछ ही क्षणों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बादल घिर आये और वायु के प्रचण्ड वेग सहित इतनी वर्षा हुई कि सब आश्चर्य चकित हो प्रसन्नता से झूम उठे।

श्रीमद्भगवद्गीता अष्टादशाह प्रवचन का प्रकाशन कार्य दिल्ली में चल रहा था। महाराज श्री ने इस के विमोचन कि तिथि श्री छोटे महाराज जी की प्रथम पुण्य तिति आषाढ़ शु. तृतीया वि.सं. २०४९ निश्चित कर दी थी। ८०० पृष्ठीय ग्रन्थ की छपाई उक्त तिथि से केवल दस दिन पूर्व शुरु हुई। श्री भूषण कपूर जी और मैं बड़ी चिन्ता में थे कि यह सब कार्य कैसे समय पर पूरा होगा। प्रैस वाले सज्जन श्रीमान् सुनील गर्ग और अनिल गर्ग भी महाराज श्री का ही भरोसा हृदय में रख कर कार्य आरम्भ किये और दिन रात प्रैस चलती रही। उन का अनुभव था कि पता नहीं कौन सी शक्ति यह सब कार्य करवा रही थी। आमतौरपर बिजली बन्द हेने से काम सदा रुकता रहता था। उन ८ दिनों में एक दिन भी बिजली बन्द नहीं हुई। कार्य समय से पूरा हुआ। तब से प्रैस वालों की यह धारणा बन गई कि महाराज श्री की दिव्य महिमा है जिसका हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

दिल्ली में इसी वर्ष विश्वसन्त पूज्य मोरारी बापू की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में हुई राम कथा में भी वर्षा के कारण बड़ी विकट परिस्थिति का सामना हुआ। १७ सितम्बर से कथा शुरु होनी है और १० सितम्बर तक रोज लगातार वर्षा हो रही है। समिति के अध्यक्ष श्री भूषण कपूर और महामन्त्री श्री सुनील गर्ग, दोनों ने महाराज श्री की शरण ली। वर्षा महाराज श्री की कृपा से थम गई। पण्डाल लगाने का कार्य युद्धस्तर पर पूरा करके कथा समय पर बड़ी धूम धाम से महाराज श्री की पावन अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

मेरे व्यक्तिगत जीवन में मेरे पिता जी के मन बदलने में भी महाराज श्री की कृपा ने अद्भुत कार्य उन से करवाया। मेरे पिता जी अपनी कड़ी मेहनत से कमाये गये धन को बड़ी सावधानी से खर्च करते थे। मेरी माता ज़ी और मैं उन को धार्मिक कार्यों में दान की सलाह देते रहते थे जिसे वे किसी अंश में स्वीकार भी कर लेते थे। कैलास आश्रम शताब्दी प्रसंग पर उन्होंने कुछ सेवा दी तो महाराज श्री ने कहा कि यह आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की हैसीयत से कम है। मेरे मन में कई बार विचार आता था कि पिता जी को दिल खोल कर दान करना चाहिये। माता जी का स्वर्गवास होने के पश्चात् पिता जी अम्बाले वाला अपना मकान बेच कर मेरे पास आ गये। एक दिन उन्होंने मुझ से कहा कि तुम्हारी माता जी की पुण्य स्मृति में कोई कमरा बनवाने की मेरी इच्छा है। मैंने उनसे कहा कि बहुत अच्छा विचार है किन्तु इस में एक लाख रुपये तक आप देने को राजी हों तो मैं महाराज श्री से निवेदन करूँ। उन्होंने हाँ कर दी। मैंने मौका पा कर महाराज श्री से निवेदन किया। उन्होंने कहा कि दशनाम संन्यास आश्रम में पीठाचार्य निवास की सेवा आप के पिता जी ले लें तो बहुत अच्छा हो। पिता जी इस बात के लिये भी राजी हो गये। उन की स्वाभाविक मनोवृत्ति में यह एक मार्मिक परिवर्तन था, जिसका श्रेय महाराज श्री की अहैतुकी कृपा को है।

महाराज श्री भक्तों के कल्याणार्थ उन्हें शुभकर्मों में सदैव प्रेरणा देते रहते हैं। कलि युग में **'जेन केन विधि दीन्हे दान करई कल्याण'** के अनुसार इस युग में दान का अत्याधिक महत्व है। महाराज श्री भक्तों को इस ओर लगाने के लिये ही विविध परोपकारी कार्यों का आविष्कार आये दिन करते रहते हैं। मेरे विचार में महाराज श्री की इतनी लम्बी चौड़ी प्रवृत्ति में केवल भक्तों के कल्याण की भावना ही है। बड़े-बड़े लोभी व्यक्तियों को भी दान में प्रवृत्त कराकर उनके हृदय को महाराज श्री ने पवित्र बनाया है।

उपर्युक्त सभी प्रसंगों के अतिरिक्त असंख्य ऐसे प्रसंग हैं जो भक्तों के अनुभव में आते हैं और जो महाराज श्री की अवर्णनीय महिमा के द्योतक हैं। अतः वे सभी भक्त उन प्रसंगों का स्मरण कर अपने हृदय में प्रसन्नता का अनुभव करें और ऐसा दृढ़ विश्वास रखें कि परमात्मा हमारे अन्दर के भावों से हमारी गुरुनिष्ठा को जानते हैं चाहे वह पुस्तक में छपे लेख के रूप में व्यक्त न भी हुये हों।

वास्तव में परमात्मनिष्ठ महापुरुषों की महिमा का पार पाना सम्भव ही नहीं है। **मुनि सुनु साधुन्ह के गुण जेते। कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते॥**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महोत्सवाचार्य

किसी विद्वान् ने कहा है कि वही राष्ट्र अथवा समाज जीवित है जो अपने महोत्सवों को उत्साह पूवर्क मनाता है। महोत्सव आनन्दोल्लास का प्रतीक है। यही कारण है कि महाराज श्री ने महोत्सवों को कैलास आश्रम के कार्यक्रमों में मुख्य स्थान दिया।

महाराज श्री के विचार में प्रत्येक महोत्सव के माध्यम से कोई रचनात्मक कार्य सम्पन्न होना चाहिये। कुछ भजन कीर्तन किया, भण्डारा खाया और घर को चले गये, इतने मात्र से किसी महोत्सव की सफलता वे नहीं मानते। वह महोत्सव की योजना बड़े विचार पूर्वक उसके निश्चित समय से कई दिन, महीने अथवा वर्षों पूर्व बना लेते हैं। उसके इतिहास, माहात्म्य, मनाने के उद्देश्य और विधि से भक्तों को पूर्व से ही प्रवचनों, प्रपत्रों तथा अन्य प्रचार सामग्री के माध्यम से अवगत कराते हैं। भक्तों और सन्तों के मन में अपने अनोखे तरीके से उस महोत्सव में रुचि उत्पन्न कराते हैं। उस में रचनात्मक कार्यों में द्रव्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये भक्तों को प्रेरित करते हैं और उन कार्यों को सम्पन्न कराने की व्यवस्था भी करते हैं। इतना सब करने पर ही महोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न होता है।

महाराज श्री ने उत्तरकाशी कैलास आश्रम का नवनिर्माण कराकर वहाँ उद्घाटन एवं देव प्रतिष्ठा १९७३ ई. में एक भव्य महोत्सव से कराई। वहाँ उस समय आप के अनुरोध पर पूज्य आनन्दमयी माँ भी पधारी थीं और उन्हीं के पावन सान्निध्य में दि. १४-५-७३ को मन्दिर में उत्तराखण्ड के महान् तपस्वी वयोवृद्ध सन्त श्री स्वामी गंगानन्द तीर्थ के कर कमलों द्वारा आपने देव प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न कराया। उसी दिन से स्थानीय बाजोरिया भवन के प्रांगण में श्री आनन्द मयी माँ के जन्म महोत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ था। इस महोत्सव को उत्तर काशी में मनाने के लिये महाराज श्री ने इस से पिछले वर्ष के दिल्ली में मानाये गये महोत्सव में पूज्य माँ से अनुरोध किया था, जिसे माँ ने सहर्ष सवीकार किया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कैलास आश्रम का वार्षिक महोत्सव

कैलास आश्रम के अधिष्ठातृ देव श्री अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की संस्थापना माघ शु. ७ (अचला सप्तमी) को हुई जिसका महोत्सव प्रतिवर्ष कैलास आश्रम में मनाया जाता है। माघ शु. त्रयोदशी को श्री आदि शंकराचार्य जी का प्रतिष्ठा दिवस महोत्सव भी मानाते ही थे। उसी दिन कैलास मेला भी लगता है। उसके उपरान्त फाल्गुन कृष्ण एकादशी को आदि संस्थापक महाराज श्री का निर्वाण महोत्सव और चतुदर्शी को महा शिवरात्रि महोत्सव आता है जिस दिन रात्रि भर शिव पूजन होता है और प्रात: संन्यास दीक्षा संस्कार होता है। इस प्रकार अचला सप्तमी से महाशिवरात्रि के अन्तराल में ही कैलास के वार्षिक महोत्सव आते हैं। महाराज श्री ने विचार किया कि इन को अलग अलग मनाने में सन्तों एवं भक्तों को बार-बार आना जाना पड़ता है। क्यों न २१ दिवसीय एक वार्षिक महोत्सव मनाया जाये जिसे अचला सप्तमी से प्रारम्भ करके महाशिवरात्रि को सम्पन्न किया जाये। बीच में कुछ ऐसा कार्यक्रम रखा जाय जिस से महोत्सव की माला खण्डित न हो। इस को मूर्त्त रूप आश्रम में गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र का अष्टादशाह ज्ञान यज्ञ बारी-बारी रख कर महाराज श्री ने दिया। इस ज्ञानयज्ञ में भाग लेने के लिये जिज्ञासु बड़ी उत्सुकता से प्रतिवर्ष आते हैं और दोनों गंगाओं में स्नान कर आनन्दित होते हैं।

शताब्दी महोत्सव

कैलास आश्रम की शताब्दी मनाने का संकल्प तो पट्टाभिषेक वाले दिन ही महाराज श्री ने कर लिया था। उस समय अभी शताब्दी पूरा होने में ११ वर्ष शेष थे। इस महोत्सव की तैयारी लग-भग चार वर्ष पूर्व ही १९७७ से इस महोत्सव की प्रयाग कुम्भ में घोषणा से प्रारम्भ हुई। इसमें पंच सूत्रीय कार्यक्रम के आधार पर महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इसकी विस्तृत जानकारी कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका से पाठक प्राप्त कर सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शताब्दी महोत्सवों के पश्चात् आचार्य द्वय जन्म शताब्दी महोत्सव (१९८५-८६), श्री आदि शंकराचार्य द्वादश शताब्दी महोत्सव (१९८७-८८), दिव्य वर्ष पंचकम् महोत्सव (१९९२-९७) जो आज कल चल रहा है और जिस के पच्चीस बिन्दुओं में से २३ महोत्सव आज अमृताञ्जलि के विमोचन दिवस तक सम्पन्न हो गये हैं।

यदि आप कैलास आश्रम से प्रतिवर्ष छपने वाली व्रत त्यौहार की पुस्तिका (जन्त्री) देखें तो आप को पता चलेगा कि कितने नये महोत्सवों को कैलास आश्रम से महाराज श्री ने जोड़ा है। महाराज श्री की इस मंगलमयी प्रवृत्ति को देख कर सन्तों एवं भक्तों की अनुमति से उन का एक नाम 'महोत्सवाचार्य' हमने १९९३ में रखा था।

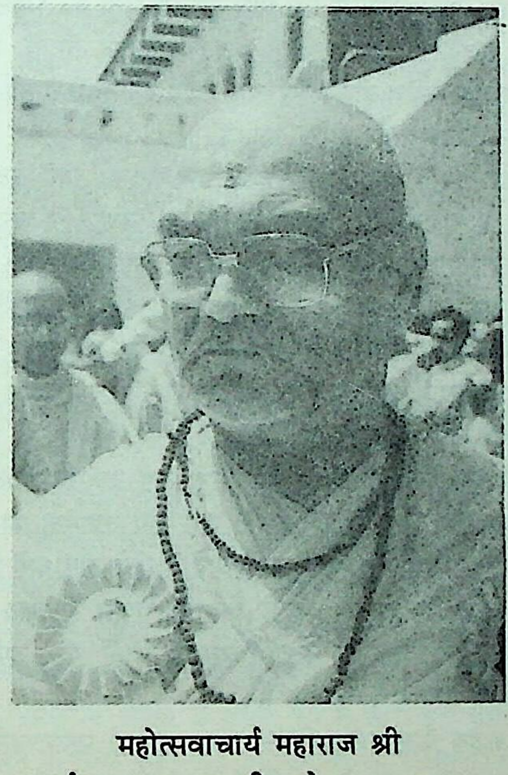

महोत्सवाचार्य महाराज श्री
(आचार्य द्वय जन्मशताब्दी महोत्सव - १९८५-८६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैदिक संस्कार निष्ठा

भारतीय संस्कृति के आधारभूत वैदिक संस्कार आज लुप्त प्राय: हो रहे हैं। इस की खास वजह यह है कि इस के महत्त्व बताने वाले आचर्य विद्वान् आज नहीं के बराबर हैं। इस के भयङ्कर दुष्परिणाम बच्चों विद्यार्थियों में दुर्व्यसनता, अशलीलता एवं अच्छृङ्खलता का समावेश है। जिन पाश्चात्य सभ्यता का हम अनुकरण कर रहें हैं उनसे वहाँ के लोग इस हद तक हैरान हैं कि अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव जैसे राष्ट्रीय कार्य में बच्चों के दुर्व्यसनों को छुड़ाने को मुख्य अभियान मुद्दा बनाया जा रहा है। अत: हमें उन राष्ट्रों की दयनीय दशा से शिक्षा ले अपना बचाव करना चाहिए। भारत का दुर्भाग्य है कि आज राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखने वाले कोई राजनैतिक नेता नहीं हैं। अत: महाराज श्री के विचार में धर्माचार्यों को ही सचेत होकर इस ओर ध्यान देना चाहिये और भारतीय संस्कारों का प्रचार प्रसार करना चाहिये।

महाराज श्री से सुना है कि शास्त्र प्रमाणानुसार चारों वेदों में एक लाख मन्त्र हैं। उनमें ८० हजार कर्मकाण्ड परक, १६ हजारा मन्त्र उपासना परक तथा ४ हजार मन्त्रों में ज्ञान को बताया गया है। कर्म और उपासना काण्ड को मिला कर ९६ हजार मन्त्र होते हैं। उनमें बतलाये गये कर्म और उपासना का दायित्व ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन द्विजों के ऊपर उसी समय आ जाता है जब उनका उपनय संस्कार होता है। इसी बात का स्मरण दिलाने के लिये ९६ चौथे लम्बाई का यज्ञोपवीत इनके कन्धों पर लटकाया जाता है जिससे उन्हें अहर्निश याद रहे कि हमें ९६ हजार वेद मन्त्रों में बताये गये कर्म और उपासना का यथोचित अनुष्ठान करते ही रहना चाहिये। यज्ञोपवीत में तीन-तीन धागे मिला कर बांटने एवं बनाने का तात्पर्य यह है कि तीन प्रकार के ऋण-देवऋण, पितृऋण एवं ऋषि ऋण भी हमारे ऊपर हैं जिन्हें यज्ञ, तर्पण, श्राद्ध स्वाध्याय आदि द्वारा हमें चुकाना है।

परम श्रद्धेय कैलासपीठाधीश्वर दशम आचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने इस दिशा में जो जागृति पैदा की है वह सर्वथा प्रशंसनीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। उनके उपदेशों का प्रथम पाठ ही यज्ञोपवीत धारण से प्रारम्भ होता है। उन्होंने सैंकड़ों नहीं हजारों बालक एवं प्रौढ़ भक्तों को अपने करकमलों से यज्ञोपवीत धारण करवाया है। यज्ञोपवीत के महत्त्व को वे सदा अपने उपदेशों, प्रवचनों में समझाते रहते हैं। उन का कहना है कि यज्ञोपवीत के बिना एक ग्रास अन्न भी मुख में नहीं जाना चाहिये। वे स्वयं भी उसी भक्त के यहाँ भोजन करते हैं जिनके यज्ञोपवीत संस्कार हुआ हो। वे कहते हैं यज्ञोपवीत हीन द्विज के सभी शास्त्रीय कर्म देव दर्शन पूजन इत्यादि निष्फल होते हैं। यज्ञोपवीत हीन व्यक्ति को देवता देखना तक पसन्द नहीं करते। देव प्रतिमाएं ऐसे व्यक्ति को सन्मुख देख सकुचा जाती हैं। जिन्ह भक्तों ने यज्ञोपवीत आरम्भ से नहीं पहना अथवा पहन कर उतार दिया, महाराज श्री उन्हें तुरंत साधारण प्रायश्चित्त करवा कर स्वयं अपने करकमलों से प्रतिज्ञा पूर्वक पहनाते हैं जिससे वे आगे कभी भी ऐसी भूल न करें। महाराज श्री कहते हैं कि जैसे यज्ञोपवीत धारण करने की विधि है ऐसे ही इस में उतारने की भी विधि है। मनमाने ढंग से कभी नहीं उतारना चाहिये। यदि उतारना हो तो संन्यास का संकल्प ले कर गुरु के पास जाकर यज्ञोपवीत उतार कर संन्यास दीक्षा लेनी चाहिये। ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम में प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि महोत्सव से पूर्व महाराज श्री की देखरेख में द्विज बालकों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार होता है।

महाराज श्री का दूसरा मुख्य उपदेश भारतीय परम्परानुसार बड़ों का आदर करना सभी भक्तों के लिये वे सदा देते हैं।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

अर्थात् नित्य बड़ों को प्रणाम करने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की आयु विद्या, यश और बल (स्वास्थ्य) की वृद्धि होती है। इस शास्त्र वाक्यानुसार महाराज श्री भक्तों को इस लाभकारी प्रवृत्ति की ओर बड़े प्रेमपूर्वक आग्रह से लगाते हैं। वे छोटे बड़े सब को इस का पालन करने के लिये कहते हैं। कई बार तो अपने सामने बच्चों से बड़ो को, पत्नी से पति को प्रणाम करवाते हैं ताकि वे इसमें होने वाले मिथ्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकोच को छोड़ सकें। महाराज श्री कहते हैं कि बड़े लोग यदि इस नियम का ठीक पालन करें तो बच्चे अपने आप देख कर सीख जाते हैं।

प्रात: ब्राह्ममुहूर्त में उठना और नित्य क्रिया के अनन्तर संध्या वन्दन भजन पूजा करने का उपदेश भी उनका भारतीय वैदिक सभ्यता के अनुसार जीवन को ढालने के लिये है। पंच देवोपासना की परम्परा वे त्रेतायुग के अवध वासियों की रामायण में आई हुई चौपाई के उदाहरण से समझाते हैं।

करि मज्जनु पूजहिं नरनारी। गन्प गौरी तिपुरारि तमारी॥
रमा रमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलि अचंल जोरी॥

महाराज श्री ने आचर संहिता पुस्तक लिख कर वैदिक संस्कारों पर प्रचुर प्रकाश डाला है। इस प्रकार आप ने वैदिक संस्कार पुन: प्रतिष्ठापक आर्चाय की भूमिका निभा कर युग पुरुष के अनुरूप कार्य किया है।

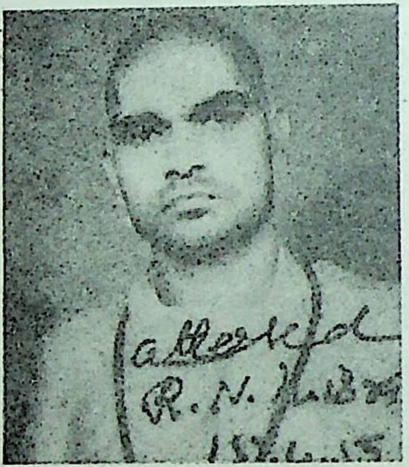

महाराज श्री-ब्रह्मचारी छात्र रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्य ग्रन्थ रचयिता

दिव्य ग्रन्थ रचना निपुण दिव्य बोध आगार
दिव्य शब्द आलोकघन दिव्य सकल आचार

सर्वान्तर्यामी परमात्मा द्वारा महाराज श्री को इस धरा पर भेजने का यदि कोई एक मुख्य कारण बताने को कहें तो मैं आप द्वारा दिव्य ग्रन्थ रचना कहूँगा। स्वयं महाराज श्री ने अपनी प्रथम मुख्य रचना वेदान्त परिभाषा के अनुवाद एवं सुबोधिनी नामक टीका के मंगलाचरण में लिखा है।

हिन्दी भाषा-भाषी जन का यदि इस से कुछ उपकार हुआ।
दर्शन के परम रहस्यों का उनके मन में संचार हुआ॥
तो फिर ऋषि मुनियों के पथ पर चल कर निजकाल बिताऊँगा।
इस तरह पुनः कुछ और ग्रन्थ की टीका भी लिख पाऊँगा॥
है सुबोधिनी नाम की टीका जनमन मीत।
भाषा भी अतिशय सरल देखत उपजे प्रीत॥

इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण देखने की किसी के पास फुरसत नहीं तो कम से कम महाराज द्वारा लिखी इस की भूमिका अवश्य पढ़ लेवें। इसी से भारतीय द्वादश दर्शनों (६ आस्तिक, एवं ६ नास्तिक) का परिचय, वेदान्त दर्शन पर विभिन्न आचार्यों के दृष्टिकोण, वेदान्त परिभाषा का सार का पता लग जायेगा। विद्यार्थियों के लिये अलग से परीक्षा उपयोगी ३० प्रश्न, उत्तर सहित परीक्षब्धि संतरणी के नाम से दिये हैं। इस प्रकार महाराज श्री की यह प्रथम रचना ही कितनी दिव्य है, इस बात का अन्दाज ग्रन्थ पर दृष्टि मात्र से ही पाठकों को हो जाता है।

ब्रह्मसूत्र की विद्यानन्दवृत्ति महाराज श्री की दूसरी प्रौढ़ कृति है। इसका उपोद्घात ब्रह्मलीन आचार्य प्रवर श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने लिखा था। मूल वृत्ति संस्कृत में महाराज श्री ने रची परन्तु आदि श्री शंकराचार्य के भाष्य के आलोक में हिन्दी टीका भी साथ में रची।

द्वादश उपनिषदों पर हिन्दी मिताक्षरी की रचना भी महाराज श्री द्वारा एक दिव्य ग्रन्थ है, जिसे पढ़ने से संस्कृत के विद्वानों ने भी कृतज्ञता व्यक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की, कि जो विषय शाकंर भाष्य पढ़ने से समझ में नहीं आता था उसको महाराज श्री की हिन्दी मिताक्षरी पढ़ने से समझ पाये।

कैलास आश्रम के पूर्वाचार्यों की टप्पणियों सहित सभी प्रमुख उपनिषदों को शांकरभाष्य, आनन्द गिरि टीका, हिन्दी मिताक्षरा आदि सामग्री सहित प्रकाशित करवा न केवल एक दिव्य धरोहर को नष्ट होने से बचाया अपितु इन के आधार पर स्वाध्याय के स्वरूप को भी निखारा।

श्रीमत्परमहंस चित्सुखाचार्य प्रणीत प्रत्यक्तत्त्वप्रदीपिका (चित्सुखी) वेदान्त का एक प्रौढ़ ग्रन्थ है। जो आचार्य परीक्षा के कोर्स में छात्रों को पढ़ाया जाता है। इस पर आज से तीन चार सौ वर्ष पूर्व एक विद्वान् ने नयनप्रसादिनी व्याख्या संस्कृत में लिखी थी। उस के बाद किसी विद्वान् को इस ग्रन्थ की व्याख्या लिखने का साहस नहीं हुआ। छात्र लोग इस ग्रन्थ से बड़े घबराते थे क्योंकि इस को समझना बड़ा ही कठिन था। महाराज श्री ने छात्रों की कठिनाई को ध्यान में रख कर छात्र तोषिणी व्याख्या संस्कृत में लिख कर जहाँ विद्वानों को चका चौंध किया वहाँ छात्रों को अत्यन्त संतुष्ट किया।

ब्रह्मसूत्र पर उपर्युक्त अपनी वृत्ति लिखने मात्र से आपको संतोष नहीं हुआ। इस ग्रन्थ को भी शांकरभाष्य रत्नप्रभा टीका, पूर्वाचार्यों की टिप्पणि और स्वरचित ललिता हिन्दी व्याख्या सहित छपवाने का कार्य आजकल चल रहा। इसके चार सूत्रों को अलग से छपवा कर पहले ही पाठकों के समक्ष रख दिया है। इसी प्रकार श्री मद्भगवद्गीता को भी शांकरभाष्य आनन्द गिरि टीका पूर्वाचार्यों की टिप्पणी और स्वरचित ललिता व्यख्या के सहित भी महाराज श्री छपवा रहे हैं। इन दोनों दिव्यग्रन्थों का विमोचन कैलास के षष्ठपीठाधीश्वर पूज्य बड़े महाराज जी एवं अष्टमपीठाधीश्वर पूज्य शास्त्री जी महाराज की पुण्य स्मृति में उनके आजकल चल रहे निर्वाण रजत महोत्सव प्रसंग पर होगा।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आचार संहिता, व्याप्ति पंचकम् जैसे कई दिव्य ग्रन्थों का भी प्रकाशन आप ने करवाया है। इन की रचना से भारतीय संस्कृति का विकास होने के साथ साथ कैलास आश्रम की गरिमा भी बढ़ी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री द्वारा लेख **'वेदान्त तात्पर्य'** जो उन्होंने १०-१५ मिन्टों में लिखवाया था यहाँ देना उचित प्रतीत होता है जिससे उन की लेखनी का दर्शन एवं अनुभव इसी पुस्तक में भक्तों को हो जावे।

वेदान्त तात्पर्य

इस समय सम्पूर्ण विश्व में जितने भी मत मतान्तर फैले हुये हैं उन के सभी धर्म ग्रन्थों की समीक्षा करने पर दो भागों में विभक्त पाते हैं- एक पौरुषेय और दूसरा अपौरुषेय। जो धर्मग्रन्थ किसी पुरुष के द्वारा बनाये गये हों उन्हें पौरुषेय आगम कहते हैं और जो किसी पुरुष द्वारा रचित नहीं हैं वे अपौरुषेय आगम कहे जाते हैं। ये अपौरुषेय आगम किसी मनुष्य द्वारा नहीं रचे गये इतना ही नहीं अपितु पुरुष विशेष परमेश्वर ने भी इन्हें नहीं बनाया। इसीलिये ऐसे आगम को अपौरुषेय कहते हैं। वेद अपौरुषेय आगम है और उस से भिन्न सभी धर्म ग्रन्थ पौरुषेय आगम माने जाते हैं। वेद से भिन्न सभी धर्मग्रन्थों के संबन्ध में उनके अनुयायों ने अपने अपने धर्म ग्रन्थ के निर्माताओं को सर्वज्ञ माना है और वे धर्मग्रन्थ कब बनाये गये उसका इतिहास भी लिखा हुआ है। इस बात को सभी ने स्वीकार किया है। पर वेद के संबन्ध में इससे विपरीत मान्यता है। वेद निर्माण सम्वत्सर का पता नहीं लगता और उसके निर्माता का भी निश्चय नहीं होता है। कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने अटकलें लगाई हैं पर वह ऐकमत्य न होने के कारण अमान्य हैं। भारतीय विचारधारा के अनुसार अनादि काल से वेद स्वरतः पदतः और वाक्यतः एक रूप है। सर्गारम्भ में तपः पूत ऋषियों के अन्तः करण में वैदिक ज्ञान स्फुरित होता है और वह उन ऋषियों के मुख से स्फुटित हो संस्कृत वाङ्मय में बाहर आता है। उसी शब्द राशि को हम सब वेद कहते हैं। इसके विरुद्ध यदि कोइ आर्षग्रन्थ भी कहने लग जाय तो वह मान्य नहीं होता। इसे महर्षि जैमिनी ने अपने पूर्व मीमान्सा दर्शन में कहा है कि ''विरोधे त्वनपेक्ष्यं स्यात् असति ह्यनुमानम्'' अर्थात् तभी तक आर्ष वचन प्रमाण माना जाता है जब तक वह प्रत्यक्ष वेद विरुद्ध नहीं हो। वेद से विरोध आने पर तो वह आर्ष वचन भी अप्रमाण हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे वेद को कर्म, उपासना तथा ज्ञान तीन भागों में विद्वान् लोग विभक्त करके उनके तात्पर्य को समझाते हैं। कर्मकाण्ड में सकाम कर्मों का वर्णन सर्वाधिक देखा जाता है जो धर्म से विमुख बहिर्मुख पामर पुरुषों को सन्मार्ग में लगाने के लिए सर्वथा उचित ही है। सकाम मनुष्य लौकिक अथवा शास्त्रीय कर्म में तभी प्रवृत्त होता है जब उसे कोई वैषयिक सुख की आशा दीखती है क्योंकि अभी तक उसमें वैराग्य या मुमुक्षा तो उत्पन्न हुई नहीं। उसमें तो बुमुक्षा ही है जिसकी पूर्ति विषयों से ही हो सकती है, अन्य उपाय से नहीं। ऐसे पुरुष जब दुष्टकर्म का सवर्था परित्याग कर सन्मार्ग में लग जाते हैं तब कर्मफल में अनित्यता बतला कर उन्हें नित्य मोक्ष के साधन विवेक, वैराग्य शमदमादि षठ सम्पत्ति की ओर लगाते हैं।

वेद के उपासना काण्ड का भी तात्पर्य सकामता के साथ चित्त स्थैर्य में है। कुछ उपासनाओं से कर्म समृद्ध होते हैं। जिन्हें कर्माङ्ग. उपासना कहते हैं। ऐसी उपासना अश्वमेध, उद्गीथादि हैं। जिन उपासनाओं का फल लौकिक और पारलौकिक उभ्युदय है उन्हें उभ्युदयफल उपासना कहते हैं। पर यह भी उपासना का मुख्य फल नहीं है। मुख्य फल तो चित्त की एकाग्रता है। इन दोनों से भिन्न कैवल्य सन्निकृष्ट उपासना कही जाती है। जो परम्परया मोक्ष का साधन है। अहंग्रह उपासना को कैवल्य सन्निकृष्ट उपासना कहते हैं, जिसके फलस्वरूप ब्रह्म लोकको प्राप्ति होती है। वह साधक ब्रह्मलोक में वर्तमान ब्रह्मा के समान ही दिव्य भोगों को भोगता है और ब्रह्मा के दिनावसान होने पर विदेह कैवल्य, प्राप्त करता है। उपर्युक्त सभी साधनों की अपेक्षा वेदान्त के महावाक्य का बोध मोक्ष का साक्षात् साधन है। कर्म एवं उपासना से शुद्ध तथा शान्त अन्तःकरण वाले विवेकादि साधन सम्पन्न मुमुक्षु को, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य के मुख्य से महावाक्य का श्रवण करते ही ब्रह्म और आत्मा की एकता का अपरोक्ष बोध हो जाता है। जो साक्षात् मोक्ष का साधन हे। इसी को भगवान् श्रीकृष्ण ने "**ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि-गच्छति**" इस वाक्य द्वारा ब्रह्मात्म बोध होते ही परा शान्ति रूप मोक्ष की प्राप्ति कही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असंभावना और विपरीत भावना के रहने पर श्रवण, मनन, एवं निदिध्यासन की आवश्यकता होती है। उपक्रमादि षड्विध् तात्पर्यनिर्णायक लिंगों से वेदान्त के तात्पर्य अवधारण को श्रवण कहते हैं। इससे प्रमाणगत असंभावना की निवृत्ति हो जाती है और ब्रह्म तथा आत्मा की एकता रूप प्रमेय के विषय में जब संशय होता है तब उसकी निवृत्ति के लिए अभेद साधक एवं भेद बाधक अनुकूल तर्कों द्वारा मनन करने पर उक्त प्रमेयगत असंभावना की निवृत्ति हो जाती है। दोनों असम्भावनाओं के निवृत्त हो जाने पर भी अनादि अज्ञान के कारण देहाकार वृत्ति बनती रहती है। इसी को विपरीत भावना कहते हैं। इस की निवृत्ति के लिये निरन्तर देहाकार वृत्ति को हटाकर आत्माकार वृत्ति का प्रवाह रूप निदिध्यासन करना भी आवश्यक हो जाता है। इस निदिध्यासन से विपर्यय की निवृत्ति हो जाने पर ब्रह्म और आत्मा की एकता का अपरोक्ष ज्ञान होता है। इससे उस ज्ञानी को जीवन मुक्ति प्राप्त होती है और यह स्थिति उसकी प्रारब्धक्षय होने तक बनी रहती है। प्रारब्ध भोग समाप्त होते ही वह तत्त्वज्ञानी विदेह कैवल्य को प्राप्त कर जाता है। फिर उस मुक्तात्मा को जन्म मरणादि बन्धन नहीं होते। इसी मोक्ष के लिये पूर्वोक्त सभी साधनों का अनुष्ठान करना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि वेदान्त का चर्म तात्पर्य विदेह कैवल्य प्राप्ति कराने में है। जीवन मुक्ति दशा में वह ज्ञानी कृतकृत्यता का अनुभव करता है। इस ज्ञानी से लोकोपकारक कार्य भी होते रहते हैं। किन्तु विदेह कैवल्य दशा में ब्रह्मभाव से अवशेष रहता है। उस दशा में न उसे कृतकृत्यता का अनुभव होता है औ न उस से लोकोपकारक कार्य ही होते हैं। उस समय वह निर्विशेष भाव से स्थित रहता है। बस यही वेदान्त का तात्पर्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

राजपीठाचार्य

भारत में बहुत सी धार्मिक संस्थाएँ हैं जिनको चलाने वाले कुशल संचालक भी होंगे ही। यह बात सर्वविदित है कि कोई भी संस्था हो किसी संचालक के बिना चल नहीं सकती। यहाँ तक कि संसार को चलाने के लिये भी परमात्मा रूप संचालक चाहिये। नीति शास्त्र में कहा भी है **"अनायका: विनश्यन्ति, नश्यन्ति बहुनायका:"** जिस संस्था का कोई नायक न हो वह पूर्णतया समाप्त हो जाती है और जिसके बहुत सारे नायक (संचालक) हों वह भी अधिक देर नहीं चल सकती। नायक कैसा होना चाहिये इस पर भगवान् श्री राम ने रामचरितमानस में सुन्दर उपदेश किया है।

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान-पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक॥

मुखिआ शरीरनायक मुख के समान विवेकवान होना चाहिये। मुख जो भी खाता पीता है उससे शरीर के सभी अंगों को पुष्टि मिलती है और मुख एक ही होता है अनेक नहीं। नि:स्वार्थता मुखिआ का विशेष गुण है जिस के अभाव में संस्थान भीतर ही भीतर ऐसे खोखली हो जाती है जैसे घुन लगने से लकड़ी।

हमें इस बात को कहने में जरा भी संकोच नहीं प्रत्युत गौरव का अनुभव होता है कि महाराज श्री में उक्त सभी योग्यता कूट-कूट कर भरी हुई है जो इस युग में अत्यन्त दुर्लभ है। आज व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा एवं स्वार्थ इस कदर बढ़ गया है कि वह राष्ट्रीय, प्रादेशिक, सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी व्याप्त दिखाई पड़ता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व की राष्ट्रीय भावना, बलिदान की लगन और कर्तव्य परायणता अब ढूंढने पर भी नहीं मिलती। यह सब कितनी शीघ्रता से परिवर्तन हुआ इसी से स्वार्थता रूपी रोग की भीषणता का अन्दाज हो जाता है।

अपने महाराज श्री में इसके बिल्कुल विपरीत देखा गया है। उन्होंने जिस समय जिस दायित्व को संभाला उसमें अपने वैयक्तिक महत्त्व को तिलाञ्जलि दे उस संस्था के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित हो कर कार्य करते हुये दिखाई पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धार्मिक स्थानों की सेवा में जहाँ निः स्वार्थता परमावश्यक है वहाँ यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि इन प्रतिष्ठानों की सेवा पाँच प्रकार से की जा सकती है। (१) सुयोग्य विद्वान् निष्ठावान् सन्तों को तैयार कर संस्था के लिये समर्पित करना (२) साहित्य की रचना द्वारा संस्था को समृद्ध करना (३) साहित्य प्रकाशन द्वारा संस्था को यश युक्त करना (५) व्यापक प्रचार द्वारा संस्था के यश को जन-जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास करना। महाराज श्री ने अत्यन्त उत्साह एवं तत्परता से कैलास आश्रम की सेवा उक्त पाँचों प्रकार से की है।

महाराज श्री का नेतृत्व पाकर संस्था चलती नहीं अपितु भागती है ऐसा सभी का अनुभव है। उन की इसी कुशलता को देखते हुये कई संस्थाओं का विलय कैलास आश्रम में वहाँ के महापुरुषों ने किया। कई नई संस्थाओं का जन्म भी हुआ। महाराज श्री की और एक विशेषता यह भी है कि सब प्रकार से स्वयं रात दिन एक करके कार्य करते हुये वे कार्यों की सफलता का श्रेय भगवान् की कृपा, पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद और भक्तों के पुण्य को देते हैं।

आप निःसंदेह एक आदर्श पीठपति हैं जो दूसरों के लिये अनुकरणीय हैं। आप को **'राजपीठाचार्य'** (पीठाचार्यानाम राजा) कहना अत्यन्त यथार्थ एवं उचित प्रतीत होता है।

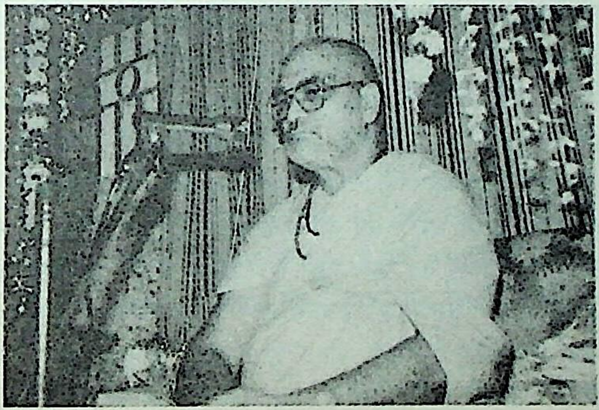

राजपीठाचार्य - महाराज श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री द्वारा पत्राचार

किसी के भी पत्र को अविलम्ब आदर पूर्वक पढ़ना और यथा शीघ्र उसका समुचित उत्तर देना महाराज श्री का सहज स्वभाव है। विवाह के औपचारिक निमन्त्रण पत्र का भी आप शीघ्र अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनायें भेज उसका उत्तर देते हैं। दीपावली इत्यादि पर्वों पर भी भक्तों को यथा संभव आशीर्वाद भेजते रहते हैं। किसी भक्त ने यदि काफी समय अपना कुशल समाचार नहीं भेजा तो व्यस्त होते हुये भी उस को अपनी ओर से पत्र लिख कर उसका कुशल क्षेम पूछते हैं।

मैंने सबसे प्रथम उनको करनाल से एक पत्र लिखा जिसमें अपनी नई नौकरी में पेश आने वाली कुछ कठिनाईओं को लिखा। उन का दिल्ली से तुरन्त उत्तर आया जो जीवन में अपनाने के लिये मैं यहाँ देना चाहता हूँ।

ॐ देहली

२३-९-६१

प्रिय चिरंजीवी बाबू स्वर्ण लाल जी!

सप्रेम नारायण स्मरण।

उभयत्र शमस्तु। आप का पत्र प्राप्त हुआ। समाचार अवगत हुये। संसार में सुख दुःखादि भोग प्रारब्धानुसार प्राणिमात्र के लिये अनविार्य हैं। विवेकशील व्यक्ति भगवान् के प्रत्येक विधान में उनकी असीमानुकम्पा का अनुभव करता हुआ हर हाल में खुशहाल रहता है। अनुकूल परिस्थितियों में भगवत्कृपा का अनुभव तो सर्व- साधारण व्यक्ति भी करता है। प्रतिकूल दशा में भी भगवत्कृपा का अनुभव विवेकियों को हुआ करता है। अतः आप प्रसन्नता पूवर्क ईश्वरीय आज्ञा समझकर काम करते चलें। सब कल्याण ही होगा। हर समय भजन होते रहना साधारण साधन का फ़ल नहीं है, अपितु उत्कट साधन का फल है। परमात्मा के आश्रित रहकर प्रयत्न करने वाले साधक को उसका फल भगवत्कृपा से अवश्य मिल जाता है। **'तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकं। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते'** ऐसा गीता के १०वें अध्याय में कहा है। इसके अतिरिक्त सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमेश्वर अवश्य सुनता है। आप भगवन्नाम का स्मरण करते हुये प्राप्त कर्तव्य का निर्वहन करें आप को अवश्य शान्ति मिलेगी। ऐसा मेरा आशीर्वाद है। प्रिंसिपल आदि सबके सब अनुकूल हो जायेंगे। क्योंकि आपमें कर्तव्य परायणता एवं नम्रता है। उसका प्रभाव करूर व्यक्ति को साधु बना छोड़ेगा। आप घबरायें नहीं। यदि आपने राम नाम का आश्रय ले लिया तो सभी साधन बिना बुलाए आप के पास आ जायेगें। जहाँ अनन्य भाव से नाम स्मरण होता है वहाँ नामी भी रहता ही है। नामी के आ जाने पर तदाश्रित सभी गुण भी अवश्य आते हैं। अपने कुशल समाचार समय समय पर देते रहेंगे। इत्यों शम्।

भवदित्य

श्री विद्यानन्द जिज्ञासु

१९७४ में मैं तीन मास के लिये स्वीडन, डेनमार्क, फिन्लेण्ड की विदेश यात्रा पर गया। एक पत्र जो विदेश यात्रा पर गये हुये मुझे महाराज जी ने २७-५-७४ को उत्तरकाशी से लिखा, उसमें साधन रूपी बड़े सुन्दर मार्ग का निर्देश किया। महाराज जी कुशल क्षेम के पश्चात् लिखते हैं, **''ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥ तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥''** इन वाक्यों के अनुसार सदा हृदय देश में बैठे हुये सर्वान्तर्यामी परमात्मा की सर्वतोभावेन शरणापन्न हो उसका स्मरण बनाये रखें। इस प्रकार का चिन्तन परमार्थ तथा व्यवहार उभयं दृष्टि से लाभ दायक सिद्ध होगा। अपने कर्तव्य कर्म का सम्यक् प्रकार से अनुष्ठान करते हुये परमेश्वर का चिन्तन सम्भव है। अन्यथा **'तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च'** ऐसा उपदेश भगवान् कृष्ण नहीं करते। अतः आप भी अर्जुन के समान अपने कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए परमेश्वर का सदा स्मरण करते रहो। ऐसा हमारा आदेश उपदेश एवं आशीर्वाद भी है। आश्रमस्थ सभी सन्तों की ओर से शुभाशीर्वाद और भक्तों की ओर से राम राम है। शेष सब आनन्द है।

भवदीयः

स्वामी विद्यानन्द गिरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री-भारत के कुछ सुप्रसिद्ध सन्त महापुरुषों की दृष्टि में

* दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठ शृंगेरी के श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी भारती तीर्थ जी महाराज का उनके निजि सचिव द्वारा प्राप्त शुभ संदेश **"ऋषिकेश में चन्द्रभागा नदी पर बने पुल पर ३० फुट ऊँचे स्थान पर भगवान् भाष्यकार के श्रीविग्रह की स्थापना कर पूज्य कैलासपीठाधीश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज ने अतीव स्तुत्य कार्य किया है जिस की प.पू. श्री जगद्गुरु महाराज जी ने भूरि भूरि प्रशंसा की है। उन्होंने श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की है।"**

* **महामहामण्डलेशो वीतरागो महायतिः।**
विद्यानन्दगिरिर्विद्वत्प्रवरो धीविवर्धनम्॥

—संतहृदय सम्राट दिव्यविभूतिअनन्त श्री स्वामी
हरिहरानन्द सरस्वती—श्रीकरपात्री जी महाराज

* **'बड़ा सुन्दर मण्डलेश्वर मिल गया'**

—विद्यावाचस्पति षष्ठ कैलासपीठाधीश्वर
अनन्तश्री स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज

* **"इन की बुद्धि, विवेक, आचरण, व्यवहार देखकर मैं आश्चर्य में पड़ जाता था। मैंने इनको कभी कुछ नहीं बताया, कभी कुछ भी नहीं कहा फिर भी यह सब जान गये। इन का आचरण देख मैं शिक्षा लेता था"**

—महाराज श्री के गुरुदेव परमहंस अनन्त
श्री स्वामीविज्ञानानन्द गिरि जी महाराज

* **"अब उस महादेव की कृपा से या संस्था के भाग्य से समझो, स्वामी विद्यानन्द जी हम को (मण्डलेश्वर रूप में) मिल गये**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं, जिनमें वे सब गुण प्राप्त हैं। समाज की दृष्टि से भी जो प्रशंसित हैं और दूसरे विद्वानों की दृष्टि से भी''

—अष्टम कैलासपीठाधीश्वर अनन्त श्री
स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज (शास्त्री जी)

'सेतुबन्ध रामेश्वर से लेकर हिमालय पर्यन्त वेद-वेंदान्त विद्या प्रचार के द्वारा जिन्होंने अपने यश को फैलाया उन यतिवर श्रीमान् विद्यानन्द गिरि महामण्डलेश्वर का उत्कर्ष हो'

—महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी काशिकानन्द गिरि जी
महाराज आनन्दवन आश्रम मुम्बई

''श्रीस्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज ने अपने में एक वीतराग संन्यासी, एक महामनीषी पूतात्मा संत, प्रतिभाशाली संगठनकर्त्ता तथा प्रेरणादायी नेता के प्रशंसनीय गुणों को समन्वित कर रखा है। इस भाँति वे अपने बहुमुखी व्यक्तित्व से न केवल कैलास आश्रम अपितु उत्तराखण्ड के समस्त संन्यासी समुदाय की परसम्पत्ति हैं।''

—अनन्त श्री विभूषित स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज
अध्यक्ष डिवाइन लाइफ सोसाइटी ऋषिकेश

''कुछ ऐसी विभूतियाँ भगवान् की प्रेरणा से ही आविर्भाव होती हैं जिनके द्वारा अनेकों का कल्याण हो जाता है। हमारे कैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज भी उनमें से अन्यतम विभूति हैं।''

—महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी ब्रह्मानन्द गिरि जी महाराज
संन्यास आश्रम बम्बई

''कैलास आश्रम की गद्दी पर आरूढ़ होते ही स्वाभाविक मैंने हँसते-हँसते महामण्डलेश्वर जी से कहा कि आप कैलास के दशमें पीठाधीश्वर के रूप में अभिषिक्त हो रहे हैं। अतः जैसे सिख गुरु परम्परा में दशम गुरु गोबिन्दसिंह जी का विशिष्ट स्थान है, इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार से कैलास की परम्परा में आप का विशिष्ट स्थान होना चाहिए। आप सहज भाव से उत्तर दिया था कि महान् पुरुषों के आशीर्वाद से वैसा ही होगा''

—महामण्डलेश्वर त्यागमूर्ति अनन्तश्री स्वामी गणेशानन्द पुरी जी महाराज साधना सदन कनखल

''आज के युगधर्म को देखते हुए कैलास आश्रम की गरिमा एवं स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज जैसे कर्मवीर, तेजस्वी महापुरुष का संयोग भारतीय संस्कृति के लिए भाग्योदय ही कहा जा सकता है''

—अनन्तश्री विभूषित स्वामी शाश्वतानन्द जी महाराज न्यायाचार्य वाराणसी

''उपस्थित व्रती साधको! तुम कितने भाग्यशाली हो। ये देखो तुम्हारे सामने जो बाबा (पूज्य महाराज श्री) बैठे हैं, इनकी प्राप्ति तुम्हारे संयम का सबसे बड़ा फल है''

—श्रीश्री आनन्दमयी माँ, संयम महाव्रत नवम्बर १९८०

''(महाराज श्री) एक महान् महामण्डलेश्वर जी, परम पूजनीय हैं वे। उनको हमारे पर इतना भाव है, प्रेम है, वो हमारे विष्णुदादा जी की कृपा के कारण और इससे भी आगे कहूँ तो 'रामचरितमानस' पर स्वामी जी का बड़ा प्रेम है। वास्तव में जो बड़े होते हैं, वे छोटों पर स्नेह करते हैं। वो तो प्रेम करते हैं। ''बड़े स्नेह लघुन्ह पर करहीं''

—विश्वसंत श्री मोरीरी बापू जी

''श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पदवाक्यप्रमाण-पारावारीण यतीन्द्रकुलतिलक श्रीकैलासपीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज वेदान्त सर्वदर्शनाचार्य उन महापुरुषों में अग्रगण्य हैं, जो बदलती हुई युगधारा में भी शास्त्रप्रतिपादित मार्ग की अविचल महिमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिष्ठापित करने में एक अलौकिक युगपुरुष का कार्य कर रहे हैं। उनकी लोकोत्तर विचार शक्ति, उसे प्रस्तुत एवं क्रियान्वयन कराने का अदम्य साहस किसको आश्चर्यचकित नहीं करता! आपका बहुमुखी व्यक्तित्व एवं जीवनदर्शन हर एक के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है; आपके हर शब्द में शक्ति है क्योंकि इसके पीछे उनकी वर्षों लम्बी साधना का सम्पुट लगा हुआ है। महाराजश्री का जीवन कहीं किसी ओर से भी झाँको, माधुर्य ही माधुर्य है। कोई बनावट नहीं; सब कुछ स्वाभाविक और सरस, सभी की लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति के लिये समानरूप से जागरूक। सदा सभी अवस्थाओं में उनका द्वार खुला रहता है, कोई रोकटोक नहीं, अमीर और गरीबी का बन्धन नहीं, स्वागत अधिकारियों की लक्ष्मणरेखा नहीं।''

—डॉ. श्री उमेशानन्द शास्त्री' जी महाराज
महामन्त्री कैलास आश्रम ट्रस्ट कमेटी

श्रीनिरञ्जनपीठाधीश्वर आ.म.मं. स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज को कैलास आश्रम के नूतन प्रकाशन भेंट करते हुये महाराज श्री (२०.४.१९९६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज श्री द्वारा अपने पावन जीवन में सम्पादित ७५ विशिष्ट कार्यों की सूची

कई भक्तों की विशेष कर श्री गोवर्धन लाल चानना की अभिलाषा थी कि महाराज श्री द्वारा सम्पादित मुख्य मुख्य कार्यों का कहीं समुचित उल्लेख हो। उस दृष्टि से मन में यह विचार आया कि क्यों न अमृताञ्जलि में ही उनका यथा शक्ति उल्लेख कर दिया जावे। अतः ऐसे ७५ विशिष्ट कार्यों का यथास्थान उल्लेख कर अपनी लेखनी को सफल हुआ समझूँगा।

अध्ययन

१. बाल्य काल से ही श्री राम-चरित मानस का पाठ एवं अध्ययन और सम्पूर्ण राम चरित मानस को कण्ठस्थ कर लेना

२. नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ले बड़ी उत्सुकता से गीता, उपनिषद् ब्रह्मसूत्र शास्त्रों का अध्ययन

३. संस्कृत के एक असाधारण विद्वान् से पाणिनीय अष्टाध्यायी का पातञ्जल भाष्य सहित अध्ययन। सम्पूर्ण अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ कर उसकी आवृत्ति चलते फिरते नित्य करना

४. वाराणसी में दक्षिणा मूर्ति मठ में रहते हुये, परीक्षाक्रम से मध्यमा, शास्त्री, वेदान्ताचार्य, सर्वदर्शनाचार्य परीक्षायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करना

अध्यापन

५. आप ने विद्यार्थी जीवन में ही अध्यापन कराना प्रारम्भ कर दिया। और उसके सम्पन्न होने पर श्री दक्षिणा मूर्ति संस्कृत विद्यालय में प्राध्यापक बन कर दो वर्षों तक निःशुल्क विद्यादान करते रहे

६. १९५९ से १९६९ तक दिल्ली विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानचार्य बन कर आदर्श अध्यापक के साथ एक कुशल प्रशासक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रूप में उभरे। विद्यालय आप की छत्र छाया में संस्कृत विद्यालयों में अग्रगण्य बन गया

मातृ श्राद्ध

७. माताजी को दिये गये वचनानुसार उनके और्ध्वदेहिक क्रिया करने जन्म भूमि जाकर उनका क्रिया कर्म और गया श्राद्ध आदि कर मातृ भक्ति में भगवान् अदि शंकराचार्य का अनुसरण करना-१९६४

गोरक्षा आन्दोलन

८. सन् १९६६ ई. में अखिल भारतीय गोवध बन्दी आन्दोलन में आप ने सक्रिय भाग लिया और १८ दिनों तक तिहाड़जेल दिल्ली में सरकार की ओर से दी गई सजा भुक्ती। इसी आन्दोलन में भारत सरकार ने जब साधुओं को गोली का निशाना बनाया तो आप किसी तरह से गोलियों की बौछार के बीच से सुरक्षित निकल आये

संन्यास दीक्षा

९. १६.१.१९६८ को शुभ मुहूर्त में निरञ्जनपीठाधीश्वर श्रीमत्स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज से संन्यास दीक्षा लेना

लेखन एवं प्रकाशन

१०. प्रधानाचार्यत्व काल में ही वेदान्त-परिभाषा सुबोधिनी व्याख्यालिख कर प्रकाशित करवाना। तत्पश्चात् शंकरवचनामृत, मानस सूक्ति सुधा, ईशावास्य-शांकर भाष्यार्थ प्रदीपिका, ब्रह्मसूत्रविद्यानन्द वृत्ति आदि अनेक पुस्तकों का प्रकाशन आप ने कराया

कैलास आश्रम पीठाधीश्वर के रूप में

११. आशाढ़ शु. सप्तमी वि.सं. २०२६ (२१.७.१९६९ ई.) को कैलास आश्रम ब्रह्मविद्यापीठाधीश्वर पद पर विशिष्ट सन्तों एवं भक्तों की उपस्थिति में आसीन होना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२. कैलासाश्रम जीर्णोद्धार का संकल्प कर सर्वप्रथम कैलास आश्रम उत्तरकाशी का सुन्दर पुनर्निर्माण कराना

१३. देवविद्या मन्दिर, चैतन्य भवन, विष्णु भवन, गोविन्दभवन, प्रकाश भवन का कैलास आश्रम शताब्दी प्रसंग पर जीर्णेद्धार

१४. शताब्दी प्रसंग पर कीर्ति स्तम्भ, सवामी प्रेम पुरी गो सदन एवं हरभगवान् सत्संग भवन का निर्माण

१५. शताब्दी प्रसंग पर रेल यात्रा द्वारा ६०० सन्तों भक्तों सहित भारत के १२५ तीर्थों की ४८ दिनों में सुखद यात्रा

१६. आचार्यद्वय की जन्म शताब्दी महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष पर्यन्त १९८५-८६ में मनाना

१७. ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम में साधु छात्रों के रहने योग्य विष्णुधाम का निर्माण-आचार्यद्वय जन्म शताब्दी प्रसंग

१८. उसी प्रसंग पर चिकित्सालय एवं भक्तों के लिये चैतन्यधाम का निर्माण

१९. कैलास आश्रम ऋषिकेश में चानना भोजनालय का निर्माण

२०. ब्रह्मानन्द आश्रम ऋषिकेश का जीर्णोद्धार एवं वहां कैलास विद्या प्रेस की संस्थापना

२१. रोहतक में कैलास आश्रम का शिलान्यास जून १९८५ में

२२. अमरनाथ यात्रा जुलाई १९८५ और इसके संस्मरण पुस्तक रूप में छपवाना

२३. उत्तरकाशी कैलास आश्रम में हरिहर पाकशाला, भोजनालय तथा कैलास घाट का निर्माण

२४. ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम तीर्थ कुटीर का विस्तार तथा संस्कार

२५. उत्तर काशी कैलास आश्रम में सायंकाल साधु भिक्षार्थियों के लिये अन्न क्षेत्र की संस्थापना

२६. दशनाम संन्यास आश्रम हरिद्वार का जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण

२७. दशनाम संन्यास आश्रम में शम्भु सदन, पीठाचार्य निवास एवं चानना यज्ञशाला की संस्थापना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२८. श्री आदि शंकराचार्य की द्वादश शताब्दी का महाराज श्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन-१९८७-८८

२९. ऋषिकेशस्थ कैलास आश्रम नवनिर्माण के कार्यों के अन्तर्गत भक्तों के लिये सन्नीडम्, मेधातिथेयम्, नन्द भवन आदि का निर्माण

३०. कैलास आश्रम ऋषिकेश में श्री मोरारी बापू के पूर्वजों का पुण्यस्मरण कराने वाले त्रिभुन जीवनधाम भवन का निर्माण

३१. भक्त निवास कैलास आश्रम ऋषिकेश का विस्तार एवं जिर्णोद्धार

३२. कैलास आश्रम में सीवर व्यवस्था की सरकार द्वारा स्वीकृति एवं सरकारी खर्च से निर्माण

३३. कैलास आश्रम ऋषिकेश में कैलास सेतु का निर्माण (२७.२.९५)

३४. ऋषिकेश आश्रम के मुख्य द्वार की कलात्मक रचना

३५. राम आश्रम समाना का कैलास में विलय और वहाँ पर नवनिर्माण

३६. प्रयागराज में कैलासधाम नई झूसी की संस्थापना

३७. कैलास आश्रम रोहतक की संस्थापना-१९९५

३८. शंकर ब्रह्मविद्याकुटीर मुजफ्फर नगर की संस्थापना

३९. नर्मदा सत्संग आश्रम भिलाड़िया घाट होशंगवाद की संस्थापना

४०. श्री कैलास विद्यातीर्थ नई दिल्ली की संस्थापना एवं उसमें आदि शंकराचार्य स्मारक का निर्माण वै.शु. ५, वि.सं. २०५३ सन् १९९६

४१. कैवल्यविद्याकान्तम् राजौरी गार्डन, दिल्ली की संस्थापना-१९९४

४२. कैलास शान्ति सदन गुड़गाव की संस्थापना-१९९२

४३. कैलास विद्यातीर्थ राजगीर (बिहार) की संस्थापना-१९९२

दिव्य ग्रन्थ रचना एवं प्रकाशन

४४. टीकादि सहिता बृहदारण्यक उपनिषद् एवं कैलास आश्रम शताब्दी स्मारिका का प्रकाशन

४५. द्वादश उपनिषदों का पूर्वाचार्यों की टिप्पणियों, शांकर भाष्य, टीका हिन्दी मिताक्षरा सहित प्रकाशन

४६. श्रीमद्भगवत्गीता अष्टादशाह प्रवचन प्रकाशन

४७. चित्राञ्जलि, व्यास पूजापद्धति, आचार संहिता आदि प्रकाशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४८. गीता शांकर भाष्य, टीका, टिप्पणि एवं ललिता व्याख्या की रचना एवं प्रकाशन

४९. ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य, रत्न प्रभा टीका, टिप्पणि एवं ललिता व्याख्या रचना एवं प्रकाशन

५०. चितसुखी पर छात्र तोषिणी वृत्ति की रचना एवं प्रकाशन

दिव्य-वर्ष-पञ्चकम् के
२५ महोत्सवों के अर्न्तगत कुछ मुख्य महोत्सव

५१. संन्यास रजतजन्ती (१०.१.९३) महाराज श्री द्वारा संन्यास देने वाले आचार्य की पूजा

५२. पट्टाभिषेक रजत महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष पर्यन्त मनाना १९९३-९४

५३. दिनाङ्क १.५.९४ को ऋषिकेशस्थ ब्रह्मानन्द आश्रम की शताब्दी

५४. नवनिर्मित हरिहर-देव सदनम् कैलास आश्रम ऋषिकेश में प्रथम आहुति प्रदान ७.४.९५

५५. ऋषिकेश आश्रम में श्री गोप्रेमकवलायतनम् का उद्घाटन ७.५.९५

५६. षष्ठपीठाधीश्वर म.मं. स्वामी विष्णुदेवानन्दनन्द गिरि जी का निर्वाण रजत महोत्सव (१९९६-९७)

५७. अष्टमपीठाधीश्वर म.मं. स्वामी चैतन्यगिरि जी महाराज का निर्वाण रजत महोत्सव (१९९६-९७)

५८. महाराज श्री का अमृत महोत्सव (१०.१२.९६)

५९. १२१ दिवसीय अतिरुद्र यज्ञ का अनुष्ठान १३.१०.९६ से १४.२.९७

६०. अभिनव चन्द्रेश्वर महादेव की शताब्दी (१४.२.९७)

६१. दि. ७.३.९७ को महाशिवरात्रि के दिन दिव्य-वर्ष-पंचकम् का समापन महोत्सव

६२. कैलास आश्रम में श्री हनुमान जी की स्थापना (कैलास आश्रम शताब्दी प्रसंग)

६३. कैलास आश्रम ऋषिकेंश में म.मं. स्वामी धनराज गिरि जी महाराज, परम पूज्य स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज, परम पूज्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी चैतन्यगिरि जी महाराज, परम पूज्य स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज की प्रतिमाओं की स्थापना

६४. हरिद्वार दशनाम संन्यास आश्रम, श्री कैलास आश्रम ऋषिकेश, कैलास आश्रम उत्तर काशी में श्री मोरारी बापू द्वारा राम कथाओं का आयोजन

६५. दिल्ली में महाराज श्री की अध्यक्षता में चार श्री राम कथाओं का आयोजन

६६. कैलास आश्रम में दो भागवतसप्ताह (१९९३, १९९४)

६७. महाराज श्री द्वारा कैलास विद्यातीर्थ राजगीर में भागवतसप्ताह १०.९.९३ से १६.९.९३

६८. श्री मोरारी बापू की पोत पर श्री राम कथा प्रसंग को ले कर महाराज श्री की विदेश यात्रा-अगस्त १९९३

६९. कैलास विद्यातीर्थ दिल्ली में श्री आदि शंकराचार्य ब्रह्मविद्या पीठ की संस्थापना

७०. भगवत्पाद भक्त मण्डल की संस्थापना

७१. अष्टादशाह प्रवचन शैली के अनुसार प्रस्थान त्रयी के स्वाध्याय कराना—अष्टादशाहप्रवर्तकाचार्य

७२. राम जन्म भूमि में मन्दिर निर्माण प्रयासों में सक्रिय भाग एवं मार्ग दर्शक मण्डल की सदस्यता

७३. श्री भगवत्पादीय दिव्य युगारम्भ अनुभविता

७४. भगवान् आदि शंकराचार्य की प्रतिमा की चन्द्रभागा नदी ऋषिकेश पर बने नये पुल पर संस्थापना (१९९६)

७५. बद्रीनाथ जाने वाले मार्ग का नाम आदि शंकराचार्य मार्ग रखवाना, दिल्ली राजा गार्डन चौक का पंचवटी चौक, श्री राम कथा स्थल राजा गार्डन दिल्ली का पंचवटी वाटिका (सितम्बर १९९६) एवं श्री राम कथा ऋषिकेश कथा स्थल का त्रिभुवन गुरु क्रीड़ा स्थली (नवम्बर १९९६) नाम रखवाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वैताग्नि-निभो वशेन्द्रियदलो द्वैतान्धकारान्तकः,
भस्माभूषित-भाल-भागभरणो भद्राकृतिर्भास्वरः।
विद्यानन्द-यतीन्द्र-केन्द्र-तिलकः कैलास-पीठाधिपः,
सिद्धो बुद्ध-जनाधिशुद्ध-मुकुटो भात्यत्र सिद्धासने॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

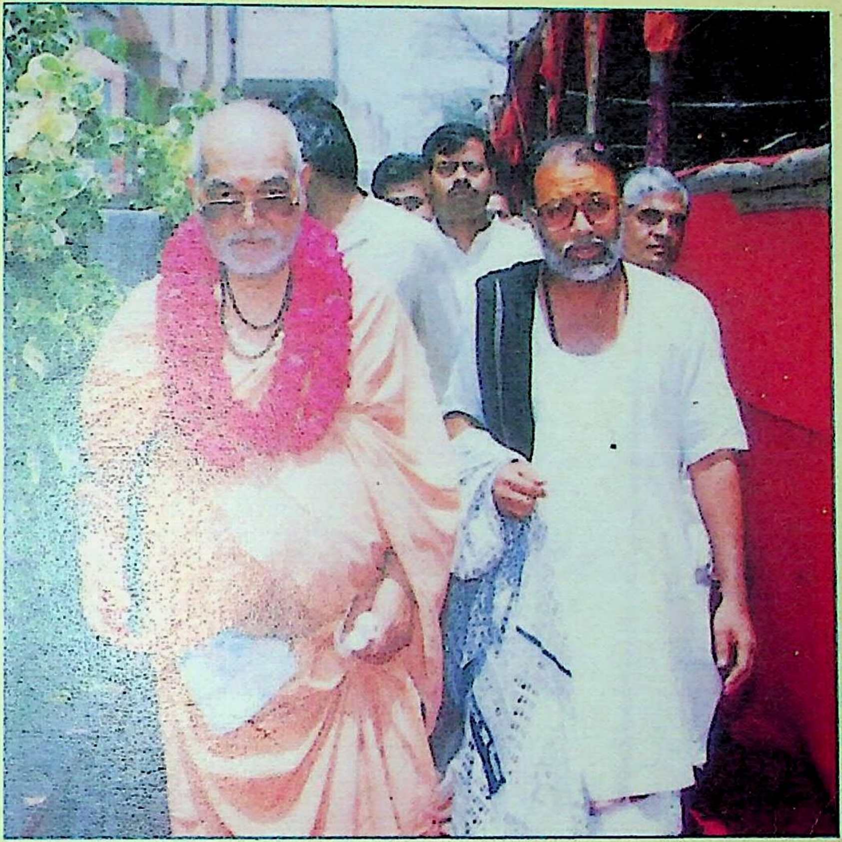

अमृत महोत्सव प्रसंग पर
दिल्लीस्थ श्री कैलासविद्यातीर्थ में
पण्डाल की ओर पधारते हुये
महाराज श्री के साथ श्री मोरारी बापू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दशम कैलासपीठाधीश्वर
श्रीमत्स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

के अमृत महोत्सव प्रसंग पर

श्री कैलासविद्यातीर्थ-आदिशंकराचार्य स्मारक

नई दिल्ली का

विश्वसंत 'श्री मोरारी बापू' द्वारा उद्घाटन

सौजन्य :

भक्त देसराज जी माता वीराँवाली चानना

जयमाला पर्स एम्पोरियम

5/76, डब्लयू. ई. ए., अजमल खाँ रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाष: 5729218, 5728898

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.